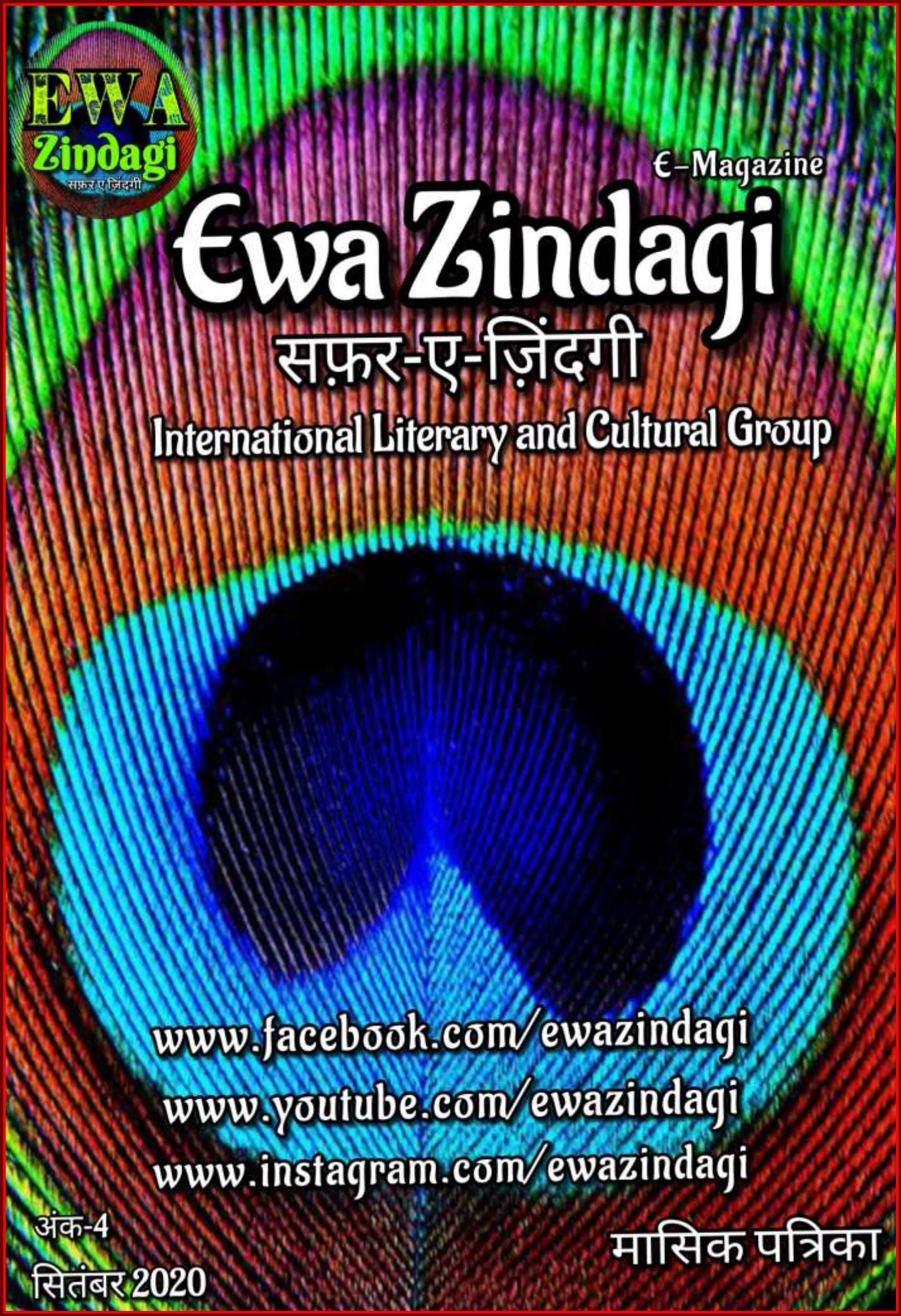
EWA
Zindagi
सफ़र ए ज़िंदगी
€-Magazine
Ewa Zindagi
सफ़र-ए-ज़िंदगी
International Literary and Cultural Group
www.facebook.com/ewazindagi
www.youtube.com/ewazindagi
www.instagram.com/ewazindagi
अंक-4
सितंबर 2020
मासिक पत्रिका

EWA ZINDAGI TEAM

Anjula Singh Bhadauria
Founder President, EWA Zindagi

Mukta Sharma Tripathi
Vice-President, EWA Zindagi

PhoolChandra Vishwakarma
Senior-Editor

Usha Sharma
Moderator

Pratik Prabhakar
Moderator

Pooja Sharma
Moderator

Shruti S.Tripathi
Moderator

Amol Kesarwani
Moderator

Rishikesh Mahanta
Moderator

Akhilesh Verma
Moderator

Amit Premshanker
Moderator

Balram Sisaudia
Moderator

EWA Zindagi पत्रिका में रचना प्रकाशन हेतु नियम व शर्त:

EWA Zindagi पत्रिका में रचना प्रकाशित होने के लिए आपको हमारे मंच द्वारा कराई गई गतिविधियों का हिस्सा बनना होगा । जिनमें प्रमुख है काव्य अंताक्षरी, सचित्र काव्य प्रवाह, काव्य सरिता (प्रथम तीन विजेता) व Ewa Word Play। इसके अलावा आप हमारे तीन प्रमुख ब्लॉग ज्ञानधारा,संजीवनी व सफरनामा हेतु अपनी रचना e-mail पर ewazindagi@gmail.com या admin व moderator को फेसबुक messenger भेज सकते है।

रचना के साथ लेखक का नाम व फोटो आवश्यक है। एक विषय या ब्लॉग में एक व्यक्ति की एक ही रचना प्रकाशित की जाएगी। एक लेखक कृपया एक ही रचना जमा करें।

रचना टाइप की होनी चाहिए, फोटो या हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार नहीं किए जाते हैं। रचना मौलिक हो अथवा मौलिक रचनाकार का नाम अवश्य दिया गया हो। ब्लॉग हेतु रचना का एक उचित शीर्षक दिया गया हो और रचना का विषय अवश्य बताया गया हो, अन्यथा रचना स्वीकृत नहीं होगी।

रचना का सर्वाधिकार मौलिक लेखक के पास सुरक्षित होगा तथा रचना के विषय वस्तु के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। किसी वेबसाइट, पत्रिका, पुस्तक इत्यादि में पूर्व प्रकाशित रचनाएँ पत्रिका के लिए मान्य नहीं होगी।

रचनाएँ निर्धारित तिथि तक नहीं मिलने पर, रचना अगले अंक के लिए पुनः भेजे जा सकते हैं। एक ही विधा की प्रकाशनार्थ रचना की बहुलता होने पर, टीम का निर्णय सर्वमान्य होगा। अधूरी रचना स्वीकृत नहीं होंगी। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है। रचनाएँ पसन्द नहीं आने पर पत्रिका में प्रकाशित नहीं करने का अधिकार पत्रिका का है।

फेसबुक पेज : www.facebook.com/ewazindagi

फेसबुक ग्रुप : www.facebook.com/groups/ewazindagi

Twitter www.twitter.com/ewazindagi

Instagram: www.instagram.com/ewazindagi

Youtube : www.youtube.com/ewazindagi

Website : www.ewazindagi.wordpress.com

Cover Concept

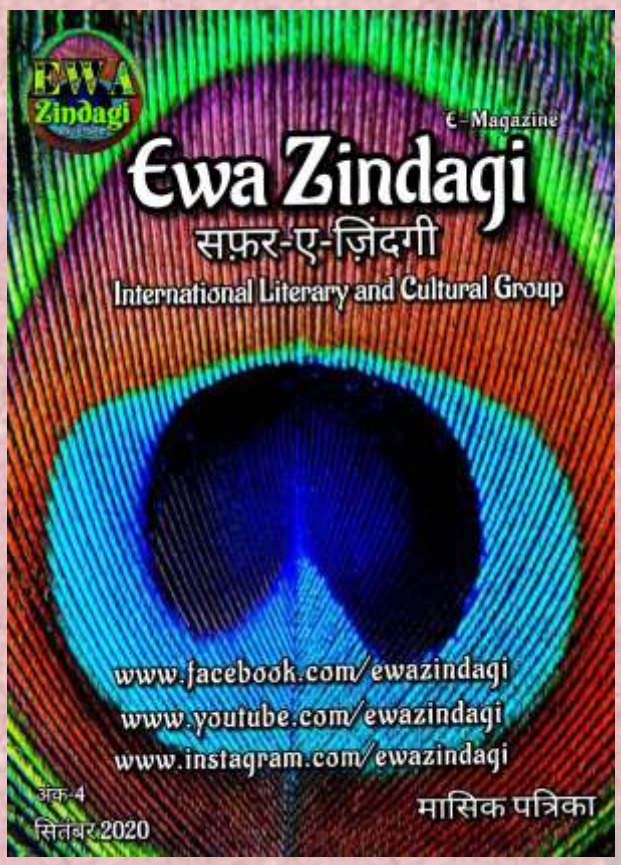

Cover Page Image

A Peacock Feather

The Cover Page symbolises 3 important things here:

1) The birth of Lord Krishna and our platform's identity on the very same day and month (Janmashtami);

2) The tri-colours of our Indian flag that marks unity in diversity;

3) The depiction of our LOGO and the very nature of our platform aiming towards universal brotherhood and spiritual upliftment.

-Anjula Singh Bhadauria

संपादक एवं प्रकाशक- अंजुला सिंह भदौरिया

Ewa Zindagi पत्रिका Ewa Zindagi समूह की एक इकाई है।

पत्रिका में प्रयोग किए गए

पत्रिका का उद्देश्य किसी की भावना को ठेस पहुँचाना नही, जाने-अनजाने में हुई गलती के लिए क्षमा। पूर्वानुमति के बिना पत्रिका के किसी रचना का व्यवसायिक अथवा किसी भी रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता। पत्रिका बहुत सारे लेखकों की रचनाओं का संकलन है। लेखक अपनी रचना के लिए स्वय उतरदायी हैं और उनके अधिकार सुरक्षित हैं तस्वीर (पत्रिका का कोई अधिकार नहीं) गूगल से लिए गए हैं इनका उद्देश्य सिर्फ प्रतीकात्मक है।

सर्वाधिकार सुरक्षित @ 2020 | www.ewazindagi.wordpress.com

अनुक्रमणिका:

साहित्य सागर (Ewa Literary Ocean)

एक जीवनपरिचय : गोस्वामी तुलसीदास

एक जीवनपरिचय : सुभद्रा कुमारी चौहान

एक जीवनपरिचय : महादेवी वर्मा

काव्य अंताक्षरी (Ewa Musical Vibes)

काव्य अंताक्षरी-6

ज्ञानधारा (Ewa Learning Hub)

नैतिक शिक्षा आज के परिवेश में © डॉ मंजु सैनी

महक पंजाब दी (Flavours of Punjab)

कंध/ दीवार

सचित्र काव्य प्रवाह (Ewa Visual Journey)

मेरी बहना

क़लम

संजीवनी (Ewa Health Basket)

Fundas or Tips for healthy Skin ©Pratik Prabhakar

Ways to Relieve Stress and Anxiety

जरूरी है उत्तम स्वास्थ्य ©मंजुषा श्रीवास्तव"मृदुल

काव्य सृजन (Ewa Poetic Corner)

भारत

फूल

सफरनामा (Ewa Travel Diaries)

मानसर झील © पूजा शर्मा

विंध्याचल मिर्ज़ापुर के निकट माँ विंध्यवासिनी का पर्वतीय

भारत में भारत माता के मंदिर

चेरापूंजी: एक प्राकृतिक धरोहर

अम्बोली घाट - झरनों का साम्राज्य

कला पटल (Ewa Artist Hub)

Pimmi Nag

Vedika Rautela

दिवस रचनाकार

Special Poetries

Thanks to our "TOP CONTRIBUTORS OF THE MONTH" (August)

DrNisheeth Chandra

दिव्य श्वेत

Bhuwan Joshi

DrMohinder Sharma Madhukar

Aman Kumar Shaw

Ragini Agrawal

Anita Sharma

Vishvanath Tomar

Bhaskar Anand

Seema Verma

Ewa Zindagi

साहित्य सागर
(Ewa Literary Ocean)

Shruti S.Tripathi

Moderator In-Charge

नमस्कार/ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ/आदाब/Hello दोस्तों,

एक उत्तम लेखक का सबसे बड़ा गुण है सबसे पहले उसका एक उत्तम पाठक बनना।

साहित्य पठन के प्रति लेखकों का उत्साह बढ़ाने की दिशा में यह हमारा छोटा सा प्रयास है। पाठकों को पढ़ने में जितना ज़्यादा मज़ा आएगा, वे उतना ही ज्यादा पढ़ना चाहेंगे। उन्हें पढ़ने के जितने ज्यादा अवसर मिलेंगे, वे लेखन में उतने ही बेहतर होते जाएंगे। यह एक अच्छा चक्र है।

एक ऐसा लेखक जो पढ़ता है और एक ऐसा पाठक जो लेखन कार्य करता है हर रूप में, एक आदर्श हैं। वह अपने आपको पढ़ने से मिलने वाले आनंद से अपने लेखन को प्रेरित कर सकते हैं।

इस स्तंभ में आपका परिचय उन प्रसिद्ध साहित्यकारों से होगा जो आपको पढने के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करेंगे ताकि आप पढ़ने की 'इच्छा' और पढ़नें के 'कौशल' का विकास हो।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए हम सभी आपके सामने लाए है प्रसिध्द साहित्यकारों की जीवनी और उनकी की महत्वपूर्ण रचनाएँ...

एक जीवनपरिचय: गोस्वामी तुलसीदास

तुलसीदासजी का जन्म संवत 1589 को उत्तर प्रदेश (वर्तमान बाँदा ज़िला) के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। हालांकि विद्वानों में इनके जन्मस्थान को लेकर मतभेद है, कुछ विद्वान इनका जन्मस्थान कासगंज, एटा में बताते हैं । इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ था। अपनी पत्नी रत्नावली से अत्याधिक प्रेम के कारण तुलसी को रत्नावली की फटकार "लाज न आई आपको दौरे आएहु नाथ" सुननी पड़ी, जिससे इनका जीवन ही परिवर्तित हो गया। पत्नी के उपदेश से तुलसी के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। इनके गुरु बाबा नरहरिदास थे, जिन्होंने इन्हें दीक्षा दी। इनका अधिकाँश जीवन चित्रकूट, काशी तथा अयोध्या में बीता ।

तुलसी का बचपन बड़े कष्टों में बीता। माता-पिता दोनों चल बसे और इन्हें भीख मांगकर अपना पेट पालना पड़ा था। इसी बीच इनका परिचय राम-भक्त साधुओं से हुआ और इन्हें ज्ञानार्जन का अनुपम अवसर मिल गया। पत्नी के व्यंग्यबाणों से विरक्त होने की लोकप्रचलित कथा को कोई प्रमाण नहीं मिलता। तुलसी भ्रमण करते रहे और इस प्रकार समाज की तत्कालीन स्थिति से इनका सीधा संपर्क हुआ। इसी दीर्घकालीन अनुभव और अध्ययन का परिणाम तुलसी की अमूल्य कृतियां हैं, जो उस समय के भारतीय समाज के लिए तो उन्नायक सिद्ध हुई ही, आज भी जीवन को मर्यादित करने के लिए उतनी ही उपयोगी हैं। तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 39 बताई जाती है। इनमें रामचरित मानस, कवितावली, विनयपत्रिका, दोहावली, गीतावली, जानकीमंगल, हनुमान चालीसा, बरवै रामायण आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

गोस्वामीजी श्रीसम्प्रदाय के आचार्य रामानन्द की शिष्यपरम्परा में थे। इन्होंने समय को देखते हुए लोकभाषा में 'रामायण' लिखा। इसमें वर्णाश्रमधर्म, अवतारवाद, साकार उपासना, सगुणवाद, गो-ब्राह्मण रक्षा, देवादि विविध योनियों का यथोचित सम्मान एवं प्राचीन संस्कृति और वेदमार्ग का मण्डन और साथ ही उस समय के विधर्मी अत्याचारों और सामाजिक दोषों की एवं पन्थवाद की आलोचना की गयी है। गोस्वामीजी पन्थ व सम्प्रदाय चलाने के विरोधी थे। उन्होंने भ्रातृप्रेम, स्वराज्य के सिद्धान्त , रामराज्य का आदर्श, अत्याचारों से बचने और शत्रु पर विजयी होने के उपाय; सभी राजनीतिक बातें खुले शब्दों में उस कड़ी जासूसी के जमाने में भी बतलायीं, परन्तु उन्हें राज्याश्रय प्राप्त न था। लोगों ने उनको समझा नहीं। रामचरितमानस का राजनीतिक उद्देश्य सिद्ध नहीं हो पाया। इसीलिए उन्होंने झुँझलाकर कहा:

"रामायण अनुहरत सिख, जग भई भारत रीति।
तुलसी काठहि को सुनै, कलि कुचालि पर प्रीति।"

उनकी यह अद्भुत पोथी इतनी लोकप्रिय है कि मूर्ख से लेकर महापण्डित तक के हाथों में आदर से स्थान पाती है। उस समय की सारी शंक्काओं का रामचरितमानस में उत्तर है। अकेले इस ग्रन्थ को लेकर यदि गोस्वामी तुलसीदास चाहते तो अपना अत्यन्त विशाल और शक्तिशाली सम्प्रदाय चला सकते थे। यह एक सौभाग्य की बात है कि आज यही एक ग्रन्थ है, जो साम्प्रदायिकता की सीमाओं को लाँघकर सारे देश में

व्यापक और सभी मत-मतान्तरों को पूर्णतया मान्य है। सबको एक सूत्र में ग्रंथित करने का जो काम पहले शंकराचार्य स्वामी ने किया, वही अपने युग में और उसके पीछे आज भी गोस्वामी तुलसीदास ने किया। रामचरितमानस की कथा का आरम्भ ही उन शंकाओं से होता है जो कबीरदास की साखी पर पुराने विचार वालों के मन में उठती हैं। तुलसीदासजी स्वामी रामानन्द की शिष्यपरम्परा में थे, जो रामानुजाचार्य के विशिष्टद्वैत सम्प्रदाय के अन्तर्भुक्त है। परन्तु गोस्वामीजी की प्रवृत्ति साम्प्रदायिक न थी। उनके ग्रन्थों में अद्वैत और विशिष्टाद्वैत का सुन्दर समन्वय पाया जाता है। इसी प्रकार वैष्णव, शैव, शाक्त आदि साम्प्रदायिक भावनाओं और पूजापद्धतियों का समन्वय भी उनकी रचनाओं में पाया जाता है। वे आदर्श समुच्चयवादी सन्त कवि थे।

भगवान शंकरजी की प्रेरणा से रामशैल पर रहने वाले श्री अनन्तानन्द जी के प्रिय शिष्य श्रीनरहर्यानन्द जी (नरहरि बाबा) ने इस बालक को ढूँढ़ निकाला और उसका नाम रामबोला रखा। उसे वे अयोध्या ले गये और वहाँ संवत् 1561 माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार को उसका यज्ञोपवीत-संस्कार कराया। बिना सिखाये ही बालक रामबोला ने गायत्री-मन्त्र का उच्चारण किया, जिसे देखकर सब लोग चकित हो गये। इसके बाद नरहरि स्वामी ने वैष्णवों के पाँच संस्कार करके रामबोला को राममन्त्र की दीक्षा दी और अयोध्या ही में रहकर उन्हें विद्याध्ययन कराने लगे। बालक रामबोला की बुद्धि बड़ी प्रखर थी। एक बार गुरुमुख से जो सुन लेते थे, उन्हें वह कंठस्थ हो जाता था। वहाँ से कुछ दिन बाद गुरु-शिष्य दोनों शूकरक्षेत्र (सोरों) पहुँचे। वहाँ श्री नरहरि जी ने तुलसीदास को रामचरित सुनाया। कुछ दिन बाद वह काशी चले आये। काशी में शेषसनातन जी के पास रहकर तुलसीदास ने पन्द्रह वर्ष तक वेद-वेदांग का अध्ययन किया। इधर उनकी लोकवासना कुछ जाग्रत् हो उठी और अपने विद्यागुरु से आज्ञा लेकर वे अपनी जन्मभूमि को लौट आये। वहाँ आकर उन्होंने देखा कि उनका परिवार सब नष्ट हो चुका है। उन्होंने विधिपूर्वक अपने पिता आदि का श्राद्ध किया और वहीं रहकर लोगों को भगवान राम की कथा सुनाने लगे।

भगवान श्री राम जी से भेंट:-
कुछ काल राजापुर रहने के बाद वे पुन: काशी चले गये और वहाँ की जनता को राम-कथा सुनाने लगे। कथा के दौरान उन्हें एक दिन मनुष्य के वेष में एक प्रेत मिला, जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बतलाया। हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास ने उनसे श्रीरघुनाथजी का दर्शन कराने की प्रार्थना की। हनुमान्जी ने कहा- "तुम्हें चित्रकूट में रघुनाथजी दर्शन होंगें।" इस पर तुलसीदास जी चित्रकूट की ओर चल पड़े।
चित्रकूट पहुँच कर उन्होंने रामघाट पर अपना आसन जमाया। एक दिन वे प्रदक्षिणा करने निकले ही थे कि यकायक मार्ग में उन्हें श्रीराम के दर्शन हुए। उन्होंने देखा कि दो बड़े ही सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार होकर धनुष-बाण लिये जा रहे हैं। तुलसीदास उन्हें देखकर आकर्षित तो हुए, परन्तु उन्हें पहचान न सके। तभी पीछे से हनुमान जी ने आकर जब उन्हें सारा भेद बताया तो वे पश्चाताप करने लगे। इस पर हनुमान जी ने उन्हें सात्वना दी और कहा प्रातःकाल फिर दर्शन होंगे।
संवत् १६०७ की मौनी अमावस्या को बुधवार के दिन उनके सामने भगवान श्रीराम|भगवान श्री राम जी पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बालक रूप में आकर तुलसीदास से कहा-"बाबा! हमें चन्दन चाहिये क्या आप हमें चन्दन दे सकते हैं?" हनुमान जी ने सोचा, कहीं वे इस बार भी धोखा न खा जायें, इसलिये उन्होंने तोते का रूप धारण करके यह दोहा कहा:

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुबीर॥
तुलसीदास भगवान श्री राम जी की उस अद्भुत छवि को निहार कर अपने शरीर की सुध-बुध ही भूल गये। अन्ततोगत्वा भगवान ने स्वयं अपने हाथ से चन्दन लेकर अपने तथा तुलसीदास जी के मस्तक पर लगाया और अन्तर्ध्यान हो गये।

संस्कृत में पद्य-रचना:-

संवत् १६२८ में वह हनुमान जी की आज्ञा लेकर अयोध्या की ओर चल पड़े। उन दिनों प्रयाग में माघ मेला लगा हुआ था। वे वहाँ कुछ दिन के लिये ठहर गये। पर्व के छः दिन बाद एक वटवृक्ष के नीचे उन्हें भारद्वाज और याज्ञवल्क्य मुनि के दर्शन हुए। वहाँ उस समय वही कथा हो रही थी, जो उन्होने सूकरक्षेत्र में अपने गुरु से सुनी थी। माघ मेला समाप्त होते ही तुलसीदास जी प्रयाग से पुन: वापस काशी आ गये और वहाँ के प्रह्लादघाट पर एक ब्राह्मण के घर निवास किया। वहीं रहते हुए उनके अन्दर कवित्व-शक्ति का प्रस्फुरण हुआ और वे संस्कृत में पद्य-रचना करने लगे। परन्तु दिन में वे जितने पद्य रचते, रात्रि में वे सब लुप्त हो जाते। यह घटना रोज घटती। आठवें दिन तुलसीदास जी को स्वप्न हुआ। भगवान शंकर ने उन्हें आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में काव्य रचना करो। तुलसीदास जी की नींद उचट गयी। वे उठकर बैठ गये। उसी समय भगवान शिव और पार्वती उनके सामने प्रकट हुए। तुलसीदास जी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। इस पर प्रसन्न होकर शिव जी ने कहा- "तुम अयोध्या में जाकर रहो और हिन्दी में काव्य-रचना करो। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी कविता सामवेद के समान फलवती होगी।" इतना कहकर गौरीशंकर अन्तर्धान हो गये। तुलसीदास जी उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर काशी से सीधे अयोध्या चले गये।

रामचरितमानस की रचना:-

संवत् १६३१ का प्रारम्भ हुआ। दैवयोग से उस वर्ष रामनवमी के दिन वैसा ही योग आया जैसा त्रेतायुग में राम-जन्म के दिन था। उस दिन प्रातःकाल तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस की रचना प्रारम्भ की। दो वर्ष, सात महीने और छब्बीस दिन में यह अद्‌भुत ग्रन्थ सम्पन्न हुआ। संवत् १६३३ के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में राम-विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये।
इसके बाद भगवान की आज्ञा से तुलसीदास जी काशी चले आये। वहाँ उन्होंने भगवान विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा को श्रीरामचरितमानस सुनाया। रात को पुस्तक विश्वनाथ-मन्दिर में रख दी गयी। प्रात:काल जब मन्दिर के पट खोले गये तो पुस्तक पर लिखा हुआ पाया गया-सत्यं शिवं सुन्दरम् जिसके नीचे भगवान शंकर की सही (पुष्टि) थी। उस समय वहाँ उपस्थित लोगों ने "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की आवाज भी कानों से सुनी।
इधर काशी के पण्डितों को जब यह बात पता चली तो उनके मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई। वे दल बनाकर तुलसीदास जी की निन्दा और उस पुस्तक को नष्ट करने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने पुस्तक चुराने के लिये दो चोर भी भेजे। चोरों ने जाकर देखा कि तुलसीदास जी की कुटी के आसपास दो युवक धनुषबाण लिये पहरा दे रहे हैं। दोनों युवक बड़े ही सुन्दर क्रमश: श्याम और गौर वर्ण के थे। उनके दर्शन करते ही चोरों की बुद्धि शुद्ध हो गयी। उन्होंने उसी समय से चोरी करना छोड़ दिया और भगवान के भजन में लग गये। तुलसीदास जी ने अपने लिये भगवान को कष्ट हुआ जान कुटी का सारा समान लुटा दिया और पुस्तक अपने मित्र टोडरमल (अकबर के नौरत्नों में एक) के यहाँ रखवा दी। इसके बाद उन्होंने अपनी विलक्षण स्मरण शक्ति से एक दूसरी प्रति लिखी। उसी के आधार पर दूसरी प्रतिलिपियाँ तैयार की गयीं और पुस्तक का प्रचार दिनों-दिन बढ़ने लगा।
इधर काशी के पण्डितों ने और कोई उपाय न देख श्री मधुसूदन सरस्वती नाम के महापण्डित को उस पुस्तक को देखकर अपनी सम्मति देने की प्रार्थना की। मधुसूदन सरस्वती जी ने उसे देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और उस पर अपनी ओर से यह टिप्पणी लिख दी-
आनन्दकानने ह्यास्मिंजंगमस्तुलसीतरुः।
कवितामंजरी भाति रामभ्रमरभूषिता॥
इसका हिन्दी में अर्थ इस प्रकार है-"काशी के आनन्द-वन में तुलसीदास साक्षात तुलसी का पौधा है। उसकी काव्य-मंजरी बड़ी ही मनोहर है, जिस पर श्रीराम रूपी भँवरा सदा मँडराता रहता है।"

पण्डितों को उनकी इस टिप्पणी पर भी संतोष नहीं हुआ। तब पुस्तक की परीक्षा का एक अन्य उपाय सोचा गया। काशी के विश्वनाथ-मन्दिर में भगवान विश्वनाथ के सामने सबसे ऊपर वेद, उनके नीचे शास्त्र, शास्त्रों के नीचे पुराण और सबके नीचे रामचरितमानस रख दिया गया। प्रातःकाल जब मन्दिर खोला गया तो लोगों ने देखा कि श्रीरामचरितमानस वेदों के ऊपर रखा हुआ है। अब तो सभी पण्डित बड़े लज्जित हुए। उन्होंने तुलसीदास जी से क्षमा माँगी और भक्ति-भाव से उनका चरणोदक लिया।

मृत्युः-

तुलसीदास जी जब काशी के विख्यात् घाट असीघाट पर रहने लगे तो एक रात कलियुग मूर्त रूप धारण कर उनके पास आया और उन्हें पीड़ा पहुँचाने लगा। तुलसीदास जी ने उसी समय हनुमान जी का ध्यान किया। हनुमान जी ने साक्षात् प्रकट होकर उन्हें प्रार्थना के पद रचने को कहा, इसके पश्चात् उन्होंने अपनी अन्तिम कृति विनय-पत्रिका लिखी और उसे भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया। श्रीराम जी ने उस पर स्वयं अपने हस्ताक्षर कर दिये और तुलसीदास जी को निर्भय कर दिया।
संवत् १६८० में श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवार को तुलसीदास जी ने "राम-राम" कहते हुए अपना शरीर परित्याग किया।

तुलसी-स्तवनः-

तुलसीदास जी की हस्तलिपि अत्यधिक सुन्दर थी लगता है जैसे उस युग में उन्होंने कैलोग्राफी की कला आती थी। उनके जन्म-स्थान राजापुर के एक मन्दिर में श्रीरामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड की एक प्रति सुरक्षित रखी हुई है।

रचनाएँः-

अपने १२६ वर्ष के दीर्घ जीवन-काल में तुलसीदास ने कालक्रमानुसार निम्नलिखित कालजयी ग्रन्थों की रचनाएँ कीं -
रामललानहछू, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, जानकी-मंगल, रामचरितमानस, सतसई, पार्वती-मंगल, गीतावली, विनय-पत्रिका, कृष्ण-गीतावली, बरवै रामायण, दोहावली और कवितावली।
इनमें से रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली जैसी कृतियों के विषय में किसी कवि की यह आर्षवाणी सटीक प्रतीत होती है - पश्य देवस्य काव्यं, न मृणोति न जीर्यति। अर्थात देवपुरुषों का काव्य देखिये जो न मरता न पुराना होता है।
लगभग चार सौ वर्ष पूर्व तुलसीदास जी ने अपनी कृतियों की रचना की थी। आधुनिक प्रकाशन-सुविधाओं से रहित उस काल में भी तुलसीदास का काव्य जन-जन तक पहुँच चुका था। यह उनके कवि रूप में लोकप्रिय होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मानस जैसे वृहद् ग्रन्थ को कण्ठस्थ करके सामान्य पढ़े लिखे लोग भी अपनी शुचिता एवं ज्ञान के लिए प्रसिद्ध होने लगे थे।

तुलसीदास जी द्वारा रचित सुविख्यात श्रीराम स्तुतिः-

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भाव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवी नव नील नीरज सुन्दरम्।
पट्पीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमी जनक सुतावरम्।।
भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-धूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कुंज निवास कुरु कामादी खल दल गंजनम्।।

Ewa Zindagi

एक जीवनपरिचय: सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान जी हिंदी साहित्य की एक जगमगाती किरण हैं। साहित्यक जगत की सुभद्रा कुमारी जी सुप्रसिद्ध कवियत्री और लेखिका थीं। यह राष्ट्रीय चेतना की सजग कवियत्री रहीं हैं। इनकी लेखनी की भाषा सरल और काव्यात्मक है इसी कारण इनकी रचनाएं हृदयग्राही हैं। आज मैं सुभद्रा कुमारी चौहान जी का जीवन परिचय और उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालने जा रही हूं।

जीवन परिचय:
सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के गांव गया पास निहालपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम 'ठाकुर रामनाथ सिंह' था। सुभद्रा कुमारी की काव्य प्रतिभा बचपन से ही सामने आ गई थी। 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में आपने शिक्षा प्राप्त की। 1913 में नौ वर्ष की आयु में सुभद्रा की पहली कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी। यह कविता 'सुभद्राकुँवरि' के नाम से छपी। सुभद्रा चंचल और कुशाग्र बुद्धि थी।

बचपन:
सुभद्रा जी और महादेवी वर्मा दोनों बचपन की सहेलियाँ थीं। दोनों ने एक-दूसरे की कीर्ति से सुख पाया। सुभद्रा जी की पढ़ाई नवम् कक्षा के बाद छूट गई। शिक्षा समाप्त करने के बाद नवलपुर के सुप्रसिद्ध 'ठाकुर लक्ष्मण सिंह' के साथ इनका विवाह हो गया। बाल्यकाल से ही साहित्य में रुचि थी। प्रथम काव्य रचना आपने 15 वर्ष की आयु में ही लिखी थी। सुभद्रा कुमारी का स्वभाव बचपन से ही दबंग, बहादुर व विद्रोही था। वह अशिक्षा, अंधविश्वास, जाति आदि रूढ़ियों के विरुद्ध लडीं।

कर्तव्य और समाज:
शादी के डेढ़ वर्ष के होते ही सुभद्रा कुमारी जी सत्याग्रह में शामिल हो गईं और देश के लिए कर्तव्य और समाज की ज़िम्मेदारी सँभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी।
1920 - 21 में सुभद्रा जी और लक्ष्मण सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे।
1922 का जबलपुर का 'झंडा सत्याग्रह' देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी पहली महिला सत्याग्रही थीं। रोज़-रोज़ सभाएँ होती थीं और जिनमें सुभद्रा भी बोलती थीं। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में उनका उल्लेख लोकल सरोजिनी कहकर किया था।वे जिस सहजता से देश की पहली स्त्री सत्याग्रही बनकर जेल जा सकती थीं, उसी तरह अपने घर में, बाल-बच्चों में और गृहस्थी के छोटे-मोटे कामों में भी रमी रह सकती थीं। लक्ष्मणसिंह चौहान जैसे जीवनसाथी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसा पथ-प्रदर्शक पाकर वह स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रहीं। कई बार जेल भी गईं। काफ़ी दिनों तक मध्य प्रांत असेम्बली की कांग्रेस सदस्या रहीं और साहित्य एवं राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक जागरूक नारी के रूप में अपना कर्तव्य निभाती रहीं।

देशभक्त कवि:
'जलियांवाला बाग,' 1917 के नृशंस हत्याकांड से उनके मन पर गहरा आघात लगा। उन्होंने तीन आग्नेय कविताएँ लिखीं। 'जलियाँवाले बाग़ में वसंत' में उन्होंने लिखा-

परिमलहीन पराग दाग़-सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा बाग़ ख़ून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।

रचनाएँ:
उन्होंने लगभग 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की।
इनका पहला काव्य-संग्रह 'मुकुल' 1930 में प्रकाशित हुआ।
इनकी चुनी हुई कविताएँ 'त्रिधारा' में प्रकाशित हुई हैं। सुभद्रा कुमारी जी के काव्य से पेश हैं कुछ चुनिंदा रचनाएं: मेरा नया बचपन, ठुकरा दो या प्यार दो, साध, चलते समय, नीम, कुट्टी, पतंग, मधुमय प्याली, कोयल, खिलौने वाला, उल्लास, झिलमिल तारे, राखी की चुनौती, जीवन फूल इत्यादि।

'झाँसी की रानी' इनकी बहुचर्चित रचना है:
सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और जेल यात्रा के बाद भी उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए-
'बिखरे मोती (1932),
उन्मादिनी (1934),
सीधे-सादे चित्र (1947)।
इन कथा संग्रहों में कुल 38 कहानियाँ (क्रमशः पंद्रह, नौ और चौदह)।

कदंब का पेड़:
कदंब का पेड़ सुभद्रा जी की बहुचर्चित कविता है।
यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे॥
ले देतीं यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती यह कदंब की डाली॥
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता॥
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बांसुरी बजाता।
अम्मा-अम्मा कह वंशी के स्वर में तुम्हे बुलाता॥
बहुत बुलाने पर भी माँ जब नहीं उतर कर आता।

माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता॥
तुम आँचल फैला कर अम्मां वहीं पेड़ के नीचे।
ईश्वर से कुछ विनती करतीं बैठी आँखें मीचे॥
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे-धीरे आता।
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छिप जाता॥
तुम घबरा कर आँख खोलतीं, पर माँ खुश हो जाती।
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं॥
इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे।
यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे॥

स्त्रियों के लिए प्रेरणा:
राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाते हुए, उस आनन्द और जोश में सुभद्रा जी ने जो कविताएँ लिखीं, वे उस आन्दोलन में एक नयी प्रेरणा भर देती हैं। स्त्रियों को सम्बोधन करती यह कविता देखिए--
"सबल पुरुष यदि भीरु बनें, तो हमको दे वरदान सखी।
अबलाएँ उठ पड़ें देश में, करें युद्ध घमासान सखी।
पंद्रह कोटि असहयोगिनियाँ, दहला दें ब्रह्मांड सखी।
भारत लक्ष्मी लौटाने को , रच दें लंका काण्ड सखी।।"
असहयोग आन्दोलन के लिए यह आह्वान इस शैली में तब हुआ है, जब स्त्री सशक्तीकरण का ऐसा अधिक प्रभाव नहीं था।

देशप्रेम :
सुभद्रा जी में देश प्रेम की भावना कूट- कूट के भरी थी।देश प्रेम से ओत प्रोत उनकी मुख्य कविता है:

"वीरों का कैसा हो वसन्त"

उनकी एक ओर प्रसिद्ध देश-प्रेम की कविता है, जिसकी शब्द-रचना, लय और भाव-गर्भिता अनोखी थी। स्वदेश के प्रति', 'विजयादशमी', 'विदाई', 'सेनानी का स्वागत', 'झाँसी की रानी की सधि मापर', 'जलियाँ वाले बाग़ में बसन्त', आदि श्रेष्ठ कवित्व से भरी उनकी अन्य सशक्त कविताएँ हैं।

राष्ट्रभाषा प्रेम:
'राष्ट्रभाषा' के प्रति भी उनका गहरा सरोकार है, जिसकी सजग अभिव्यक्ति 'मातृ मन्दिर में', नामक कविता में हुई है, यह उनकी राष्ट्रभाषा के उत्कर्ष के लिए चिन्ता है -
'उस हिन्दू जन की गरविनी
हिन्दी प्यारी हिन्दी का
प्यारे भारतवर्ष कृष्ण की
उस प्यारी कालिन्दी का
है उसका ही समारोह यह
उसका ही उत्सव प्यारा
मैं आश्चर्य भरी आंखों से
देख रही हूँ यह सारा
जिस प्रकार कंगाल बालिका
अपनी माँ धनहीता को
टुकड़ों की मोहताज़ आज तक
दुखिनी की उस दीना को।

काव्य में प्रेमानुभुति:
सुभद्राकुमारी चौहान नारी के रूप में ही रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती हैं। बहन, माता, पत्नी के साथ-साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव उन्होंने व्यक्त किए हैं। उनकी शैली में वही सरलता है, वही अकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है। --- मुक्तिबोध
तरल जीवनानुभुतियों से उपजी सुभद्रा कुमारी चौहान कि कविता का प्रेम दूसरा आधार-स्तम्भ है। यह प्रेम द्विमुखी है। "बचपन से प्रेम" और दूसरा "दाम्पत्य प्रेम", तीसरे शैशव ।
उनकी अपनी
शैशव सम्बन्धी इन कविताओं की एक और बहुत बड़ी विशेषता है, कि ये 'बिटिया प्रधान' कविताएँ हैं - कन्या भ्रूण-हत्या की बात तो हम आज ज़ोर-शोर से कर रहे हैं, किन्तु बहुत ही चुपचाप, बिना मुखरता के, सुभद्रा इस विचार को सहजता से व्यक्त करती हैं। यहाँ 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' का भाव नहीं, अपितु संसार का समस्त सुख बेटी में देखा गया है।कहा जाता है कि उन्होंने अपनी पुत्री का कन्यादान करने से मना कर दिया कि 'कन्या कोई वस्तु नहीं कि उसका दान कर दिया जाए।' स्त्री-स्वतंत्र्य का कितना बड़ा पग था वह।

भक्ति भावना:
उनका भक्ति-भाव कभी प्रबल है। पूर्ण मन से प्रभु के सम्मुख सर्वात्म समर्पण की इससे सुन्दर, सहज अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती-
देव! तुम्हारे कई उपासक
कई ढंग से आते
में बहुमूल्य भेंट व
कई रंग की लाते हैं।

प्रकृति प्रेम :
प्रकृति से भी सुभद्रा कुमारी चौहान के कवि का गहन अनुराग रहा है--'नीम', 'फूल के प्रति', 'मुरझाया फूल', आदि में उन्होंने प्रकृति का चित्रण बड़े सहज भाव से किया है।

बाल कविताएँ:
सुभद्रा जी ने मातृत्व से प्रेरित होकर बहुत सुंदर बाल कविताएँ भी लिखी हैं। यह कविताएँ भी उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत हैं। 'सभा का खेल' नामक कविता में, खेल-खेल में राष्ट्रीय भाव जगाने का प्रयास इस प्रकार किया है -
सभा-सभा का खेल आज हम खेलेंगे,
जीजी आओ मैं गांधी जी, छोटे नेहरु, तुम सरोजिनी बन जाओ।
मेरा तो सब काम लंगोटी गमछे से चल जाएगा,
छोटे भी खद्दर का कुर्ता पेटी से ले आएगा।
मोहन, लल्ली पुलिस बनेंगे,
हम भाषण करने वाले वे लाठियाँ चलाने वाले,
हम घायल मरने वाले।

इस कविता में बच्चों के खेल, गांधी जी का संदेश, नेहरु जी के मन में गांधी जी के प्रति भक्ति, सरोजिनी नायडू की सांप्रदायिक एकता संबंधी विचारधारा को बड़ी खूबी से व्यक्त किया गया है। सुभद्रा जी का राष्ट्रीय काव्य हिन्दी में बेजोड़ है।

कहानी लेखन:

सुभद्रा जी ने कहानी लिखना आरंभ किया।उनकी कहानियों में देश-प्रेम के साथ-साथ समाज की विद्रूपता, अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर देखने को मिलता है। एक ही वर्ष में उन्होंने एक कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' बना डाला। 'बिखरे मोती' संग्रह को छपवाने के लिए वह इलाहाबाद गईं। इस बार भी सेकसरिया पुरस्कार उन्हें ही मिला- कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' के लिए। उनकी अधिकांश कहानियाँ सत्य घटना पर आधारित हैं। देश-प्रेम के साथ-साथ उनमें गरीबों के लिए सच्ची सहानुभूति दिखती है।

अंतिम रचना:
मैं अछूत हूँ, मंदिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है।
किंतु देवता यह न समझना, तुम पर मेरा प्यार नहीं है॥
प्यार असीम, अमिट है, फिर भी पास तुम्हारे आ न सकूँगी।

यह अपनी छोटी सी पूजा, चरणों तक पहुँचा न सकूँगी॥
इसीलिए इस अंधकार में, मैं छिपती-छिपती आई हूँ।
तेरे चरणों में खो जाऊँ, इतना व्याकुल मन लाई हूँ॥
तुम देखो पहिचान सको तो तुम मेरे मन को पहिचानो।
जग न भले ही समझे, मेरे प्रभु! मेमन की जानो॥
यह कविता कवियत्री की अंतिम रचना है।

निधन:
15 फरवरी 1948 को कार दुर्घटना में अचानक से सुभद्रा जी का निधन हो गया। उनका चेहरा शांत और निर्विकार था मानों गहरी नींद सो गई हों। 16 अगस्त 1904 को जन्मी सुभद्रा कुमारी चौहान का देहांत 15 फरवरी 1948 को 44 वर्ष की आयु में ही हो गया। एक संभावनापूर्ण जीवन का अंत हो गया।
उनकी मृत्यु पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि सुभद्रा जी का आज चल बसना प्रकृति के पृष्ठ पर ऐसा लगता है मानो नर्मदा की धारा के बिना तट के पुण्य तीर्थों के सारे घाट अपना अर्थ और उपयोग खो बैठे हों। सुभद्रा जी का जाना ऐसा मालूम होता है मानो 'झाँसी वाली रानी' की गायिका, झाँसी की रानी से कहने गई हो कि लो, फिरंगी खदेड़ दिया गया और मातृभूमि आज़ाद हो गई। प्रभु करे, सुभद्रा जी को अपनी प्रेरणा से हमारे बीच अमर करके रखने का बल इस पीढ़ी को मिले।

पुरस्कार और सम्मान:
सुभद्रा जी को 'मुकुल' तथा 'बिखरे मोती' पर अलग-अलग सेकसरिया पुरस्कार मिले।
भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रॅल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान को सम्मानित करते हुए नवीन नियुक्त तटरक्षक जहाज़ को उन का नाम दिया है।
भारतीय डाक तार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया था।
जबलपुर में सुभद्रा जी की आदमकद प्रतिमा लगवाई जिसका अनावरण 27 नवंबर 1949 को कवयित्री और उनकी बचपन की सहेली महादेवी वर्मा ने किया। महादेवी जी ने इस अवसर पर कहा," नदियों का कोई स्मारक नहीं होता। दीपक की लौ को सोने से मढ़ दीजिए पर इससे क्या होगा?"

सुभद्रा कुमारी चौहान जी की जीवनी उनकी पुत्री सुधा चौहान जी ने ' मिला तेज से तेज ' नामक पुस्तक में लिखी है।

साभार गद्यकोश

एक जीवनपरिचय: महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जी हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक मीरा भी कहा गया है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं।महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान के बीच बचपन से मित्रता थी।

प्रारंभिक जीवन और परिवार:

महादेवी वर्मा जी का जन्म 26 मार्च,1907 को फ़र्रूख़ाबाद, उत्तर प्रदेश के एक संपन्न परिवार में हुआ। इस परिवार में लगभग २०० वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद महादेवी जी के रूप में पुत्री का जन्म हुआ था। अत: इनके बाबा गोविंद प्रसाद वर्मा हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी- महादेवी माना और उन्होंने इनका नाम महादेवी रखा था। महादेवी जी के माता-पिता का नाम हेमरानी देवी और बाबू गोविन्द प्रसाद वर्मा था।

शिक्षा व विवाह:

महादेवी वर्मा जी ने अपनी आरंभिक शिक्षा घर पर ही पूरी की। अध्ययन के साथ ही संगीत और चित्रकला में भी इनकी प्रारंभ में ही रुचि रही है। नौ वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह भी रूपनारायण वर्मा से हुआ। फलस्वरूप इंदौर से वे अपने ससुराल प्रयाग में आ गई। वहीं पर इन्होंने मिडिल से लेकर एम .ए. संस्कृत तक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। अपनी शैक्षणिक योग्यता के कारण एम.ए. पास करते ही प्रयाग महिला विद्यापीठ के प्राचार्य का पद मिला। इन्होंने अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। असमय वैधव्य जीवन ने महादेवी को आत्मलीन, शांत और एकांकी अवश्य बनाया लेकिन इनका बहिर्मुखी व्यक्तित्व अत्यंत उदार, मिलनसार और परहित विशेष रूप से दीन - दुखियों की सेवा - सहायता की भावना से ओतप्रोत था।

भाषा -शैली:

महादेवी जी की काव्य-भाषा अत्यन्त समर्थ और सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इनकी रचनाओं में उर्दू और अंग्रेजी के प्रचालित शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। उन्होंने गद्य और कहानियां लिखने के लिए आम बोल-चाल की भाषा या खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

महादेवी की कुल रचनाएं:

काव्य - नीहार , रश्मि , नीरजा , संध्यागीत , गीतपर्व , दीपशीखा , रघिनी , परिक्रमा , नी लांबरा , आत्मिक और दीपगीत आदि।
रेखाचित्र और संस्करण - श्रृंखला की कड़िया तथा अतीत के चलचित्र आदि।

गीत रचनाकार:

महादेवी वर्मा जी ने बहुत सुंदर गीत रचना भी की उनके अनुसार गीत किसी पक्षी के समान हैं। जिस प्रकार एक पक्षी आकाश में उड़ान भरता है लेकिन फिर भी धरती है जुड़ा रहता है उसी प्रकार कवि भी कल्पना के आकाश में उड़ता है लेकिन वह सदैव धरती से जुड़ा रहता है। महादेवी जी को संगीत का भी ज्ञान था इसलिए उनकी रचनाओं में नाद-सौंदर्य भी नज़र आता है। उन्हीं का लिखा एक गीत यहां प्रस्तुत है:

प्राण रमा पतझार सजनि/सांध्यगीत

प्राण रमा पतझार सजनि
अब नयन बसी बरसात री!

वह प्रिय दूर पन्थ अनदेखा,
श्वास मिटाते स्मृति की रेखा,
पथ बिन अन्त, पथिक छायामय,
साथ कुहकीनी रात री!

संकेतों में पल्लव बोले,
मृदु कलियों ने आँसू तोले,
असमंजस में डूब गया,
आया हँसती जो प्रात री!

नभ पर दूख की छाया नीली,
तारों की पलकें हैं गीली,
रोते मुझ पर मेघ,
आह रूँधे फिरता है वात री!

लघु पल युग का भार संभाले,
अब इतिहास बने हैं छाले,
स्पन्दन शब्द व्यथा की पाती,
दूत नयन-जलजात री!

सहज प्रेम:

प्रेम महादेवी जी की कविता का मूल भाव है। उन्होंने प्रेम के मधुर रूप का चयन किया।
महादेवी जी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए, उसी से उनका प्रणयानुभूति का उदभव हुआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रही। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक

होता है। फिर अपार, अथाह ,असीम सौंदर्य किससे हृदय का प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा। महादेवी जी में अपने इस आलौकिक प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा है वह कहती है -

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा, कितने संदेश
पथ में बिछ जाते वन पराग
गाता प्राणों का तार -2
अनुराग भरा उन्माद राग
आंसू लेते वे पद पखार।

सौंदर्य भाव:

महादेवी वर्मा जी सौंदर्य की उदभाविका है। छायावादी कवियों के समान महादेवी ने भी सौंदर्य को अपने काव्य में प्रधानता दी है। चीर सौंदर्य का भाव उनके काव्य में मिलता है।

विरह वेदना :

महादेवी वर्मा जी को करुणा की कवियत्री कहा जाता है।
उनकी रचनाओं विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं।
उनके प्रथम काव्य संग्रह ' नीहार 'के एक गीत में विरह जन्य व्याकुलता के साथ संयोग की इच्छा भी छिपी हुई है।
" जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग ,
गाता प्राणो का तार - तार अनुराग भरा उन्माद राग ,
छा जाता जीवन में बसन्त लुट जाता चिर संचित विराग ,
आंखे देती सर्वस्ववार।'
करूणा से भरी होने के कारण महादेवी जी ने अपने काव्य में भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है:

" मैं नीर भरी दुख की बदली विरह वेदना का नाम ले , मैं विरह में चिरलीन हूं , मैं अपने सूनेपन की रानी हूं.....।

प्रकृति चित्रण:

महादेवी जी ने प्रकृति के कोमल, मधुर, सुंदर रूप का चित्रण किया है। उन्होंने प्रकृति के भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों का श्रृंगार किया। उनके अनुसार प्रकृति प्रेरणा की प्रतीक है। दुःख के सुखद परिणाम की अभिव्यक्ति उन्होंने इस तरह से की:

" जब मेरे शूलों पर शत - शत
मधु के युग होंगे अवलंबित
मेरे क्रंदन से आतप के
दिन साव हरियाले होंगे
तब क्षण - क्षण मधु प्याले होंगे।"

प्रकृति के सौंदर्य को देखकर उनके मुंह से बरबस निकल पड़ता है कि संसार बिम्ब कितना मादक है:

" तब कलियां चुपचाप उठाकर
पल्लव से घुंघट सुकुमार
छलकी पलकों से कहती है,
कितना मादक है संसार।"

महिला विद्यापीठ की स्थापना :

महादेवी वर्मा ने अपने प्रयत्नों से इलाहाबाद में 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की स्थापना की। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं।1932 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार सँभाला।

सम्मान और पुरस्कार :

1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गईं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'पद्म भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिए 1934 में 'सेकसरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाओं' के लिए 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 1943 में उन्हें 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

निधन:

आपने संपूर्ण जीवन प्रयाग इलाहाबाद में ही रहकर साहित्य की साधना की और आधुनिक काव्य जगत में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा| आपके कार्य में उपस्थित विरह वेदना अपनी भावनात्मक गहनता के लिए अमूल्य मानी जाती है और इन्हीं कारणों से आपको आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है| भावुकता आपके कार्य की पहचान है| 11 सितंबर 1987 को महादेवी वर्मा की मृत्यु हो गई|

काव्य अंताक्षरी
(Ewa Musical Vibes)

प्रिय दोस्तों,
हम आपके लिए लेकर आते हैं एक दिलचस्प खेल जो हम बचपन से ही फिल्मों के गानों को लेकर खेलते आ रहे हैं। जी हाँ सही पहचाना "अंताक्षरी"। पर इस बार इसका नाम है "काव्य अंताक्षरी" जो हर साहित्य प्रेमी को यकीनन पसंद आयेगा।

हम हर बार आपकी काव्य अंताक्षरी का एक वीडियो भी बनाते हैं, जो हमारे यू ट्यूब चैनल एवं अन्य सोशल साइट्स पर प्रेषित किया जाता है।

तो पेश है , कुछ झलकियां उन पंक्तियों की जो आपके द्वारा हमें भेजी गई हैं।

काव्य अंताक्षरी-6

➡तुकबंदी (Rhyme) काम,नाम.. ('आम' स्वर)
➡दोहराव (Repeat) 'है यारों'

छोड़ कुछ पल जिंदगी के तामझाम यारो,
प्रभु का नाम भज ले संवर जायेंगे सारे काम यारों ।
©Late Vinaysheel Mishra ji

एक शिक्षक हूँ शिक्षा दान मेरा काम है यारों,
बनें सब योग्य मेरे छात्र यही ईनाम है यारों।
©फूल चंद्र विश्वकर्मा

पुरातन सभ्यता और संस्कृति हमारी, सच्ची पहचान है यारों,
अनेकता में एकता की मिसाल भारत देश का विश्व में नाम है यारों।
©उषा शर्मा

इन इश्क़ की गलियों से ज़रा, बच कर गुज़रना,
यह गलियां इस दुनिया में, बदनाम हैं यारों।
©पूजा शर्मा

योग्य हो जाऊ हर पथ पर यह ज़रूरी नहीं,
डटे रहना हर पल असली मुकाम है यारों।
©Shruti S. Tripathi

कवि से अलकसाते सब,ये चर्चा आम है यारों,
पर कलम उठाते रहना,कवि का काम है यारों।
© रागिनी अग्रवाल

क्या थे, क्या हो गए हैं हम इस लॉक डाउन में,
क्या बतायें कैसे गुजर रही सुबह शाम है यारों।
© डॉ. निशीथ चन्द्र

समझते थे खुद को खुदा जो यारो,
उन्हीं ने मोहब्बत को किया बदनाम है यारो।
©Rita Chugh

बड़ी मुश्किल है परेशानियों में एहतराम है यारों,
पर हुनर असली जिंदगी का यही संग्राम है यारों।
©राधा शैलेन्द्र

आती है शाम ज़िन्दगी में, करते रहो जो भी अपना काम है यारों,
कुछ इस तरह ही तुम पाओगे, वो शाम भी बस अपने नाम है यारों।
©मीनाक्षी भसीन

आसान नहीं है आंसुओ को छुपा दर्द को भुलाना,
बड़ा मुश्किल दुखों में भी मुस्कुराना काम है यारों।
©अपूर्वा श्रीवास्तव

जो देश के लिए जीते मरते वो देश के जवान हैं यारों
एक बार नही सौ बार हमारा उनको सलाम है यारों ।
©सीमा वर्मा

साहित्य लिखकर हमें बुराईयों को समाप्त करना है यारो,
ख़ुशनसीब है हम कि जहाँ अवतरित हुए भगवान राम है यारो।
©Usha Malhotra

राम नाम से होता सब काम आसान यारो,
आराम में ही छिपा प्रभु राम का नाम है यारो ।
©Bhawana Kumari

जो तूफानों में भी ,सदा मुस्कुराया है,
उसी का इतिहास में, नाम है यारों।
©दिव्य श्वेत

जिया संघर्ष कर जिंदादिली से जो जमाने में,
खुदा के साथ उसका भी आता नाम है यारों।
©रजनी श्री बेदी

ज़िन्दगी मेरी जान है यारो,
चाहे कितनी बदनाम है यारो।
©Balwinder Kaur

वक़्त आता जाता रहेगा, कभी भूले से भी ना भूलना मुस्काना,
ये मुस्कान ही ख़ुदाई का इज़्न-ए-आम है यारों।
©रुचि गौतम पंत

बदलता है नहीं रुकने का लेता नाम है यारों,
सदा चलते ही रहना वक्त का पैगाम है यारों।
©रीता सिन्हा

दोस्ती की दौलत का सदा एहतराम करना यारों,
नहीं कभी स्वार्थपरस्ती इसके नाम करना यारों।
© विभा देवी (Anu Raj)

मुझे इस लॉकडाउन में घर पर भी काम है यारों,
तुम्हारा क्या, मेरा रिश्तो में भी नाम है यारों।
© Shivshankar Rajput Lodh

असल मोहब्बत कहां आसान काम है यारों,
अधूरी ख्वाहिशें ही जीने का नाम है यारों।
© भारती विभूति

बनी हैं दूरियाँ जबसे नहीं वो याद आता है,
न पूछो हाल अब मेरा बहुत आराम है यारों।
©कैस

हमारी क़िस्मत में कहाँ आराम है यारों,
मोहब्बत में उनकी तड़पना हमारा काम है यारों।
©कान्ता अग्रवाल

इश्क़ में गम ही ईनाम है यारों,
तभी तो मुहब्बत बेनाम है यारों।
©संध्या चतुर्वेदी

परिंदो से उड़ो तब ही पता चल पायेगा तुमको,
फलक का दूर तक कोई नही आयाम है यारों।
©कमल पुरोहित

अपनी यही फितरत यही इक काम है यारों,
करता मुहब्बत हूं वही मोकाम है यारों।
©Shubhendra Kumar Jaiswal

सरेआम मोहोब्बत नीलाम है यारों,
दिल्लगी करना मेरा काम है यारो।
©Pankaj Chawla

बीवी को डाँटने वाला कहलाता है ज़ालिम,
डाँट खाया मर्द जोरू का गुलाम है यारों।
©अवधेश कनौजिया

कबीर, रहीम, रसखान नहीं थे कोई आम वो यारों,
सच्चाई का साथ दिया, दिया ये पैग़ाम है यारों।
©सूरज दूबे मुसाफिर

कलम ये मेरी कागज़ पर लिखती सुबह शाम है यारों,
अभी तो बस आगाज़ किया है बाकी तो अंजाम है यारों।
©अनु पपनैं

हमेशा काम करना तुम किसी मजलूम के दिल से,
खुशी बाँटो जहाँ भर को यही पैगाम है यारो ।
©अवधेश सक्सेना

किसी पर अपना सबकुछ लुटाना आसान नहीं है यारो,
देकर ख़ुशी ग़म ले ले जो औरों के यही अपना काम है यारो।
©तिलक तुषार

जिंदगी कभी कडी धूप सी परेशानियों का नाम है यारों,
कभी ठंडी छांव,आस और विश्वास का नाम है यारों।
©Neelam Sharma

किसी की खुशी के लिए अपने गम को भूलना अच्छा काम है यारों,
काबिल नहीं हूं इतना पर उसके होने से ही मेरा नाम है यारों।
©वासवानी विवेक

ज़िन्दगी जिंदादिली का नाम है यारों,
यही खुदा का पैगाम है यारों।
©Smita Dhirasaria

जिंदगी का मुकाम देखो यारों,
राह पर मुश्किल आम देखो यारों।
©Rj Satya Soul

नहीं आसान है बनना देश भक्त सच्चा मेरे यारो,
लुटा देते हैं जान अपनी इन्हें मेरा सलाम है यारो।
©सुधा बसोर

यूँ तो कुछ न करने में, बड़ा आराम है यारों,
मगर कुछ न करना भी तो,मुश्किल काम है यारों ।
©निशि अग्रवाल

कांटे ही कांटे बिछे हैं,इस जिन्दगी की राह में,
चुनते इन्हे ही रहना,इंसान का काम है यारों ।
©R K Sharma

इस दुनिया में बस, काम से ही नाम है यारों,
खुदा-ए-शफ में कोई, खास न आम है यारों।
© Vipin Soni

हों लाख विपरीत परिस्थितियाँ,डटे सरहद पर वो यारों,
ऐसे जाँबाज सैनिकों को, मेरा सलाम है यारों।
©Rekha Bora

जिसको जो कहना है कह ले परवाह नहीं हमको,
क्या बिगाड़ेगी दुनिया संग अपने 'गर राम है यारों ।
©सीमा अग्रवाल

इस मतलबी दुनिया में रब के अलावा कोई अपना नहीं है यारों ,
ये झूठ नहीं इक कड़वा सच है यारों ।
©वीना मेहता

शहिदों की शहादत पर, चूड़ियां टूटना अब आम हैं यारों,
उनकी क़ुर्बानियों को ज़ाया ना जाने देना हमारा काम है यारों।
©मधुबाला

खुदा के खौफ से डरना दरिंदे कब समझते हैं,
ये तो हम तुम से आम लोगों का ही काम है यारों।
©सविन राव

सदा ही मंजिलों की राह में आती हैं मुश्किलें ,
नहीं उत्साह जिसमें शख़्स वो नाकाम होता है।
©डॉ०स्वदेश मल्होत्रा 'रश्मि'

अपने लिए जिंदगी जीना भी कोई जिंदगी है यारों| वह जिंदगी जो,
दूसरों के काम आए,ऐसी जिंदगी को सलाम है यारों।
©प्रियंका गुप्ता

जमाने में मुहब्बत के कई गुलफ़ाम हैं यारो,
मगर जाने हमीं क्यों हो गए बदनाम हैं यारो।
©Rachna Nirmal

मुसीबत में डरकर भाग जाना,.कायरों का काम है यारों,
साहस-लगन से अपने लक्ष्य को पाने वाले, बहादुर लोगों का ही दुनिया में नाम है यारों ।
©स्वाति गुप्ता

तुम जो निभाओ मेरा साथ यारों,
मैं बाँट लूं खुशी गमी की हर बात यारों।
©अमरप्रीत देहड़

Ewa Zindagi

ज्ञानधारा
(Ewa Learning Hub)

नमस्कार/ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ/आदाब/Hello दोस्तों,

ज्ञान व शिक्षा वह पूँजी है जिसका कभी ह्रास नहीं होता और साथ ही साथ यह भी सत्य है कि कोई भी मनुष्य ज्ञान रूपी सागर से परिपूर्ण नहीं। यह जितना भी और जहाँ से भी प्राप्त हो हमें ख़ुशी से ग्रहण करना चाहिए।

Ewa Zindagi हर मनुष्य के जीवन में शिक्षा व ज्ञान का महत्व भली भाँति समझता है और इस दशा में कदम बढ़ाते हुए हमनें "ज्ञानधारा" EwaLearning Hub शुरू किया है।
हर सप्ताह आपको इसमे शिक्षा/ज्ञान से संबंधित लेख पढ़ने को मिलेंगे।
साथ ही इस विषय पर आप अपने मौलिक लेख भेजना चाहे तो हमे उन्हें आपके नाम के साथ आगमन ज्ञानधारा में प्रेषित करने में ख़ुशी मिलेगी।
अपने लेख हमें ewazindagi@gmail.com पर भेज सकते हैं या Facebook Page के message box में। लेख हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषा में स्वीकार्य होंगे। लेख के साथ #ज्ञानधारा #EwaLearningHub ज़रूर लिखें।

तो आइए जानते है कुछ नया

नैतिक शिक्षा आज के परिवेश में

© डॉ मंजु सैनी

नैतिकता मानव-मूल्यों की वह व्यवस्था है जो अधिक सुखमय जीवन के लिए हमारे व्यवहार को आकार देती है। नैतिकता की सहायता से हम ईमानदारी से जीवन जीकर हमारे सम्पर्क में आने वाले लोगों से विश्वास और मैत्री स्थापित करते हैं। नैतिकता सुख की कुंजी है
सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, दयालुता, मैत्री आदि को नैतिक मूल्य कहा जाता है।सच्चाई को स्वतः साध्य मूल्य कहा जाता है यह अपने आप में ही मूल्यपूर्ण है।इसका प्रयोग साधन की भांति नहीं किया जाता, बल्कि यह स्वतः साध्य है। सभी विवादों में भी सत्य के अन्वेषण का प्रयास किया जाता है। सभी नैतिक मूल्यों का नैतिक आधार सत्य ही है। यद्यपि सत्य एक व्यापक दार्शनिक अवधारणा है लेकिन संक्षेप में इसे वस्तुस्थिति को ज्यों का त्यों कहना कहा जाता है। अर्थात् बिना किसी पूर्वाग्रह के किसी वस्तुस्थिति को देखना, समझना और व्यक्त करने को ही सच्चाई कहते हैं।

मनुष्य में दयालुता नामक सदगुण भी विद्यमान होता है। मनुष्य में अन्यों के प्रति दयालुता का भाव होता है। प्रायः वे अन्यों को कठिनाई में देखते हुए उनकी सहायता का प्रयास करते हैं क्योंकि मनुष्य यह स्वीकार करता है कि इस प्रकार की समस्याएं व घटनाएं किसी के साथ भी हो सकती है इसलिए मनुष्य दयालुता के बोध के कारण ही एक दूसरे की सहायता का प्रयास करते हैं।प्रेम को सर्वोपरि मानव कहा गया है। मनुष्य प्रायः एक दूसरे से प्रेम करते हैं। प्रेम न केवल मानव जाति में विद्यमान होता है बल्कि मनुष्य में अन्य जीवों के प्रति भी प्रेमभाव विद्यमान होता है।

प्राचीन भारत में "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा पाई जाती है जिसका अभिप्राय है कि पूरी धरती ही एक परिवार के समान है और यहाँ सभी को एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेमपर्वक रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति की यह अवधारणा उसके सारतत्व 'सह अस्तित्व' पर आधारित है। इसे वर्तमान वैश्वीकरण से भी जोड़कर देखा जा सकता है जहाँ पूरा विश्व एक गाँव में परिणित हो गया है।

'संस्कारों की सरस बेल हैं नैतिक शिक्षा
है स्नेहिल धारा का प्रवाह नैतिक शिक्षा
आदर्श स्थापित करती नैतिक शिक्षा
घर-संसार संवारती नैतिक शिक्षा"

नैतिक शिक्षा की आवश्यकता:-

नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है। इसका आंरभ मनुष्य के बाल्यकाल से ही हो जाता है। सब पर दया करना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, दुर्बलों को तंग न करना, चोरी न करना, हत्या जैसा कार्य न करना, सच बोलना, सबको अपने समान समझते हुए उनसे प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मूल्य कहलाते हैं। सभी धर्मग्रंथों का उद्देश्य रहा है कि मनुष्य के अंदर नैतिक गुणों का विकास करना ताकि वह मानवता और स्वयं को सही रास्ते में ले जा सके। एक बच्चे को बहुत पहले ही घरवालों द्वारा नैतिक मूल्यों से अवगत करा दिया जाता है। जैसे-जैसे उसकी शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है। उसके मूल्यों में विस्तार होना आवश्यक हो जाता है। ये मूल्य उसे सिखाते हैं कि उसे समाज में, बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ व अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। विद्यालय में किताबों में वर्णित कहानियों और महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से उसके मूल्यों को संवारा व निखारा जाता है। यदि एक देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से रहित होगा, तो उस देश का कभी विकास नहीं हो सकता। लेकिन विडंबना है कि यह नैतिक मूल्य हमारे जीवन से दूर होते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली से नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। क्योंकि इनमें नैतिक शिक्षा का अभाव है। अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए हम किसी भी हद तक गिर जाते हैं। ये इस बात का संकेत है कि समाज कि स्थिति कितनी हद तक गिर चुकी है। चोरी, डकैती, हत्याएँ, धोखा-धड़ी, जालसाज़ी, बेईमानी, झूठ, दूसरों और बड़ों का अनादर, गंदी आदतें नैतिक मूल्यों में आई कमी का परिणाम है। हमें चाहिए नैतिक शिक्षा के मूल्य को पहचाने और इसे अपने जीवन में विशेष स्थान दे। विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा जरूरी कर देनीचाहिए।ताकि गिरते मूल्यों को समय रहते संभाला जा सके।आज के युवावर्ग को सचेत करने की आवश्यकता हैं ताकि हमारे नैतिक मूल्यों का हनन न हो।आओ आज मिलकर संकल्प ले कि हम नैतिक मूल्यों का पालन करेंगे और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित करेंगे।इसी संकल्प के साथ आपकी अपनी डॉ मंजु सैनी

महक पंजाब दी
(Flavours Of Punjab)

कंध/ दीवार

©डॉ.स्वदेश मल्होत्रा 'रश्मि'

धन्न-धन्न दशमेश पिता जिन्ना पुत्तर वीर बनाये
जुग्गो जुग्ग धन्न ओ कंधा जित्थे दो वीर समाए
कुदरत ने ते दित्ता ए इंसानी जामा सारयाँ नूँ ही
कोई नफ़रत दी कंध तोड़े,कोई घर विच कंध बनाये

©Kusam Lata

बडी -बडी कंधा चढ़ान बालों
मुंह बिच कुंगनियां पान बालों ।।

असां थौआडा की बिगाड़ेया
तुसां गी कंधा मतीया प्यारियां। ।

मुंह ना तकना तुसां किसे दा
गल्ल नी करनी तुसां किसे दी ।

कड़ी दा परोसा नी ओए
कुस ले रब चिटठी पौए ।।

पुट सूट्टो इन कंधा नूं
बखरा कित्ता परावां नूं।

इक मां दे दोनों पुत्तर
कंधा लांदे मां दे अंदर । ।

इक जमाना ऐसा सी
किठ्ठे औके रहैंदे सी ।

पूरा ग्रां अपना लगदा
कोई नी कंध बिच लगदी ।

कुड़ियां ब्याह बिच गाना गांदिया सी कंधा ते
कौल ना देई बाबला कंध टप के छपक तेरे बेड़े।

ਕੰਧ ਚਢਾਔ ਪ੍ਯਾਰ ਦੀ ,ਰਲੀਮਿਲੀ ਸਾਰੇ ਰੈਹਨ
ਸੁੰਹ ਫ਼ੂਲਾ ਕੇ ਨਾ ਬੈਠੋ ਤੁਸ,ਕਰੋ ਗਲ੍ਲ ਤੁਸ ਪੈਨ ।।

©Pooja Sharma

ਬਾਬੁਲ ਤੇਰੇ ਮਹਿਲਾਂ ਦੀਆਂ,
ਕੰਧਾਂ ਉੱਚੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।
ਤੇਰੇ ਪਿੱਪਲ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ,
ਮੇਰੀਆਂ ਤੰਦਾਂ ਕੱਚੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।

ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਬਿਚ ਬਾਬੁਲਾ,
ਮੇਰੀਆਂ ਸਥੀਆਂ ਖੇਡਣ ਆਂਉਦੀਆਂ ਸੀ।
ਉਚੇ ਤੇਰੇ ਪਿੱਪਲ ਨਾਲ,
ਪੀਂਘਾਂ ਅਸੀਂ ਪਾਂਉਦੀਆਂ ਸੀ।
ਅਜ ਓਹੀ ਹੱਸਦੀਆਂ ਪੀਂਘਾਂ,
ਬੇਜਾਨ ਰੱਸੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।

ਇਕੋ ਗਲ ਪਿੱਛੇ ਹੀ ਸਦਾ,
ਮੈਂ ਸਬਨਾਂ ਨਾਲ ਲੜਦੀ ਆਈ।
ਕਿਉਂ ਸਾਰੇ ਕਹਿੰਦੇ ਨੇ,
ਧੀ ਹੁੰਦੀ ਚੀਜ਼ ਪਰਾਈ।
ਅਜ ਲੋਕਾਂ ਦਿਆਂ ਓਹੀ ਗੱਲਾਂ,
ਵੇਖੋ ਸੱਚੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।

ਬਾਬੁਲ ਤੇਰੇ ਮਹਿਲਾਂ ਦੀਆਂ,
ਕੰਧਾਂ ਉੱਚੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।
ਤੇਰੇ ਪਿੱਪਲ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ,
ਮੇਰੀਆਂ ਤੰਦਾਂ ਕੱਚੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ ਨੇ।

Ewa Zindagi

सचित्र काव्य प्रवाह
(Ewa Visual Journey)

मुक्ता शर्मा त्रिपाठी

Moderator Incharge

मेरी बहना

आयोजन की आधार पंक्तियाँ

बचपन का अहसास दिलाती।
रौब दिखा, मन में मुस्काती।
जीवन डगर समझ जब आए,
पंख फहरा, दूर उड़ जाती।

1)
जीवन बगिया में खिली, एक खूबसूरत गुलाब है बहना।
करते हम जिस पर नाज, सदा, प्यार और रूवाब है बहना।
माँ जैसी ममता की छाँव, औ' लब की मुस्कान है बहना।
पूरे घर को रौशन करती, आँगन की आफ़ताब है बहना।
©विभा देवी

2)
कोमल नवांकुरों सी ख़ूबसूरत, हृदय की ताज़गी,
कभी होंठों की मुस्कुराहट बन जाती।
जब क्षितिज के उस पार, झाँक रहा हो मेरा भविष्य,
ढ़ाल बन साथ खड़ी नज़र आती।
©अफ़शां

3)
दुनिया से प्यारी है, मेरी बहना।
राज दुलारी है, मेरी बहना।
हंसे खिलखिलाये सदा ये,
जान हमारी है, मेरी बहना।
©अंजू व रत्ती

4)
ममता की छांव है बहना।
मेरी परेशानियों का समाधान है, बहना।
रेशम की डोरी का मान है, बहना।
हम सबका अभिमान है, बहना।
©अंजू कुलकर्णी

5)
आंखों में चमक लिए , प्यार अपना देती है।
मेरी प्यारी सी बहन, मेरा साथ हर दम देती है।
वो अफताब सी खिल, रोशन जहां करती है।
वो बहन मेरा हौसला बन, मुझे पलकों के ऊपर रखती है।
©अपूर्वा श्रीवास्तव

6)
इस दुनिया में सबसे प्यारी, मेरी बहना।
सारे जग से है न्यारी, मेरी बहना।
मां बाप भाई सबके फर्ज निभाती,
जाऊं मैं तुझ पर बलिहारी, मेरी बहना।
©अमरप्रीत देहड़

7)
कुछ बहनों से लिखना सीखा, कुछ बहनों से गाना।
कुछ बहनों को देख-देख, मैं सीख गया मुस्काना।
©अमित प्रेमशंकर

8)
है मेरी दो छोटी प्यारी-सी बहना।
नाम है उसका अर्चना-अर्पणा।
है बस मुझको उससे इतना कहना,
जहाँ भी रहना, तू हँसती रहना।
©भावना कुमारी

9)
मेरी बहना है, सबसे प्यारी, फूलों की हो, जैसे क्यारी।
रोज मुझे समझाती है, सच की राह दिखाती है।
मुश्किल अगर आ जाए तो, माँ मेरी वो बन जाती है।
©बलविंदर कौर

10)
सबसे प्यारी है, मेरी बहना।
मेरे जीवन का अनमोल गहना।
मुस्कुराती रहो, तुम सदा।
मुझे बस इतना ही कहना।
©दिव्य श्वेत

11)
काश मेरी कोई बहना होती।
दुःख लेकर, मुझे सुख दे देती।
माँ के जैसी डाँट लगाकर,
कभी वो स्नेह की बरखा होती।
©दीप ज्योति

12)
बहना मेरी प्यारी, सबसे सुंदर, न्यारी।
मां-बाप तुझे पुकारे, आ जाओ राजदुलारी।
©होशियार सिंह यादव

13)
इक बगिया की कलियाँ हम दो, इक मैं और मेरी छोटी बहना।
संग पिया जब बैठी डोली में, झर-झर आँसू बहते थे नयना।
हम दोनों का संग है ऐसा, जैसे मैं तन, और वो मेरा गहना।
©ज्योति शर्मा

14)
लगे मुझको सदा प्यारा, सुनो! ये प्यार का रिश्ता।
सुखद, मधुरिम बड़ा ही है, मधुर मनुहार का रिश्ता।
हमेशा प्यार देती है, सदा निश्छल, मेरी बहना।
जगत में है बड़ा सबसे, अमिय मृदुधार का रिश्ता।
©कृष्णा श्रीवास्तव

15)
सबसे सुन्दर है, मेरी बहना।
सदा मानती है मेरा कहना।
हर दुख-सुख में साथी बनती।
रखती सबका ध्यान मेरी बहना।
©कुसुम लता

16)
जिसमें माँ है दिखती मुझको।
प्यार का दरिया कहते जिसको।
हर लम्हा जिसके संग गुजारा,
मेरी बहना, तेरा रिश्ता सबसे प्यारा।
©नीलम शर्मा

17)
मेरी बहना, तेरा क्या कहना।
यूँ ही हँसती-मुस्कुराती रहना।
तुझसे ही शोभा है परिवार की,
तू ही है हमारा सच्चा गहना।
©डॉ. निशीथ चन्द्र

18)
रक्षा सूत्र नहीं, यह केवल, मेरी बहना का प्यार है।
सारे जग की निधि निछावर, ऐसा यह उपहार है।
बाँध लिया है, जिसने मुझको, अपने स्नेह के बंधन में।
उसी स्नेह से निर्मित, मेरे स्वप्नों का संसार है।
©फूल चंद्र विश्वकर्मा

19)
घर की खुशियों का, बहाना होती है।
ढेर सारी बातों का, खज़ाना होती है।
जिसके दम से हो, पूरे घर में चमक।
बहना वो अहम गहना होती है।
©पूजा शर्मा

20)
माँ सी प्यारी, बड़ी बहन।
हमारा दुख ना, करे सहन।
हमको देखे जब चिंता में,
शिक्षा देती, बड़ी गहन।
©रजनी श्री बेदी

21)
जिसके बिना अधूरा है ये जीवन,
छोटी हो बड़ी हरदम साथ खड़ी।
खुद से ज्यादा प्यारे भाई की पड़ी।
ऐसी होती है सबकी प्यारी बहन।
©रीना वर्मा प्रेरणा

22)
मेरी बहनें हैं बेटी मेरी, पिता नहीं जब पाला मैंने।
पढ़ा-लिखा कर बढ़ा किया, अपने घर को विदा किया।
अपने क्षेत्र में नाम कमाती, गर्व से हैं मुझको भर जाती।
©रेखा बोरा

23)
जहां देखो नाचती, फिरती, गाती है।
मेरी बहना रोज़ मुझे, नज़र आती है।
कभी सपनों में, कभी ख्यालों में
हर पल मुझे सताती है।
©रीटा चुघ

24)
मेरी बहना है सबसे न्यारी।
सबसे अच्छी दोस्त वो प्यारी।
कभी कभी मां भी बन जाती।
संकट आए तो ढाल बन जाती।
©सविन राव

25)
एक प्यारा सा रिश्ता है, हमारा मेरी बहनों के संग।
खुशी हो या ग़म एक दूसरे का साथ निभायें हरदम।
मेरे प्रभु! ज़माने की नज़र न लगे कभी हमारे रिश्ते को
एक दूसरे की ढाल बन मुस्कुराते, प्यार से बीत जाये जीवन।
©सीमा वर्मा

26)
मन के आँगन में ओ' प्यारी बहना।
निर्झर सरिता सी मुस्काती रहना।
आये पावन रक्षा बंधन का दिन,
मंगल तिलक मेरे भाल सजाना।
©सीमा गर्ग 'मंजरी'

27)
मेरी बहना मां के जैसी, हर पल साथ निभाती है।
गुरु बन कर सीख भी देती, मुश्किल को सुलझाती है।
बन सखी संग मेरे, घंटो ही बतियाती है।
©श्रुति शर्मा त्रिपाठी

28)
मेरी बहना मेरा अनमोल गहना,
सारी दुनिया से अलग है, उसका क्या कहना!
पग-पग मेरा साथ दिया,
जैसे हाथ हो, मेरा दाहिना।
©श्वेता सूद

29)
भाई-बहन का पावन रिश्ता, है यह, अद्भुत रिश्ता।
हर गम और ख़ुशी में साथ निभाता।
एक दूसरे के लिए दुआएं माँगता।
है जग का सबसे, खूबसूरत रिश्ता।
© स्मिता धिरासरिया

30)
यह खेल नहीं है शब्दों का, पावन सरिता संबंधों की।
रेशमी डोर रोली अक्षत, उत्ताल नेह थी बन्धों की।
है हृदय में संताप भरा, भीगी पलकें तटबंधों की।
ज्योतिशिखा अब लुप्त हुई, सोपान तोड़ उपबंधों की।
©शुभेंद्र जायसवाल

31)
घर के आंगन को महकाती मेरी बहना।
गौरैया-सी शोर मचाती मेरी बहना।
रक्षाबंधन, भाई-दूज सब बहना के संग,
हर दुख-सुख में हाथ बंटाती मेरी बहना।
©डॉ.स्वदेश मल्होत्रा 'रश्मि'

32)
बचपन की है याद दिलाती, ममता की मूरत बन जाती।
बहना जब भी पास है आती, मां की छवि मन में मुसकाती।
बहना तेरे बिन सूना आंगन, जहाँ डाले तेरे लिए झूले हर सावन।
©तनु गुप्ता जैन

33)
आता है वर्ष में एक ही बार, रक्षा बंधन का त्योहार।
बांध कलाई रेशम की डोर, देती दुआएं बहन हज़ार।
निर्मल पावन है कितना, बहन भाई का असीम प्यार।
दूर दूर रहकर भी है बहती, इस बंधन में मीठी धार।
©तिलक तुषार

34)
कभी सखा तो कभी वो, माँ की छवि बन जाती है।
बहना तो जीवन में, अविरल स्नेह संचार कराती है।
रक्षा सूत्र बांध ईश्वर से ही मनोकामना करती है।
बहना मेरी निर्मल पावन भावनाओं का संसार लगती है।
©उषा शर्मा

35)
दो पंक्तियों मे क्या लिखूँ?
जिस पर लिख सकती हूँ किताब!
वो बहुत न्यारी और प्यारी है।
जैसे कोई खिला गुलाब।
©उषा मल्होत्रा

36)
बिन कहे समझ के मेरे भावों को।
मुझे सब कुछ दे जाती है।
मेरी नटखट सी शरारतों में,.मेरा साथ दे जाती है।
वो सिर्फ बहन नहीं, मेरी माँ भी बन जाती है।
©वन्दना आज़ाद

37)
मेरी बहना, रिश्तों का गहना,.हर बात मुझे समझाती है।
दर्द हो जब दिल में मेरे, वो भी अश्क़ बहाती है।
चाह नहीं उसे ज्यादा की, अल्प में कभी ख़ुश हो जाती है।
दर्द हो जब मेरे दिल में, वो भी अश्क़ बहाती है।
©विजय सावरिया

38)
समाज की रक्षा बहना करती है।
धागे में साथ पिरोए रहती है।
हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन करती है।
सम्मुख आगे मिसाल बनती है।
©राजीव कुमार श्रीवास्तव

39)
जीने का वह ढंग सिखाती, सही राह वह मुझे दिखाती।
सुख-दुख वह मुझसे बांटा करती, मां जैसी वह चिंता करती।
मेरी बहना सबसे प्यारी, उसकी हर एक बात निराली।
©प्रियंका गुप्ता

40)
भाग्यशाली होते हैं वो, जिनकी बहना होती हैं।
कभी वो सखी, कभी माँ, तो कभी संतान होती है।
हो जाता है जीवन में,जब कभी अंधकार घना।
तब मेरी बहना,एक रौशन चिराग होती है।
©सुधा बसोर

Ewa Zindagi

क़लम

आधार रचना
शांत, चित्त और अविरल क्रम।
जन हित हेतु, तोड़ती भ्रम।
मसि नहीं, यह रक्त रसी है।
प्रबल, प्रचंड, विरक्त असि है।
©मुक्ता शर्मा त्रिपाठी

1)
ए क़लम मेरी! तू तेज़ धार हो जा, सत्य लिख, आवाज़ उठा।
बुराइयों के लिए बग़ावत कर, क्रांति का नव आगाज उठा।
© अनामिका वैश्य आईना

2)
कलम दुनिया का, सबसे बड़ा हथियार है।
इसके आगे सब लाचार हैं।
कलम तू! ऐसे चल, देश में क्रांति लें आ।
हर देशवासी में देशभक्ति का, जोश जगा।
© अनीता शर्मा

3)
पिरो देती है जो, सारे जज्बातों को पन्नों पे। अपूर्वा श्रीवास्तव
कदम बड़ा सिखा देती स्याही से, लिखकर एहसासों पे।
विद्या से लक्ष्य तक ले जाती है, मेरी कलम।
आदर सम्मान से रिश्ते की कीमत बताती है, मेरी कलम।
© अपूर्वा श्रीवास्तव

4)
भावनाओं के वेग को, देती विस्तृत संसार है।
ना हो ये तो समझो, विश्व में अंधकार ही अंधकार है।
कलम हैं, शब्दों की ज्वाला, इसकी तीखी सी धार है।
जिसको काटे वो बचे ना फिर, ये ऐसी तलवार है।
© आरती राठौर

5)
हँसी और गम सबको सजाती हैं,
मुझ टूटे को एक कलम पन्नों पर जोड़ जाती हैं।
©आवारा बादल (प्रियंका)

6)
तीखी हो जो, कलम की ताकत, सत्ता पलटे।
कलम चाहे, मरहम लगा दे, जख्म भरे।
© अमरप्रीत देहड़

7)
मैं अनपढ़ हूँ, गवार हूँ, लिखती कलम से अपनी, मैं बार बार हूँ।
कुछ लोग बताते हैं, गलत मुझे, क्योंकि उनके गलत कामों पर करती,
मैं कलम अपनी से वार, मैं बार-बार हूँ।
हाँ! मैं अनपढ़ हूँ, गवार हूँ।
© बलविंदर कौर 'बल'

8)
बौखला गए है, वो मेरी कलम कि ताकत देख कर।
जो भ्रम पाल कर बैठे थे, मुझे कुछ आता नहीं।
ये कलम ही तो है, जिस पर किसी का जोर चलता नहीं।
लिख देती है, ये सब कुछ, जो जुबान कह सकती नहीं।
© भावना कुमारी

9)
कलम ही आखिरी, प्यार हुई।
मेरे लिए तो, त्यौहार हुई।
मुस्कुराकर मिलती हूं अक्सर सबसे,
कलम तो जैसे, व्यवहार हुई।
© दिव्य श्वेत

10)
जाने इस कलम में, कितने जज्बात छुपे होते हैं।
जो कह नहीं पाते जुबाँ से, वो अल्फाज छुपे होते हैं।
खुशी में अगर लिखे तो, लफ्ज़ भी मुस्कुरा जाते हैं।
वाह री कलम! इस तरह हम तो, तेरे दीवाने बन जाते हैं।
© एकता शर्मा

11)
एक वक्त था जब वो हाँ में हाँ भरा करती थी।
उसकी कलम मेरे लिए कुछ न कुछ लिखा करती थी।
आज भी उन ख़तों से लाजवाब महक आती है।
मानो वो कलम में फूलों की स्याही भरा करती थी।
© हर्ष भट्टी

12)
यह कलम नहीं झुकी है।
आगे ही बढ़ेगी, कभी न झुकेगी।
वीरों की गाथा लिखेगी,
दुश्मन का सिर कलम करेगी।
© होशियार सिंह यादव

13)
शांत चित्त से चले निरंतर, करती काम महान है।
दिखने में ये भले ही छोटी, मगर बदल सकती ये जहान है।
इसलिए तो संसार में, केवल कलम ही महान है।
© ज्योति शर्मा

14)
कलम! तूने अनमोल शक्ति पाई।
तू है तो, सामने आ जाती सच्चाई।
छोटा सा कद लिए, तू है बहुत बड़ी,
लेकर तेरा सहारा, प्रगति भी है खड़ी।
© ज्योति चंद्रा 'ज्योत्सना'

15)
हो निर्विकार, हो अनासक्त।
भावों को करती, सदा व्यक्त।
हे कलम! तुम्हें मेरा प्रणाम,
तुम हो अकाट्य, तुम हो सशक्त।
© मंजूषा श्रीवास्तव,'मृदुल'

16)
कलम मेरी जुबाँ से जब, मधुर आवाज करती है,
बनाकर शब्द की माला, सदा परवाज भरती है,
सुबह से शाम तक इसने , सिखाया ढंग लिखने का,
लिखे जो राज गीतों में , उन्हें हमराज करती है।
डॉ महेंद्र शर्मा मधुकर

17)
एक बार ये कलम, उठाकर तो देखिए।
धुंधली ही सही, इक तस्वीर बन ही जाएगी।
कभी बनेगी कोई हसीन कविता, तो कभी,
रूह तक उतरने वाली शायरी, बन ही जाएगी।
©नीलम सिंह

18)
चले ऐसी शक्ति ले कलम।
तोड़े हैं, कितनों के, झूठे भ्रम।
तलवारें-तोपें भी हैं, हारी।
जब-जब लड़ी इसने है, जंग।
© डॉ. निशीथ चन्द्र

19)
हे कलम! तूँ लिख नया, जिससे कि कुछ बदलाव आए।
गीत फूटे क्रांति के मग में, जरा ठहराव आए।
दीन-दुखियों के अश्रुओं से, आज गीली है धरा।
गीत लिख ऐसे कि उनकी जिंदगी में, चढ़ाव आए।
© फूलचंद्र विश्वकर्मा

20)
कलम इक दीप है,
सच को ज्योतिर्मय कर जाने का।
इक ज़रिया है, दिल के सोए भावों को,
नवजीवन दे जाने का।
©पूजा शर्मा

21)
ज़्ज़बातों को खूबसूरत साज देती है, मेरी कलम।
हर दुख तकलीफ में साथी होती है, मेरी कलम।
भटकते समाज को कलम ही राह देती है।
शब्दों के माध्यम से, विचारों को अभिव्यक्त कर देती है।
©रश्मि शर्मा (पूजा)

22)
रख दी कलम, मैंने परे।
बंद कर दिया, दवात का ढक्कन।
क्योंकि, मुझे दुनिया नहीं जीनी थी।
दुनिया नहीं लिखनी थी।
© परीक्षित

23)
कलम शक्ति कि मत कम आँको, तख्त पलट ये देती है।
क्रांति ज्वाला इसकी समाज को, अपने में भर लेती है।
मात्र खिलौना कलम न समझें, स्याही को छिटकाने का।
लिखी इबारत इसकी मन में, नाव भाव की खेती है।
© प्रिया गुप्ता

24)
किस-किस जख्म पर, मरहम रखती है, ये कलम।
जब चलती है तो, तीर सा वार करती है, ये कलम।
इंसान के किरदार को, बखूबी बयाँ करती, कलम।
अतीत, वर्तमान, भविष्य भी, बयाँ करती है, कलम।
© राधा शैलेन्द्र

25)
जब भी मुझे दर्द का आगाज़ हुआ।
उसे सहना जब समझ के उस पार हुआ।
फिर कलम ने पन्नों पर हाले दिल बयां किया।
इसी प्यारी कलम ने मन का बोझ हलका कर लिखने को प्रेरित किया।
© रजनी शर्मा

26)
भावनाओं के रूप में, फैलाती काग़ज़ों पर इत्र।
कभी सिर्फ़ काली-सफ़ेद, कभी एक रंगीन चित्र।
सिर्फ़ मनोबल बढ़ाती, और बनाती कलमकार मित्र।
© रुचि गौतम पंत

27)
इक कलम कोरे कागज पर, यूं बिखर जाती है।
न चाह कर भी वो, सब कुछ बयां कर जाती है।
सच्ची दोस्ती करनी ही है, तो फिर इस कलम से करो।
जो सुख तो सुख पर सबसे अहम, ये दुःख में भी साथ निभा जाती है।।
©सुरभी शर्मा

28)
बहुत पैनी धार इसकी, यह ऐसा हथियार है।
जोर से लगती बहुत, मार इसकी दमदार है।
भावनाओं में डूबकर कहती, मन का गुबार है।
चरित्र उजागर करती सबका, ये कर्णधार है।
© सविन राव

29)
कलम रेंगती हुई, दिल के हर कोनों में, पलट देती अतीत के पन्नों क़ो।
बनाकर शब्दों का ताना बाना, अंतर्मन की हर आहट को उतारती।
कोरे पन्नों पर खोल देती, वो सारे राज।
© स्मिता धिरासरिया

30)
छोटी सी होती कलम, पर!
होती बड़ी बलवान है।
शब्दों की ताकत से, अपनी।
बदल देती, सारा हिन्दुस्तान है।
©सुधा बसोर

31)
कलम की स्याही से मैंने, कुछ जज्बात लिख डाले हैं।
कुछ पूरे हुए, कुछ अधूरे, ख्वाब लिख डाले हैं।
रिश्तों के बनते-बिगड़ते, अहसास लिख डाले हैं।
कुछ जिन्दगी के खूबसूरत, आगाज़ लिख डाले हैं।
© स्वाति गुप्ता

32)
कलम में ऐसी ताकत है, जो कभी
ज़ुबां भी बयां नहीं, कर पाती है।
दिल की गहराइयों को
शब्दों में निखार जाती है।
©श्रुति शर्मा त्रिपाठी

33)
कोरे कागज़ पर छलकाती है, कुछ अरमान।
कर जाती है कुछ अनछुए से पल, यूँ ही बयान।
केवल कलम ही शेष है, अब जीवन में,
जो रखती है, मेरी भावनाओं का मान।
© तनु गुप्ता जैन

34)
कलम! तुम लिखती हो, कितना सुंदर।
कविता को जन्म देकर मोह लेती अंतर।
जन-जन की पीड़ा, हर्ष समाया तेरे अंदर।
बहाती भावों की नित गंगा, हो झर-झर।।
© तिलक तुषार

35)
लिए हाथ में, पहली कलम।
जब चित्र बनाऐ थे, ऊट-पटांग।
तब भी कुछ रचा था इसने,
ज्यों इक छोटा सा, संसार।
© उषा मल्होत्रा

36)
ये कलम मेरी हृदय के, सभी उद्गार लिखती है।
कभी खुशी, गम तो कभी, गुबार लिखती है।
कभी विरह वेदना, कभी मिलन-श्रृंगार लिखती है।
कलम स्याही संग उकेर सफ़े पर, मेरे जज़्बात लिखती है।
© उषा शर्मा

37)
क़लम की धार से, सिंहासन तक डोल जाता है।
सच्चे लेखक की लेखनी से, समाज का उद्धार होता है।
क़लम वो हो जो सच्चाई तो, बयान करे।
पर किसी की भावनाओं पर, ना निजी प्रहार करे।
© वीना मेहता

Ewa Zindagi

संजीवनी
(Ewa Health Basket)

प्रतीक प्रभाकर

Moderator In-charge

नमस्कार/ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ/आदाब/Hello दोस्तों,

एक स्वस्थ काया ही एक स्वस्थ जीवन का आधार है। हम आर्थिक व सामाजिक रूप से चाहे जितने शशक्त हो जाएं पर जब तक हम स्वस्थ नहीं है तबतक हम जीवन का संपूर्ण रसास्वादन नहीं कर सकते। वस्तुतः हम स्वास्थ को मात्र शरीर से जोड़ते हैं परंतु वास्तव में एक स्वस्थ मन भी उतना ही या उससे कुछ अधिक महत्वपूर्ण है।

Ewa Zindagi आपके जीवन में अच्छे स्वास्थ्य का महत्व समझता है और इस दशा में कदम बढ़ाते हुए हमनें "संजीवनी" #EwaHealthBasket शुरू किया है।

हर सप्ताह आपको इसमे स्वास्थ्य संबंधित लेख पढ़ने को मिलेंगे।

साथ ही इस विषय पर आप अपने मौलिक लेख भेजना चाहे तो हमे उन्हें आपके नाम के साथ संजीवनी में प्रेषित करने में ख़ुशी मिलेगी।

आप अपने लेख हमें ewazindagi@gmail.com पर भेज सकते हैं, लेख हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषा में स्वीकार्य होंगे। लेख के साथ #संजीवनी या #EwaHealthBasket ज़रूर लिखें।

तो आइए हम जानते हैं-

Fundas or Tips for healthy skin

©प्रतीक प्रभाकर

*Skin is the covering of our body. It is the largest organ of human body. Everyone wants to keep it healthy and glowing. Let's talk about the helpful points regarding health of skin:-

*Important habits for healthy skin:-

1)Wash your face twice a day.

2) Over-washing and under-washing can cause trouble for your skin.

3) Eat a balanced and healthy diet.

4) Get skin clean after a workout by taking shower.

5) Use an oil-free moisturizer.

6) Don't skip the sunscreen when going outdoors.

*Vitamins useful for skin:-

Vitamin D, Vitamin C and Vitamin E are helpful in maintaining good health of your skin. So take the food items which are enriched in these vitamins.

*Food for healthy skin :-

1)Omega 3- Flax Seed, Fatty fish, such as salmon are excellent foods for healthy skin.

2) Avocados- Avocados are high in healthy fats.

3) Walnuts- Walnuts have many characteristics that make them an excellent food for healthy skin.

4) Sunflower seeds

5) Sweet potatoes

6) Red or yellow bell peppers

7) Broccoli

8)Tomatoes and Lemon

9) Red gram

*What one should avoid:-

1) High sugar and processed dairy products especially white sugar, white flour, etc.

2) Foods with antibiotics

✍Pratik Prabhakar

Credit:-davidsons internal medicine

Pic credit -google

Ewa Zindagi

Ways to Relieve Stress and Anxiety

1) Exercise:-

Regular exercise can help lower stress and anxiety by releasing endorphins and improving your sleep and self-image.

2)Supplements:-

Certain supplements can reduce stress and anxiety, including ashwagandha, omega-3 fatty acids, green tea and lemon balm.

3) Light a candle:-

Aromatherapy can help lower anxiety and stress. Light a candle or use essential oils to benefit from calming scents.

4) Reduce coffee intake:-

High quantities of caffeine can increase stress and anxiety. However, people's sensitivity to caffeine can vary greatly.

5) Write it down:-

Keeping a journal can help relieve stress and anxiety, especially if you focus on the positive.

6) Chew gum:-

According to several studies, chewing gum may help you relax. It may also promote wellbeing and reduce stress.

7) Family and friends:-

Having strong social ties may help you get through stressful times and lower your risk of anxiety.

8) Laugh:-

Find the humor in everyday life, spend time with funny friends or watch a comedy show to help relieve stress.

9) Learn to say no:-

Try not to take on more than you can handle. Saying no is one way to control your stressors

10) Avoid procarnation:-

Prioritize what needs to get done and make time for it. Staying on top of your to-do list can help ward off procrastination-related stress.

✍Written by Kerri-Ann Jennings, MS, RD on August 28, 2018

For healthline

Compiled by -
Pratik Prabhakar ,
Prompt Incharge
Ewa Health Basket

Ewa Zindagi

जरूरी है उत्तम स्वास्थ्य

मंजुषा श्रीवास्तव"मृदुल"

उत्तम स्वास्थ्य जिंदगी का सबसे बड़ा उपहार है | स्वस्थ शरीर और मानसिक स्वास्थ्य उत्तम हो उसके लिए मानव को सदैव जागरूक रहना चाहिए | अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ वक्त प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए निकालना चाहिए जिससे वह अपने लिए अपने शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिए कुछ कर सके | उत्तम स्वास्थ्य के लिए-
हृदय और मस्तिष्क को सदैव सकारात्मक सोच ऊर्जा और प्रसन्नता से भरा रखना चाहिए, तभी व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ होगा, और चित्त स्थिर तथा शांत रहेगा |
नकारात्मक विचारों को भूले से भी दिल और दिमाग में प्रवेश नहीं करने देना चाहिए | क्यों कि यह सदा मनोबल को कम करता है | उत्तम स्वास्थ्य के लिए यही श्रेयस्कर है |

जब दिमाग शांत चित्र, प्रसन्न होगा व्यक्ति में ऊर्जा का संचार बना रहेगा |
व्यक्ति में इसके साथ-साथ दिनचर्या का नियमित होना बहुत जरूरी है | नियम और संयम का होना उत्तम स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है | समय से सोना, समय से जागना, समय से भोजन करना अति आवश्यक है,इसका मनुष्य को सदैव ध्यान रखना चाहिए |
नियमित प्राणायाम और योग का दिनचर्या में उचित स्थान अवश्य होना चाहिए | व्यक्ति छोटी-छोटी बातों से तनावग्रस्त हो जाता है और स्वयं बीमारी को निमंत्रण दे देता है |
तनाव लेने से समस्याएं बढ़ती हैं ; दूर नहीं होती उसे हल करने के लिए अपनी आत्म ऊर्जा को प्रयोग में लाना चाहिए | लोग कार्य की भागा-दौड़ी में कभी-कभी नाश्ता छोड़ कर चले जाते हैं ,तो कभी भोजन बेवक्त करते हैं | आहार ले लेना ही काफी नहीं है, आवश्यक है आहार का उचित समय में लिया जाना | वक्त - बेवक्त आहार लेने का परिणाम पाचन शक्ति को कंट्रोल करने वाला तंत्र अपनी उर्जा, अपनी क्षमता को कम करने लगता है ; फल रूप हम पेट के मरीज बनते जाते हैं और वायु कफ़, पित्त के शिकार होने लगते हैं | कहने में यह तीन शब्द बहुत ही छोटे हैं, पर समस्त विकारों की जड़ यही होते हैं |

अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित व्यायाम संजीवनी का काम करता है | इसलिए कुछ वक्त हर मनुष्य को अपने लिए निकालना आवश्यक है | स्वस्थ मानव ही स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज और समुन्नत देश का विकास कर सकता है |
प्रातः भ्रमण और योग को अपने खुशहाल जीवन का मूल मंत्र बनाकर व्यक्ति उत्तम जीवन जीने योग्य बनजाता है |

गुनगुना पानी प्रातः और रात्रि को अवश्य लेना चाहिए ऐसा करने से बहुत सी समस्याओं का निदान स्वयं ही हो जाता है स्वच्छता भी स्वास्थ्य के लिए बहुत अहम भूमिका निभाती है | स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बहुत हद तक बनाए रखना व्यक्ति के अपने हाथ में होता है | बस आवश्यकता है निम्न बिंदुओं पर ध्यान देने की ,जैसे–

1- अपने स्वाद कलिकाओं पर अंकुश रखना
2–संतुलित भोजन करना
3–नियमित व्यायाम प्राणायाम और सैर करना
4–नियमित दिनचर्या अपनाना
5–शरीर को साफ सुथरा रखना
6–आसपास के वातावरण को साफ रखना 7–उत्तम संतुलित आहार का सेवन
8–रात्रि की पूरी नींद अर्थात 6 से 7 घंटे तक सोना
9–प्रातः सैया त्याग के उपरांत तीन से चार गिलास पानी का सेवन
10–रात्रि को सोने से पहले 1 गिलास गुनगुने पानी का सेवन
11– पूरे दिन में 8 से 10 गिलास पानी का सेवन
12–उत्तम और सकारात्मक सोंच

उपरोक्त जीवन शैली स्वस्थ शरीर के निर्माण में सहायक होती है यह हमारे ऊर्जा के स्तर को बढ़ाती है | आत्मविश्वास को बढ़ाती है | रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करती है ,फलस्वरूप हम कम बीमार पड़ते हैं |

उत्तम स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है | शरीर और मन दोनों का अच्छा होना जीवन में सफलता प्राप्त करने और आनंद से जीवन जीने में सहायक सिद्ध होता है | स्वस्थ शरीर की शारीरिक क्षमता आत्मविश्वास बढ़ाती है और परेशानियों से उबारने में सहायक सिद्ध होती है, इसलिए उत्तम स्वास्थ्य को प्राप्त करने के हर पहलू पर हमें अवश्य ध्यान देना चाहिए |

✍ मंजुषा श्रीवास्तव"मृदुल"
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

काव्य सृजन
(Ewa Poetic Creation)

उषा शर्मा

Moderator In-charge

भारत

©राधा शैलेन्द्र

भारत,मेरा प्यार भारत
विश्व के मानचित्र में
अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिये हीरे सा
चमकता भारत!
भारत,हिन्द,हिंदुस्तान या आर्यावर्त
किसी भी नाम से पुकारिये
अपनी विशेषता से सबसे अलग दिखता मेराभारत!
रंग होली का है जश्न ईद का भी
मोमबत्तियां क्रिसमस की
तो मेला बैशाखी का
सारे रंग खुद में समेटे
मेरा मुस्कराता भारत!

मेहमान हो या दुश्मन
सबको अभिवादन करता मेरा भारत!
प्यार की संस्कार की अदभुत शिक्षा
सारे विश्व को देता मेरा भारत!
गंगा-यमुना संस्कृति है हिमालय इसकी पहचान
मेरा भारत,हमारा भारत
नतमस्तक हम इसके आगे
तिरंगे से है पहचान हमारी
हम इसके ये हैं हमारा।।

©रागिनी अग्रवाल

दिला दो मुझे पिचकारी माँ!छोड़े जो तिरंगी धार
सफ़ेद हरा और केसरिया की कर दूँगा बौछार

दिवाली पे मैया मेरी, तुम रॉकेट एक दिला देना
चेता दूँगा मैं दुश्मन को, हल्के में हमें नहीं लेना

बाँसुरी मुझे दिला दो माँ ! तो सुर ऐसा निकालूँ मैं
बजाकर जन गण मन की धुन,दुनिया को नचा दूँ मैं

साइकिल में मेरी मैया,हो पहिया चौबीस तिल्ली का
देख जिसे पहचान ले दुनिया ,बच्चा हूँ मैं दिल्ली का

तुम कहो तो आसमां में ,केसरिया पतंग उड़ा दूँ मैं
चहुँ ओर तुम्हारी आज्ञा से,भगवा परचम लहरा दूँ मैं

धरती से इस अम्बर तक मुझे तीन ही रंग नज़र आएं
ख्वाहिश दिल की इतनी है ,सारा जग भारत हो जाये

©निशि अग्रवाल

पुरा सभ्यता की सुदृढ़ नींव पर नया कलेवर पाया है ।
वीर भरत के नाम पर जिसने 'भारत' नाम ये पाया है ।
सदियों गुलामी की पीडा़ सह,परचम अपना फहराया है।
इसकी आजादी की खातिर,कितने वीरों ने रक्त बहाया है।
वीर सपूतों की ये जननी,भारत हमारी माता है ।
इसकी गोद में पले-बढ़े हम,हममें माँ बच्चों का नाता है ।
इसी भूमि पर श्रीराम प्रभु ने रामराज्य बसाया था ।
श्रीकृष्ण ने इसी धरा पर,गीता का ग्यान सुनाया था।
सभी राज्यों,जाति,धर्मों का होता है सम्मान यहाँ ।
साहित्य,संगीत,कला का,है अतुलित भंडार यहाँ ।
ऋषि -मुनि यहाँ ध्यान लगाते,गुरू सत्संग सुनाते हैं ।
सभी वेद शास्त्र व चारों धाम भारत की महिमा गाते हैं।
वसुधैव कुटुम्बकम् का जहाँ पर लगता नारा है।
भारतवर्ष हमारा है, वह हिन्दुस्तान हमारा है ।।

©रीटा चुघ

भारत का अभिमान

सपूत है भारत का
देश का अभिमान है
खड़ा रहे अडिग
वो सैनिक भारत की शान है

मौन धार कर
खड़ा धरा पर
निडर सी उसकी चाल है
देश का सिपाही है वो
मुख पर तेज़ महान है

अंतर्द्वंद्व चलता है मन में
फिर भी चेहरे पर मुस्कान है
समय की धारा कहाँ ले जाए
मन में उमड़ता यही सवाल है

शांती की मिसाल देने वाला
वीर माँ- बाप का बेटा है
मुस्कराकर दुःख झेलना
हमने उससे सीखा है

उसके जीवन का लक्ष्य
इक ये कर्तव्य महान है
कभी न झुकना
कभी न रुकना
देता सभी को ये ज्ञान है

रहते हो तुम सबके दिलों में
कितना गौरवमान है।
भारत के सपूत
तुम्हें शत-शत प्रणाम है।

©रमेश चंद्र शर्मा

भारत देश हमारा है !
प्यारा देश हमारा है !... भारत
हिमालय इसकी शोभा है,
देवालय इसकी आभा है ,
नदियां कलकल बहती है,
वैदिक ऋचाएं कहती है ,
जन कल्याण हेतु अनवरत
बहती गंगा की धारा है !... भारत
माटी इसकी पावन है ,

मौसम भी मनभावन हैं,
जय जवान का नारा है ,
जय किसान का धारा है,
दीन दुखी व्यथित जनों का
अनुपम एक सहारा है !... भारत
तिरंगा हमारी शान है ,
आजादी अभिमान है,
सीमा पर वीर खड़े हैं ,
शत्रु पर भारी पड़े हैं ,
असंख्य शहीदों को समर्पित
संविधान सर्वोच्च न्यारा है !... भारत

फूल

©निशि अग्रवाल

हरदम हँसते मुस्काते
कितने प्यारे लगते फूल।
हिलमिल कर सब संग में रहते
भाँति भाँति के सुन्दर फूल।।
कभी नहीं ये शिकवा करते
कभी न शोर मचाते फूल।

औरों के हित जीकर के
डाली से झङ जाते फूल।।
छोटे से अपने जीवन में
जीने की मौज मनाते फूल।
स्वार्थ लिप्त दुखी मानव को
जीवन का पाठ पढा़ते फूल।।
तितली संग ये बतियाते हैं
मन्द पवन संग इठलाते।
कीट पतंगों और भँवरोंको
निज मधु का पान कराते फूल।।
पाने की कुछ चाह नहीं है
देना ही है इनका उसूल।
मसलने वाले हाथों को भी
खुशबू से महकाते फूल।।
नहीं चाहिए सुख का बिस्तर
काँटों पर सो जाते फूल ।
सुन्दरता की चाह नहीं है
कीचड़ में खिल जाते फूल ।।
चाहे खुशी हो चाहे गमी हो
अपना फर्ज निभाते फूल।
वीरो के शव पर चढ़कर,
माटी का कर्ज चुकाते फूल।
पूजा, प्रेम ,श्रृंगार सभी में
बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते फूल।
त्याग क्षमा और परोपकार का
हैं जीवन्त उदाहरण फूल।।

©फूल चंद्र विश्वकर्मा

एक फूल खिला मेरे आँगन।
जिससे महका सारा जीवन।।
बनकर आया मन की पुकार।
मौसम भी हो गया खुशगवार।।

आकर्षण में उसके बंधकर।
अपने बजूद पर हरसाकर।।
बोला मुझको मत लेना तोड़।
जाऊँ न कहीं आँगन को छोड़।।

इस आँगन से अस्तित्व मेरा।
इससे पाया जीवन सारा।।
इसमें ही मैं मुसकाऊंगा।
इसमें ही मैं झड़ जाऊँगा।।

फिर नए रूप में आऊँगा।
फिर से इसको महकाऊंगा।।

©सुनीता जायसवाल

तोड़ लिए जाने पर भी ,
उसके जड़ -आधार से ,
फूल निभाता है किरदार अपना,
तन्मयता और प्यार से !

रूठी प्रेयसी के अधरों पर ,
लाता है मुस्कान, मनुहार से,
बिछ जाता है राहों में खुशी से ,
किसी के स्वागत सत्कार में !

तोड़ लिए जाने.....

कभी देवताओं के चरण में ,
चढ़ जाता है अधिकार से,
वर वधु के नव जीवन को ,
महकाता आशीषो के हार से !

तोड़ लिए जाने.....

जन्म भर साथ देकर अंत में ,
मृत्यु शैया पर बिछ जाता शोकाकार से,
कभी शहीद के तिरंगे पर गिर ,
इठलाता अभिमान से !

तोड़ लिए जाने पर भी ,

उसके जड -आधार से ,

फूल निभाता है किरदार अपने ,

तन्मयता और प्यार से!

Ewa Zindagi

सफ़रनामा
(Ewa Travel Diaries)

पूजा शर्मा

Moderator In-charge

नमस्कार/ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ/आदाब/Hello दोस्तों,

कृपया हमारे Facebook Page को LIKE करें ताकि कोई भी महत्वपूर्ण सूचना, प्रतियोगिता की जानकारी से आप वंचित न रह जाएं

www.facebook.com/ewazindagi

Instagram पर भी आप जुड़ सकते हैं

www.instagram.com/ewazindagi

संस्कृत मे ''पर्यटन'' का अर्थ आराम के लिए और ज्ञान पाने के लिए यात्रा करने के उद्देश्य से अपने निवास स्थान को छोड़ना है। अर्थात् पर्यटन न सिर्फ हमें यादगार अनुभूति करता है बल्कि यह किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हम दैनिक आपाधापी कुछ समय के लिए दूर होकर सिर्फ़ स्वयं के लिए जी पाते हैं । नए अनुभव प्राप्त करके हम अपना बौद्धिक दायरा भी बढ़ाते हैं।

Ewa Zindagi आपके जीवन की यात्राओं, स्थानों और संस्मरणों के खट्टे मीठे अनुभवों को आपको फिर से जी लेने व दूसरों के अनुभवों को पढ़ने का सुनहरा मौका देता है अपने travel blog "सफ़रनामा" EwaTravelDiaries द्वारा।

हर सप्ताह आपको इसमे पर्यटन/यात्रा से संबंधित लेख पढ़ने को मिलेंगे।

साथ ही इस विषय पर आप अपने मौलिक लेख भेजना चाहे तो हमे उन्हें आपके नाम के साथ सफ़रनामा में Facebook, Instagram, Twitter, आदि पर प्रेषित करने में ख़ुशी मिलेगी।

अपने लेख हमें ewazindagi@gmail.com पर भेज सकते हैं, भेजने के बाद हमारे Facebook page के message box में सूचित करें। लेख हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषा में स्वीकार्य होंगे। लेख के साथ सफ़रनामा या EwaTravelDiaries ज़रूर लिखें।

तो आइए खो जाते है हम एक यादगार, अनोखे सफ़र में

मानसर झील

©पूजा शर्मा

जम्मू कश्मीर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है! यहाँ पर कई दर्शनीय स्थल हैं! जिनके मनोरम दृश्य किसी का भी मनमोहने में समर्थ हैं! इन्हीं दर्शनीय स्थलों में से एक है मानसर झील!

मानसर का मार्ग

मानसर जम्मू कश्मीर के ऊधमपुर जिले में स्थित है! जम्मू शहर से इसकी दूरी लगभग ६२ कि. मी. है! जम्मू से मानसर तक का सड़क मार्ग बहुत ही मनोरम दृश्यों से भरा है! ऊँचे पहाड़ और पहाड़ों से गिरते झरने बहुत ही सुंदर तथा मनभावन लगते हैं! सांबा से मानसर का एक और छोटा मार्ग भी है जो जम्मू शहर के बाहर से निकलता है!

मानसर पहुँचते ही सबसे पहले जो चीज़ हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है, वह है मानसर झील! यह झील काफी बड़ी है! इसकी लंबाई लगभग १२०० मी.तथा इसकी चौड़ाई लगभग ६४५ मी. है! चारों ओर से जंगलों से ढके पहाड़ों से घिरी यह झील सभी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है!

मानसर झील का ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्व

मानसर झील ऐतिहासिक तथा धार्मिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है! कहा जाता है कि यह झील महाभारत के समय की है!

किवदंतियों के अनुसार महाभारत काल में अर्जुन तथा उलूपी का पुत्र बभ्रुवाहन इस क्षेत्र का शासक था! युद्ध समाप्त होने पर पांडवों ने जब अश्वमेध यज्ञ किया तो वह अश्व जब इस क्षेत्र में पहुँचा तो बभ्रुवाहन ने उसे पकड़ कर युद्ध की चुनौती स्वीकार करते हुए अर्जुन से युद्ध किया और उसका वध कर दिया!

युद्ध के उपरांत जब उसने यह समाचार अपनी माँ को सुनाया तब उसे यह ज्ञात हुआ कि उसने भूल वश अपने पिता का ही वध कर दिया है ! अर्जुन को पुनः जीवित करने के लिए उसे शेषनाग की मणि चाहिए थी! अत: उसने मणि प्राप्त करने के लिए जब बाण चलाया तो यहाँ एक सुरंग बन गई! उस सुरंग का एक छोर यह मानसर झील है और दूसरा छोर है सुरिंसर झील जो कि मानसर झील से कुछ ही दूरी पर स्थित है (आपको इस झील की सैर पर भी अवश्य ले चलेंगें कभी)!

धार्मिक दृष्टि की बात करें तो यह झील मानसरोवर यात्रा के लिए भी पवित्रता तथा शुद्धता का प्रतिबिंब है! यहाँ पर कई श्रद्धालु स्नान करने आते हैं और यहाँ डुबकी लगाकर वह स्वयं को पवित्र मानते हैं! कई लोग यहाँ अपने बच्चों के मुण्डन संस्कार भी करते हैं!

मानसर के मंदिर:

शेषनाग मंदिर

मानसर झील के पूर्वी तट पर स्थित यह मंदिर भगवान शेषनाग जी का है! शेषनाग वह नाग हैं जो भगवान विष्णु की शेष शैय्या बनाते हैं!पुराणों के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलराम तथा भगवान श्रीराम के अनुज लक्ष्मण भगवान शेषनाग का ही अवतार हैं! इस मंदिर में भगवान शेषनाग एक बड़ी सी शिला के रूप में विराजमान हैं! यह कई लोगों के कुलदेवता भी हैं! अत: लोग यहाँ आते जाते रहते हैं!

नवविवाहित जोड़ों का यहाँ माथा टेकना वैवाहिक जीवन के लिए शुभ माना जाता है!

नरसिंह मंदिर

शेषनाग मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित यह मंदिर भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार को समर्पित है!

भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का वध कर भक्त प्रहलाद के प्राणों की रक्षा की थी! इस मंदिर की खास मान्यता है! कहा जाता है यहाँ आकर आप जो भी सच्चे दिल से मांगें वह अवश्य ही मिलता है!

महादेव मंदिर

नरसिंह मंदिर के साथ ही यहाँ एक और मंदिर है जो उमापति महादेव को समर्पित है! कई श्रध्दालु यहाँ आकर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करते हैं तथा इच्छित फल पाते हैं!

दुर्गा मंदिर

कुछ ही दूरी पर यहाँ एक और मंदिर है जो माँ दुर्गा को समर्पित है! यहाँ भी श्रध्दलुओं की अच्छी भीड़ देखने को मिलती है!

झील के किनारे पर आटा बेचने वालों का जमावड़ा रहता है! लोग यहाँ से आटा लेकर मछलियों को खिलाते हैं!

झील की परिक्रमा

मानसर आने पर यदि आपने झील की परिक्रमा नहीं की तो समझ लीजिये आपने मानसर की सैर का आधा ही मज़ा लिया है! चूंकि यह परिक्रमा लंबी है, जो कि लगभग

३.५ कि.मी. की है परंतु इस परिक्रमा का अलग ही मज़ा है! यह परिक्रमा पैदल ही की जाती है!

यहाँ के लोगों का मानना है कि आज भी झील में नाग देवता का वास है इसीलिए झील की परिक्रमा धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है! घूमने के लिहाज से भी झील की परिक्रमा बहुत ही मज़ेदार है! झील की एक ओर मंदिर हैं तो दूसरी ओर बहुत ही मनमोहक बगीचे हैं ! रंग बिरंगे फूलों से सजे यह बगीचे झील की खूबसूरती को चार चाँद लगाते हैं! इन्हीं बगीचों के पास बच्चों के लिए एक पार्क भी बनाई गई है जिसमें भिन्न प्रकार के झूले भी हैं!

खाने पीने की भी यहाँ अच्छी व्यवस्था है! सरकार की ओर से यहाँ जेकेटीडीसी का रेस्टोरेंट भी है और कई निजी रेस्टोरेंट भी हैं जहाँ हर प्रकार का भोजन तथा खाद्य पदार्थ उपलब्ध हैं!

मानसर वन्यजीव अभयारण्य

जब आप झील की परिक्रमा करेंगें तो मानसर वन्यजीव अभयारण्य का नज़ारा भी ले पायेंगें! यहाँ आप कई प्रकार के वन्यजीवों को भी देख सकते हैं जैसे- हिरण, बारहसिंगा, नीलगाय, मोर इत्यादि! नवंबर 2005 से मानसर झील को रामसर कन्वेंशन में भी नामित किया गया है!

झील में नौका विहार

यदि आप शांत वातावरण में, शीतल हवा का आनंद लेते हुए किसी बड़ी सी झील में नौका विहार करना चाहते हैं तो इसके लिए मानसर झील सबसे अच्छा विकल्प है!

यहाँ पर नौका विहार के लिए पैडल बोट्स उपलब्ध हैं! एक बोट में एक बार में चार ही लोग सवारी कर सकते हैं!

झील की अधिकतम गहराई लगभग 38 मी. है! इसीलिए नौका की सवारी करते वक्त लाइफ जैकेट्स पहनना ठीक रहता है!

रहने की व्यवस्था

मानसर में यदि आप रहना चाहते हों तो रहने की भी यहाँ उचित व्यवस्था है! जेकेटीडीसी की तरफ से यहाँ मानसर रिसार्ट नामक रिसार्ट है जहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं! वहीं मानसर में कुछ निजी होटल भी हैं जहाँ आपको ठीक दाम पर अच्छी सुविधाएँ मिल सकती हैं!

सुझाव

वैसे तो मानसर की सैर आप कभी भी कर सकते हैं पर मई - जून महीने में तापमान अधिक होने से यहाँ गर्मी हो सकती है ! झील की सैर करने का उचित समय है सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक! झील की सैर करने के लिए यहाँ प्रवेश निशुल्क है!

विंध्याचल मिर्ज़ापुर के निकट माँ विंध्यवासिनी का पर्वतीय

आवास

विंध्यवासिनी देवी का सीधा साधा सा अर्थ है विंध्य पर्वत पर निवास करने वाली देवी । विंध्याचल पर्वत श्रृंखला भारत के सम्पूर्ण मध्य भाग में फैली हुई है। बिहार जैसे पूर्वी राज्यों से आरंभ होकर यह महाराष्ट्र जैसे दक्षिण-पश्चिम राज्यों तक पहुंचता है। मेरा अनुमान था कि देवी इसी पर्वत श्रृंखला में कहीं निवास करती है। कुछ समय पूर्व मैंने देवी महात्म्य पढ़ा जहाँ देवी के विंध्याचल निवास के विषय में उल्लेख है। मुझे यह तो ज्ञात था कि देवी पर्वत निवासिनी है किन्तु यथार्थतः कहाँ, यह ज्ञात नहीं था।

विंध्याचल की तीन देवियाँ

गूगल में कुछ ढूंढते समय सहसा मुझे उत्तर प्रदेश में वाराणसी के समीप, मिर्ज़ापुर जिले में स्थित विंध्याचल के विंध्यवासिनी मंदिर के विषय में कुछ रोचक साहित्य प्राप्त हुए। मैंने इस मंदिर का नाम तुरंत वाराणसी के आसपास के दर्शनीय स्थलों की सूची में सम्मिलित कर लिया। कुछ समय पूर्व मैं गीता प्रकाशन द्वारा प्रकाशित तीर्थंक का अध्ययन कर रही थी, तब मैंने उसमें विंध्याचल के अनेक मंदिरों के विषय में उल्लेख पढ़ा। उससे मुझे ज्ञात हुआ कि यह एक प्रमुख देवी क्षेत्र है जहां शक्ति के उपासक साधना करते हैं।

ऐसा माना जाता है कि शक्ति पीठों में तो देवी सती के अंग गिरे थे। किन्तु विंध्य में देवी स्वयं पर्वतों में वास करती हैं। विंध्यवासिनी के नाम का उल्लेख महाभारत, पद्म पुराण, मार्कण्डेय पुराण तथा देवी भागवत के साथ साथ कई स्तुतियों में भी किया गया है।

कुछ समय पूर्व मैं अपने वाचकों से देवी के नामों पर आधारित भारत के विभिन्न स्थलों के नामों के विषय में जानकारी एकत्र कर रही थी। तब मुझे मिर्ज़ापुर के विषय में ज्ञात हुआ था।

आगामी यात्रा सम्मेलन के लिए जैसे ही मुझे वाराणसी की यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ, मैंने तुरंत इसे विन्ध्याचल दर्शन के सुअवसर में परिवर्तित करने का निश्चय किया। तो आइए उस क्षेत्र के मंदिरों के दर्शन करें जहां विंध्य पर्वत का गंगा से मिलन होता है।

विंध्याचल के ३ देवी मंदिर

इस क्षेत्र में देवी के तीन मंदिर हैं जो देवी के तीन रूपों को समर्पित हैं। देवी के यह तीन मंदिर एक त्रिकोण में स्थित हैं। अनेक भक्तगण त्रिकोण के तीन कोनों पर स्थित इन तीन मंदिरों की त्रिकोण परिक्रमा भी करते हैं।

माँ विंध्यवासिनी मंदिर

यह मंदिर इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सर्वाधिक लोकप्रिय मंदिर है। मिर्ज़ापुर से विंध्याचल की ओर आते समय, इन तीन मंदिरों में से आप सर्वप्रथम इस मंदिर के द्वार पर पहुंचेंगे। गाड़ी पार्किंग से मंदिर की ओर कुछ दूरी चलकर पूरी करनी पड़ती है। यहाँ चलते हुए आप दोनों ओर रंगबिरंगी दुकानों के बीच से होते हुए आगे बढ़ते हैं। ये दुकानदार देवी को अर्पण करने की सामग्री के साथ साथ मंदिर से संबंधित स्मारिकाओं की भी बिक्री करते हैं। लोग यहाँ से पूजा में उपयोगी छोटे छोटे तांबे एवं पीतल के पात्र इत्यादि अपने घर ले जाते हैं।

इस मंदिर का परिसर छोटा होते हुए भी कई मंदिरों को समाए हुए है। विंध्यवासिनी के मुख्य मंदिर में प्रवेश करने के लिए भक्तों को पंक्ति में खड़ा किया जाता है। दर्शनार्थी यहाँ बड़ी संख्या में आते हैं। मंदिर के अधिकारी एवं सेवक भीड़ को अत्यन्त कुशलता से संचालित करते हैं। भक्तों की पंक्ति बिना अवरोध के आगे बढ़ती जा रही थी। मुख्य मंदिर को देख मुझे ऐसा आभास हुआ मानो यह मंदिर किसी समय गुफा मंदिर रहा होगा।

माँ विंध्यवासिनी के विग्रह अर्थात प्रतिमा को पुष्पहारों द्वारा सज्जित किया गया था। केवल काले पत्थर में निर्मित देवी की प्रतिमा का मुख ही दृष्टिगोचर हो रहा था। उनके मुख पर सुनहरी धातु से बनी चमकीली आँखें भक्तों का ध्यान आकर्षित कर रही थीं। देवी को हृदयपूर्वक निहारने के लिए आपको कुछ क्षण ही मिल पाते हैं जिसके पश्चात आपको मंदिर से बाहर आना पड़ता है ताकि सब लोग दर्शन कर पायें!

इस मंदिर के परिसर में देवी के तीन रूपों को समर्पित तीन मंदिरों का त्रिकोण है। विंध्यवासिनी के एक ओर महा-काली तथा दूसरी ओर महा-सरस्वती का मंदिर है।

महा-सरस्वती मंदिर

इस मंदिर के भीतर महा-सरस्वती के साथ दो शिवलिंग तथा शिव की एक मूर्ति भी है। भित्तियों पर हनुमान, गणेश तथा भैरव की प्रतिमाएं हैं जो किंचित प्राचीन प्रतीत होते हैं। पाषाण की कुछ अन्य प्राचीन प्रतिमाएं भी हैं जिन्हें देख यह एक प्राचीन मंदिर प्रतीत होता है। मंदिर की संरचना प्राचीन है। यहाँ कई स्तंभ हैं जिन्हे जोड़ते कोष्ठकों पर संगीत वाद्य बजाते गंधर्व उत्कीर्णित हैं। चटक रंगों से रंगे ये स्तंभ एक साधारण मंदिर को असाधारण रूप प्रदान करते हैं!

विंध्यवासिनी मंदिर के पास गंगा घाट

मंदिर गंगा के अत्यन्त समीप स्थित है। मंदिर के भीतर आपको यह आभास नहीं होता कि आप गंगा के अत्यन्त निकट हैं क्योंकि मंदिर ऊंचाई पर स्थित है। मंदिर से एक संकरा मार्ग गंगा की ओर जाता है। इस मार्ग के दोनों ओर भी कई दुकानें हैं जहां पूजा सामग्री के साथ स्मारिकाओं की भी बिक्री की जाती है। भक्तगण गंगा में पवित्र स्नान करते हैं। समीप ही कई नौकाएं थीं किन्तु मैंने किसी को नौका सवारी करते नहीं देखा। मानसून के कारण चढ़ा हुआ जल स्तर इसका कारण हो सकता है।

अष्टभुजा मंदिर

विंध्याचल स्थित तीन मंदिरों के त्रिदेव में विंध्यवासिनी के पश्चात यह दूसरा मंदिर है। अष्टभुजा का अर्थ है आठ भुजायें युक्त देवी। यह माँ सरस्वती का एक रूप है। देवी माहात्म्य में महा सरस्वती को आठ भुजायें युक्त दर्शाया गया है।

अष्टभुजा वह कन्या है जिसे गोकुल के नन्द तथा यशोदा ने जन्म दिया था। जन्म पश्चात इन्हे कृष्ण से बदल दिया गया था। अर्थात कृष्ण के स्थान पर वासुदेव इस नन्ही बालिका को देवकी के पास ले गए थे। देवी स्वरूप इस नन्ही बालिका ने कंस के अंत की आकाशवाणी की तथा अन्तर्धान हो गई। ऐसा माना जाता है कि वहाँ से देवी विंध्याचल पर्वत आयीं तथा उन्होंने यहाँ निवास करने का निश्चय किया। इसी कारण उन्हे नंदा तथा योगमाया भी कहा जाता है।

विन्ध्याचल का अष्टभुजा मंदिर

देवी का मंदिर पर्वत के दो तहों के मध्य घाटी में स्थित है। यदि आप पैदल आ रहे हैं तो मंदिर पहुँचने के लिए आपको एक पहाड़ी चढ़कर लगभग २०० सीढ़ियाँ उतरने की आवश्यकता है। यदि आप गाड़ी से आ रहे हैं, जैसे कि मैं पहुंची थी, आप पहाड़ी के ऊपर तक गाड़ी से जा सकते हैं। २०० सीढ़ियाँ तो आपको तब भी उतरनी और फिर चढ़नी पड़ेगीं!

छोटे मंदिर एवं यज्ञशाला

लाल रंग के इस अष्टभुजा मंदिर परिसर में कई छोटे मंदिर एवं एक यज्ञशाला है। आप जैसे ही गर्भगृह की ओर बढ़ेंगे, आप कई छोटे एवं प्राचीन शिवलिंग उनके नंदियों के संग देखेंगे। वहाँ कई प्राचीन मूर्तियाँ हैं जो मेरे अनुमान से देवी की हैं। उन्हें निहारने के लिए कुछ क्षण ही प्राप्त होते हैं। इस कुछ क्षणों में आप अनुमान नहीं लगा सकते कि ये मूर्तियाँ वास्तव में किस की हैं। छायाचित्रिकारण की भी अनुमति नहीं है। आशा करती हूँ कि कोई इतिहासकार शीघ्र ही इस मंदिर पर शोध करे एवं आलेख प्रस्तुत करे।

मंदिर के गर्भगृह के भीतर देवी की एक मूर्ति है जो आभूषणों एवं पुष्पहारों से सजी विंध्यवासिनी देवी के समान ही दिखती है। इसके एक ओर कांसे की एक मूर्ति है जिसके समक्ष एक बड़े दीपक में अखंड ज्योत जलायी हुई थी। भक्तगण एक द्वार से भीतर प्रवेश करते हैं, दोनों प्रतिमाओं के समक्ष नतमस्तक होते हैं तथा दूसरे द्वार से बाहर चले जाते हैं। यह किसी एक साधारण टेकड़ी मंदिर के ही समान है, छोटा किन्तु सुविधाजनक व सर्वोत्तम स्थल पर स्थित।

काली गुफा

मंदिर परिसर में एक काली गुफा है। इसके भीतर झुककर जाना पड़ता है, भीतर झुके हुए ही रहना पड़ता है तथा झुके हुए ही गुफा के दूसरी ओर से बाहर आना पड़ता है। इस गुफा के ऊपर कात्यायनी यंत्र स्थापित है। यहाँ मैंने एक वृक्ष के नीचे कुछ प्राचीन मूर्तियाँ भी देखीं।

यहाँ से कुछ सीढ़ियाँ उतरकर हम सीता कुंड पहुंचते हैं। ऐसा कहा जाता है कि सीता माता की तृष्णा शांत करने के लिए लक्ष्मण ने इस कुंड की रचना की थी। इस कुंड के चारों ओर छोटे मंदिर स्थित हैं। दूसरी ओर से कुंड को देखने पर आपको ज्ञात होगा कि पहाड़ी के ऊपर से गिरते झरनों के जल से कुंड भरता है।

अष्टभुजा मंदिर से आप गंगा को देख सकते हैं जो इस पहाड़ी की तलहटी से होकर बहती है। गंगा के दोनों ओर के कुछ जलधाराएँ आ कर गंगा में समाती हुई भी आप देख सकते हैं। इस स्थान की विशेषता है इसकी

वस्तुस्थिति, जहां से आप विंध्य पर्वतों का गंगा से मिलन का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। वर्षा के पश्चात हरियाली से परिपूर्ण वह दृश्य अत्यन्त चित्ताकर्षक था।

काली खोह अथवा महा काली मंदिर

अष्टभुजा मंदिर से कुछ किलोमीटर दूर यह महाकाली मंदिर स्थित है। इस मंदिर से किंचित पूर्व में एक प्राचीन काली गुफा है। इसके भीतर भी झुककर प्रवेश करना पड़ता है, झुके हुए ही आगे बढ़ते हुए गुफा के दूसरी ओर से बाहर आना पड़ता है। इसके भीतर काली की केवल एक प्रतिमा है जिस पर नींबुओं का हार अर्पित किया हुआ था।

महाकाली

गुफा के बाहर स्थित एक वृक्ष के तने पर पवित्र धागे बंधे हुए थे। भारत के कई अन्य मंदिरों के समान, इस वृक्ष के तने पर भी पवित्र धागा बांधकर इच्छापूर्ति की कामना की जाती है। इच्छा पूर्ण होने पर यहाँ वापिस आकर धागा खोला जाता है। खुले प्रांगण में एक शिवलिंग तथा उनका नंदी स्थापित है। इस शिवलिंग पर भी अनेक लाल चुनरियाँ अर्पित की हुई थीं। ये लाल चुनरियाँ भी इच्छापूर्ति के लिए अर्पित की जाती हैं।

काली गुफा के पास इच्छा पूर्ति करते शिव

महा काली मंदिर भी एक छोटा मंदिर है। तथापि इस मंदिर में भी भक्तों की उतनी ही बड़ी संख्या थी जितनी अन्य दो मंदिरों में थी। यहाँ माँ काली की दो प्रतिमाएं हैं। सर्वप्रथम आप भद्रकाली के दर्शन करेंगे, तत्पश्चात महा काली के दर्शन प्राप्त करेंगे जो इस मंदिर की अधिष्ठात्री देवी हैं।

महाकाली की अनोखी प्रतिमा

महाकाली की प्रतिमा अत्यन्त अनूठी है। उन्होंने अपना मुखड़ा ऊपर की दिशा में उठाया हुआ है तथा उनका खुला मुंह एक कुएं के समान प्रतीत होता है। उन कुछ क्षणों के साक्षात्कार के पश्चात मेरे मानसपटल पर इतना ही अंकित हो पाया था। मंदिर के पृष्ठभाग में भैरव मंदिर है। साधारणतः प्रत्येक काली मंदिर के साथ भैरव मंदिर अवश्य होता है।

समीप ही एक छोटा सा मंदिर बरम बाबा नामक संत को समर्पित है। बाबा को अनेक खड़ाऊ अर्पण किये हुए थे।

प्राचीन सिंह प्रतिमा - कालीखोह मंदिर के प्रांगन में

मुख्य मंदिर के समीप दुर्गा को समर्पित एक मंदिर है। इस मंदिर के समक्ष सिंदूर में सनी हुई सिंह की एक प्राचीन मूर्ति है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी काल में यह मंदिर का ही एक भाग था तथा मंदिर आज के मंदिर से अपेक्षाकृत विशाल था।

यहाँ से अष्टभुजा मंदिर तक सीढ़ियाँ जाती हैं।

विन्ध्याचल के अन्य मंदिर

विंध्याचल नगरी अनेक छोटे मंदिरों से परिपूर्ण है। मैंने उनमें से कई मंदिरों के दर्शन किये थे। आईए मैं आपको उनके दर्शन कराती हूँ-

लाल भैरव मंदिर

भैरव को देवी का रक्षक माना जाता है। यह एक छोटा सा मंदिर है जिसके भीतर भैरव की लाल रंग की एक प्रतिमा है। यह एक अत्यन्त साधारण मंदिर है। वहाँ बैठे एक साधु ने मुझे सम्पूर्ण भारत के ११ भैरवों की कथाएं सुनायी। उनमें से एक काशी में, एक उज्जैन में तथा शेष नौ विभिन्न देवी क्षेत्रों में स्थित हैं। यहाँ के भैरव विंध्यवासिनी के रक्षक अर्थात कोतवाल हैं। आदर्श रूप से आपको सर्वप्रथम भैरव के दर्शन करने चाहिए। तत्पश्चात उनकी अनुमति प्राप्त कर देवी के दर्शन करने चाहिए।

आदि शक्ति महामुंडलिनी मंदिर

यह मंदिर बाबा अवधूत के आश्रम में स्थित है जो अष्टभुजा मंदिर के अत्यन्त समीप है। यह मंदिर अब भी निर्माणाधीन प्रतीत हो रहा था। अथवा कदाचित इसके पुनरुद्धार का कार्य प्रगति पर हो। इसके भीतर महामुंडलिनी के रूप में काली की विशाल प्रतिमा है। साथ ही एक यज्ञशाला भी है। मंदिर के चारों ओर त्रिकोणीय यज्ञ कुंड हैं। कदाचित यहाँ साधुगण अपनी साधना करते हैं।

मंदिर के पृष्ठभाग से पर्वत, वन एवं गंगा का अद्भुत दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

तारा मंदिर

तारा वामपंथी उपासकों अथवा तांत्रिक उपासकों की आराध्य देवियों में से एक है। यह श्वेत रंग में रंगा उनका छोटा सा मंदिर है। यह गंगा घाटों के उस पार स्थित है जहां दाह संस्कार किया जाता है।

मैंने इस मंदिर के भीतर केवल एक शिवलिंग एवं एक बैल ही देखा। मेरी जिज्ञासा शांत करने के लिए वहाँ कोई भी उपस्थित नहीं था। इस मंदिर की अवस्था इससे श्रेष्ठ हो सकती है।

जलकुंड / तालाब

इस क्षेत्र के अत्यन्त समीप से गंगा बहती है। फिर भी यह स्थान कई छोटे-बड़े जलकुंडों से भरा हुआ है। उनमें से कई जलकुंडों के साथ अनेक किवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। ये जलकुंड यात्रियों के मार्ग पर ही स्थित हैं। मेरे अनुमान से प्राचीन भारत के समान ही ये भी जल संचयन का भाग हों। वर्षा की एक बूंद भी व्यर्थ नहीं की जाती थी।

मैंने कुछ जलकुंडों के दर्शन किये थे। वे हैं:

गेरुआ तालाब

गेरुआ एक रसायन रेड आक्साइड का रंग है। इसका प्रयोग किसी भी वस्तु को जंग के समान लाल रंग देने में किया जाता है। इसका प्रयोग घरों की भित्तियों को भी रंगने में किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि किसी समय इस तालाब के जल का रंग गेरुआ था। इस तालाब के जल में डुबाकर लोग अपने वस्त्र रंग लेते थे।

यह एक बड़ा किन्तु अब उपेक्षित सा तालाब है। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ हैं। कहीं कहीं जल तक पहुँचने के लिए ढलुआं मार्ग भी है। कदाचित यह मवेशियों को जल पीने में सहायता करने के लिए बनाया गया है।

गेरुआ तालाब के निकट एक कृष्ण मंदिर भी है।

मोतिया तालाब

इस विशाल तालाब का आधा भाग कमल के पुष्पों से भरा हुआ था। समीप एक छोटा सा शिव मंदिर है जहां रविवार, यह उत्सव मनाया जा रहा था। वर्ष में एक विशेष रविवार के दिन मनाए जाने वाले इस उत्सव के

उपलक्ष्य में सामूहिक भोजन पकाया जा रहा था। यह भोजन नमक का प्रयोग किये बिना पकाया जाता है। भोजन पकाने वाले लोगों ने मुझसे भी दोपहर का भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया। समय की कमी के कारण यह मेरे लिए संभव नहीं था। किन्तु मेरी तीव्र इच्छा थी कि मैं चोखा का स्वाद ले पाती। चोखा एक स्वादिष्ट व्यंजन है जिसे टमाटर, आलू एवं बैंगन को भूनकर बनाया जाता है।

नाग कुंड

मेरे लिए यह एक अत्यन्त चित्ताकर्षक खोज थी। लाल भैरव मंदिर के समीप एक सूचना पट्टिका पर इस कुंड का नाम तथा उस ओर जाने का संकेत बना हुआ था। लाल भैरव मंदिर के दर्शन करते समय अनायास ही मेरी दृष्टि इस पट्टिका पर पड़ी। वहाँ पहुंची तो मेरी आंखे फटी की फटी रह गयीं। यह वास्तव में आभानेरी की चाँद बावड़ी के समान ही एक बावड़ी है। यह बावड़ी गहरी एवं चौकोर है। इसके चारों ओर शुंडाकार सीढ़ियाँ बनी हैं जिससे आप नीचे जल तक पहुँच सकते हैं। श्वेत रंग में रंगी इन सीढ़ियों का प्रयोग अब कपड़े सुखाने के लिए किया जा रहा है।

ऐसा माना जाता है कि इस बावड़ी का निर्माण नाग वंश के राजाओं ने करवाया था। यह कदाचित विंध्याचल नगरी की सर्वाधिक प्राचीन संरचना है। नाग कुंड पर नाग पंचमी की पूजा अब भी की जाती है।

यदि कुंड का जल स्वच्छ किया जाए तो यह एक अत्यन्त मनोहारी स्थल बन सकता है।

सीता कुंड

इस कुंड के विषय में मैं अष्टभुजा मंदिर के खंड में पहले से ही लिख चुकी हूँ। समय की कमी के कारण मैं इसे दूर से ही देख पायी।

ताड़ा जलप्रपात तथा विंध्यम जलप्रपात मिर्ज़ापुर के समीप स्थित हैं।

इनके अतिरिक्त एक विशाल कुंड मैंने अष्टभुजा मंदिर की ओर जाते समय भी देखा था। किन्तु उसका नाम मैं पढ़ नहीं पायी।

विंध्याचल मंदिरों के उत्सव

नवरात्रि – यह एक देवी मंदिर है। इसीलिए स्वाभाविक है कि नवरात्रि यहाँ का एक महत्वपूर्ण उत्सव है। हिन्दू पंचांग के अनुसार आश्विन एवं चैत्र मासों में नौ दिवसों तक यह उत्सव मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त भक्तगण पूर्णिमा के दिन भी यहाँ बड़ी संख्या में आते हैं।

कजली – ज्येष्ठ एकादशी के दिन मंदिर में एक प्रकार का लोक गीत गाया जाता है।

एक समय यह क्षेत्र एक वनीय क्षेत्र था। अतः देवी को वनदुर्गा भी कहा जाता है। ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी अर्थात ज्येष्ठ मास के छटें दिवस को अरण्य एकादशी मनायी जाती है।

विंध्याचल एवं मिर्ज़ापुर के स्वादिष्ट व्यंजन

शिवपुरी नामक स्थान पर आप स्वादिष्ट दूध पेड़े खा सकते हैं। ये पेड़े विंध्याचल की विशेषता हैं। सड़क के किनारे छोटे दुकानदार इन्हे थोड़ी मात्रा में बनाकर बिक्री करते हैं। मथुरा पेड़े पर एक संस्करण लिखते समय मुझे यहाँ के पेड़ों के विषय में भी जानकारी प्राप्त हुई थी। ये पेड़े अत्यन्त हल्के एवं स्वादिष्ट हैं। जलेबियों के विषय में क्या कहूँ? मेरी मनपसंद स्वादिष्ट जलेबी पूर्वाञ्चल में सभी ओर दृष्टिगोचर हो जाती हैं।

विंध्याचल यात्रा के लिए कुछ सुझाव

विंध्याचल वाराणसी से लगभग ७० किलोमीटर की दूरी पर है। विंध्याचल पहुँचने के लिए वाराणसी निकटतम विमानतल भी है।

रेल स्थानक मंदिर से केवल एक किलोमीटर की दूरी पर है।

विंध्याचल से १० किलोमीटर की दूरी पर मिर्ज़ापुर स्थित है जो जिला मुख्यालय भी है।

मंदिर के आसपास खाने की मूलभूत सुविधाएं हैं जहां आपको आलू पूरी तथा जलेबियाँ मिल जाएंगी। अधिकतर मंदिरों में जलपान एवं पेय पदार्थ उपलब्ध होंगे।

यहाँ के अतिथिगृहों के विषय में मुझे अधिक जानकारी नहीं है। मेरा सुझाव है कि आप वाराणसी में ठहर कर विंध्याचल की एक दिवसीय यात्रा कर सकते हैं। मैंने भी यही किया था।

स्त्रोत: inditales.com

Ewa Zindagi

भारत में भारत माता के मंदिर

भारत में भारत माता के मंदिरों की संख्या गिनती की हैं तथा सभी अपेक्षाकृत नवीन हैं। किन्तु भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में उनकी जड़ें अत्यंत गहरी हैं।

भारती शब्द का आरंभिक संदर्भ ऋगवेद के आप्री सूक्त से प्राप्त होता है जहाँ उन्हे वाग्देवी अर्थात् वाणी की देवी कहा गया है। साथ ही भारत वंश का भी उल्लेख किया गया है जिनका नेतृत्व सम्राट भारत ने किया था।

महाभारत में इस धरती को भारतवर्ष कहा गया है।

एक चंद्रवंशी कुरु राजा भी थे जिनका नाम था राजा भरत।

विष्णु पुराण में भारत का विस्तार समुद्रों से उत्तरोत्तर तथा हिमालय से दक्षिण तक बताया गया है। विष्णु पुराण के अनुसार भारत वह धरती है जहाँ भरत की संतानें रहती हैं।

भारत माता का समकालीन उद्भव

भारत माता उस समय जन मानस में आई जब भारत में स्वतंत्रता आंदोलन आरंभ हुआ था। आप सब ने बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित 'वंदे मातरम' गीत अवश्य ही सुना होगा। यह गीत १८८२ में उनके द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंद मठ' का भाग बना जो बंगाल में आए अकाल की पृष्ठभूमि पर रचित कथा है। इस कथा में भारत माता का शक्तिशाली चरित्र प्रस्तुत किया गया है।

भारत माँ का प्रथम चित्र

भारत माता का प्रथम चित्र सन् १९०५ में चित्रकार अवनींद्रनाथ टैगोर ने चित्रित किया था जिसमें भारत माता की एक सजीव कल्पना सर्वप्रथम प्रस्तुत की गई थी। उस चित्र में भारत माता को केसरिया रंग की साड़ी धारण की हुई चार भुजा धारी देवी के समान प्रदर्शित किया था। ऊपरी दो हाथों में उन्होंने शास्त्र एवं श्वेत वस्त्र

का एक टुकड़ा पकड़ा हुआ था। निचले दो हाथों में धान की कटाई एवं अक्षमाला पकड़ी थी। अर्थात् उन्होंने अपने चार हाथों में मानव जीवन का सार धारण किया है, शिक्षा, दीक्षा, अन्न एवं वस्त्र।

आपको स्मरण होगा कि उस समय अंग्रेजी सरकार ने बंगाल का बंटवारा किया था। टैगोर जैसे अनेक कलाकारों ने अपने अपने शैली से इस बंटवारे का कड़ा विरोध किया था। अनेक राष्ट्रवादियों ने इस चित्र का विवेचन इस प्रकार किया कि भारत माता अपने पुत्रों से उन्हे स्वतंत्र करने का अनुरोध कर रही हैं। सिस्टर निवेदिता इस चित्र से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने उस चित्र की लाखों प्रतियां बनवाकर केदारनाथ से कन्याकुमारी तक प्रत्येक घर में बँटवाने की इच्छा व्यक्त की थी।

कालांतर में अनेक कलाकारों ने इस चित्र के अनेक संस्करण बनाए। भारत माता का मूल चित्र अब कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल हाल संग्रहालय में प्रदर्शित है।

वाराणसी का भारत माता मंदिर

वाराणसी के महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के संकुल में स्थित भारत माता का मंदिर अनेक आयामों में विशेष है। किसी पारंपरिक मंदिर की भांति यह एक ठेठ मंदिर नहीं है जो साधारणतः किसी देवी-देवता को समर्पित होता है।

यह मंदिर उसी प्रकार अखंड भारत का उत्सव मनाता है जैसा हमारे प्राचीन शास्त्रों में उल्लेख किया गया है! यह भारत की संकल्पना का उत्सव मनाता है तथा मां भारती की कल्पना को साकार करता है।

भारत का मानचित्र

इस मंदिर में मकराना के संगमरमर का प्रयोग कर भारत के एक विस्तृत मान चित्र की रचना की गई है। धरती की स्थलाकृति अर्थात् टोपोग्राफी को १ इंच:६.४ मील के आनुपातिक स्तर पर स्पष्ट रूप से मानचित्रित किया गया है। अतः जब आप विभिन्न पर्वत श्रंखलाओं को देखेंगे तो उन्हे उसी अनुपात में पाएंगे जिस अनुपात में वे इस धरती पर विराजमान हैं। नक्शे पर ४५० से भी अधिक पर्वत चोटियों को अंकित किया गया है। साथ ही सभी जल स्त्रोतों, नदियों, समुद्रों, पठारों तथा विस्तृत मैदानी क्षेत्रों को भी दर्शाया गया है। एक ओर समुद्र के भीतर स्थित न्यूनतम से न्यूनतम द्वीप भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हैं तो दूसरी ओर सगरमाथा तथा k2 जैसे विशालतम पर्वत चोटियाँ भी स्पष्ट अंकित हैं। यदि इस मान चित्र में कुछ नहीं है तो वह है मानव निर्मित परिवर्तन, फिर चाहे वह राजनीतिक सीमाएं हों अथवा कोई संरचनात्मक परिवर्तन।

मुझे बताया गया कि स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस के उत्सवों में इसके सभी जल स्त्रोतों में जल भरा जाता है तथा नक्शे को पुष्पों से अलंकृत किया जाता है। इस नक्शे के चारों ओर स्तंभ युक्त गलियारे हैं जिसमें ३६० अंश घूमते हुए आप सभी दिशा से नक्शे का अवलोकन कर सकते हैं। समीप से देखते हुए आप इसके सूक्ष्म तत्वों की सराहना किये बिना नहीं रहेंगे।

प्रेरणा

मंदिर के सूचना पटल पर अंकित बाबू शिव प्रसाद गुप्ता की टिप्पणी के अनुसार उन्हे इस मंदिर के निर्माण की प्रेरणा पूना के एक विधवा आश्रम से प्राप्त हुई थी जहाँ उन्होंने धरती पर चित्रित ऐसा ही एक मानचित्र देखा था। तभी उन्होंने एक शिलाखंड पर भारत का विस्तृत मानचित्र तैयार करने का निश्चय किया। उनका यह

निश्चय तब और दृढ़ हुआ जब वे लंदन गए तथा उन्होंने ब्रिटिश संग्रहालय में ऐसे अनेक विस्तृत नक्शे देखे। वहाँ से वापिस आने के पश्चात उन्होंने अनेक लोगों के साथ, इस प्रकार के एक मंदिर के निर्माण के, अपने स्वप्न के विषय में चर्चा की। उन्होंने दुर्गा प्रसाद खत्री जी को इसका दायित्व सौंपा। मंदिर को जनता के लिए खोलने से पूर्व मंदिर में गायत्री मंत्र जप के २४ लाख आवर्तन किये गए थे।

वाराणसी के भारत माता मंदिर का प्रवेश द्वार

सन् १९३६ में महात्मा गांधी ने मंदिर में आयोजित इस यज्ञ में पूर्णाहुति देकर इस मंदिर का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया था। वेदों के मंत्रोच्चारण के बीच मंदिर के पट जनता के लिए खोले गए थे।

बाबू शिव प्रसाद गुप्ता

इस मंदिर के निर्माण हेतु सम्पूर्ण निधि का प्रबंध उद्योगपति एवं स्वतंत्रता सेनानी बाबू शिव प्रसाद गुप्ता ने किया था। उनका परिवार अब भी मंदिर की देखरेख करता है। यही वे गुप्ताजी हैं जिन्होंने काशी विद्यापीठ की स्थापना की थी तथा अनेक समाज कल्याण के कार्य किये थे। मंदिर के प्रमुख वास्तुकार दुर्गा प्रसाद एवं उनके साथियों के नाम मंदिर की भित्तियों पर उत्कीर्णित हैं।

कुछ वर्षों पूर्व जब मैंने मंदिर के दर्शन किये थे, वहाँ कोई भी उपस्थित नहीं था। जहाँ तक मैंने समझा, वास्तविक रूप से वहाँ किसी भी पूजा-अनुष्ठान का पालन नहीं किया जा रहा है। आप निःसंकोच वहाँ विचरण कर सकते हैं तथा हमारा पोषण करने वाली भारत की धरती की स्थलाकृति देख सकते हैं।

हाँ, भारत माता की एक मूर्ति अवश्य है जो अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा चित्रित भारत माता के प्रसिद्ध चित्र से प्रेरित है।

काव्य

हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस मंदिर के सम्मान में एक कविता रचकर इसे समर्पित की थी। वह कविता है-

भारत माता का मंदिर यह

समता का संवाद जहाँ,

सबका शिव कल्याण यहाँ है

पावें सभी प्रसाद यहाँ।

यह कविता मंदिर परिसर में अंकित है। आप पूर्ण कविता वहाँ पढ़ सकते हैं।

इस मंदिर की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसका निर्माण सन् १९१८ से सन् १९२४ के मध्य, भारत की स्वतंत्रता से पूर्व हुआ था।

हरिद्वार का भारत माता मंदिर

वाराणसी के भारत माता मंदिर से विपरीत हरिद्वार के भारत माता मंदिर में भक्तों एवं पर्यटकों का तांता लगा रहता है। यह स्थल हरिद्वार भ्रमण पर आए अधिकांश पर्यटकों एवं भक्तों की भ्रमण सूची में सम्मिलित किया जाता है।

इस मंदिर का निर्माण स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी ने सन् १९८३ में करवाया था तथा इसका उद्घाटन श्रीमती इंदिरा गांधी जी के हाथों से हुआ था। ८ तल ऊंची यह संरचना कदाचित हरिद्वार की सर्वोच्च इमारतों में से एक हो। गंगाद्वार नाम से प्रसिद्ध इस हरिद्वार नगरी से होकर बहती हुई गंगा के विभिन्न शाखाओं के अवलोकन के लिए यह सर्वोत्तम स्थान है। गंगा के चारों ओर पसरे राजाजी राष्ट्रीय उद्यान की भी सीमाएं आप यहाँ से देख सकते हैं।

मंदिर के ८ तल

मंदिर के ८ तलों में से प्रत्येक तल एक भिन्न विषय को समर्पित है। संरचना का भूतल माता को समर्पित है। यहाँ माता की एक भव्य मूर्ति स्थापित है। उन्हें निहारते हुए मैं शनैः शनैः आगे बढ़ने लगी। शीघ्र आगे बढ़ना चाहती तो भी संभव नहीं था क्योंकि पर्यटकों एवं दर्शकों की भारी भीड़ एक पंक्ति में धीरे धीरे कक्ष में से आगे रेंग रही थी।

मंदिर के प्रथम तल को शूर मंदिर कहा जाता है। यह भारत के शूर-वीरों को समर्पित है जिनमें अनेक स्वतंत्रता सेनानी भी सम्मिलित हैं।

मंदिर का दूसरा तल मातृ मंदिर है जो नारी शक्ति को समर्पित है। यहाँ लक्ष्मीबाई जैसे अनेक स्त्री योद्धाओं व वीरांगनाओं तथा मीराबाई जैसी संतों की छवियाँ है।

तीसरा तल संत मंदिर के नाम से जाना जाता है जो भारत के संतों को समर्पित है।

चौथा तल भारत में प्रचलित विभिन्न धर्मों को समर्पित है जिसके अनुयायी आपस में सद्भाव से रहते हैं।

पाँचवाँ तल देवी अथवा शक्ति को समर्पित है जो भारत की दिव्य स्त्री हैं।

छठा तल भगवान विष्णु को समर्पित है। यहाँ उनके विभिन्न अवतारों को प्रदर्शित किया गया है।

सातवाँ तल मंदिर के अधिष्ठात्र देव के रूप में भगवान शिव को समर्पित है।

संक्षेप में समझा जाए तो यह मंदिर भारत माता से आरंभ होता है तथा एक ढलुआं गलियारे से आप को शनैः शनैः ऊपर ले जाता हुआ अंततः भगवान शिव तक पहुंचता है। तत्पश्चात उसी प्रकार आप नीचे वापिस आ जाते हैं।

संकल्पना

देश के विभिन्न आयामों को एक साथ एक पृष्ठभूमि में लाती हुई मंदिर की यह संकल्पना मुझे अत्यंत भायी। वह चाहे इसका धार्मिक मेरुदंड हो अथवा इसके स्वतंत्रता सेनानी, इसके संत हों अथवा इसकी भिन्न भिन्न मान्यताएं, सर्वश्रेष्ठ योद्धा हों अथवा सर्वश्रेष्ठ वीरांगनाएं। किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यहाँ की मूर्तियों एवं चित्रावलियों का इससे उत्तम निष्पादन किया जा सकता था। भारत शास्त्रीय एवं लोक शैली के विविध कला रूपों से सम्पन्न देश है। मुझे सम्पूर्ण विविधता परिलक्षित होती प्रतीत नहीं हुई। अनेक रिक्त भित्तियाँ थीं जिन पर इन महानुभावों की कथाएं प्रदर्शित की जा सकती हैं।

फिर भी इसकी संकल्पना को दाद देने के लिए आप यहाँ अवश्य आईए। मेरा विश्वास है कि आप आनंदित हो जाएंगे। आपके आनंद को चार चाँद लगाएगा मंदिर की छत से दृष्टिगोचर चारों ओर का अप्रतिम परिदृश्य।

कन्याकुमारी का भारत माता मंदिर

कन्याकुमारी के विवेकानंद केन्द्र परिसर में भारत माता का मंदिर भी है।

उस मंदिर में स्वामी विवेकानंद की मूर्ति के चारों ओर माताओं की ५ प्रतिमाएं हैं। वे हैं:

पार्वती – भगवान गणेश एवं कार्तिक की माता

शकुंतला – सम्राट भारत की माता

जीजाबाई – शिवाजी महाराज की माता

शारदा देवी – स्वामी विवेकानंद की गुरु माता

माता अमृतानन्दमयी – वर्तमान काल की एक संत जिन्होंने सन् २०१७ में इस मंदिर का उद्घाटन किया था!

यहाँ भारत माता की १२ फीट ऊंची एक सुनहरी मूर्ति है जिनके बाएं हाथ में एक ध्वज है तथा दाहिना हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ है। उनके अलौकिक स्वरूप से साम्य रखता हुआ एक सुनहरा सिंह उनके पीछे खड़ा है जो यह दर्शाता है कि माता माँ दुर्गा का अवतार हैं।

उज्जैन का भारत माता मंदिर

भारत माता के मंदिरों में यह एक नवीनतम मंदिर है जिसका निर्माण माधव सेवा न्यास ने करवाया था तथा इसका उद्घाटन २०१८ में ही किया गया था। उज्जैन के प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के निकट स्थित इस ३ तल के मंदिर में माता की शिला में उत्कीर्णित १६ फीट की विशाल मूर्ति है। उनके चारों ओर नवदुर्गा की छवियाँ हैं। मंदिर परिसर में एक प्रेक्षागृह, एक पुस्तकालय, एक ध्यान एवं योग कक्ष तथा एक सभा-कक्ष भी हैं।

देवगिरी का भारत माता मंदिर

महाराष्ट्र के औरंगाबाद नगरी के समीप स्थित ११ वीं. सदी के देवगिरि दुर्ग का निर्माण यादव राजाओं ने करवाया था। समय के साथ इस दुर्ग ने अनेक साम्राज्य एवं उनके साथ हुए अनेक परिवर्तन देखे। आज इसके परिसर में एक प्राचीन मंदिर के स्थान पर भारत माता का मंदिर बनवाया गया है। मूल मंदिर की आयु का अनुमान लगाना कठिन है। परिसर के चारों ओर खड़े स्तंभों को देख यह मंदिर अत्यंत प्राचीन प्रतीत होता है। इसमें भारत माता की प्रतिमा की स्थापना कुछ समय पूर्व ही की गई होगी।

यदि आप भारत अथवा विश्व के किसी क्षेत्र में स्थित भारत माता के किसी अन्य मंदिर के विषय में जानते हों, जिनका उल्लेख मैंने यहाँ नहीं किया हो तो आपसे अनुरोध है कि आप मुझे उनके विषय में जानकारी अवश्य दें!

स्त्रोत: inditales.com

चेरापूंजी: एक प्राकृतिक धरोहर

चेरापूंजी को धरती की सबसे गीली जगह के रूप में जाना जाता है। जैसा कि हमने अपनी भूगोल की कक्षा में भी पढ़ा था। इससे हमारे दिमाग में चेरापूंजी की जो छवि निर्मित हुई थी वह कुछ ऐसी थी कि, यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर हर वक्त वर्षा होती रहती है। अगर आप वहां पर जाए तो आपको सिर्फ बारिश ही बारिश देखने को मिलेगी। लेकिन हमारी यह धारणा जल्द ही गलत साबित हुई और हमे यह पता चला कि वास्तव में चेरापूंजी ऐसी जगह बिल्कुल नहीं है। देश के अन्य भागों की तरह यहां पर भी वर्षा ऋतु के समय ही बारिश होती है। फर्क सिर्फ इतना है कि इस दौरान यहां पर धरती के अन्य किसी भी स्थान के मुकाबले अधिक बारिश होती है!

वास्तव में हमे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सर्दियों के मौसम में यहां पर पूरा सूखा पड़ जाता है, जिसकी वजह से इस क्षेत्र को कभी कभी पानी की गंभीर समस्या से भी गुजरना पड़ता है। इससे भी अधिक विडंबनात्मक बात शायद ही कभी हो सकती है – कि धरती की सबसे गीली जगह पर हर साल महीनों के लिए सूखा पड़ जाता है।चाहे जो भी हो लेकिन यहाँ के लोगों के लिए जिंदगी दोनों तरफ से बहुत कठिन है – जब बारिश होती है तब भी और जब बारिश नहीं होती तब भी।

भारत का सबसे बेहतरीन झरना

नोहकालिकाई झरना, चेरापूंजी

चेरापूंजी में घूमते समय आप हर वक्त बादलों को अपने आस-पास पाते हैं। यहां पर आप वास्तव में बादलों के बीच चल सकते हैं, उन्हें अपनी त्वचा पर महसूस कर सकते हैं और उन्हें सूंघ भी सकते हैं। ये बादल न सिर्फ आपके साथ मस्ती-मज़ाक ही करते हैं, बल्कि आपके लिए हर पल नए-नए नज़ारे भी पेश करते रहते हैं।

कभी कभी तो ये बादल झरने को ही छलावृत्त कर देते हैं जिसके कारण आपको बस उसकी आवाज सुनकर ही संतुष्ट होना पड़ता है। लेकिन बीच-बीच में वे, आपको झरने की छोटी सी झलक दिखाकर आपकी उत्सुकता को बढ़ाते हैं और फिर अचानक से आपकी दृष्टि से ओझल होकर आपको गहरी नीली झील में गिरते इस सुंदर से झरने की प्रशंसा करने हेतु कुछ समय के लिए एकांत में छोड़ देते हैं। नोहकालिकाई झरना लगभग 1100 फीट की ऊंचाई का है, जो उसे भारत का सबसे ऊंचा और बेहतरीन झरना बनाता है।

यहां की और एक विशेषता है, यहां के रंगबिरंगे फूल जो आपको हर जगह नज़र आते हैं। चाहे वह सड़क के किनारे हो, घाटी हो, या फिर यहां पर बसे प्रत्येक घरों के आँगन, हर कहीं आपको विभिन्न प्रकार के फूल दिखाई देते हैं। इन फूलों को देखकर ऐसा बिलकुल नहीं लगता जैसे उन्हें यहां पर जबरदस्ती लगाया गया होगा, बल्कि ये फूल भी इन पहाड़ियों, बादलों और मनुष्यों की तरह यहां की प्रकृति का एक अभिन्न अंग हैं। हमारी इस पूरी यात्रा के दौरान हमे यहां के विविध प्रकार के, रंगबिरंगे और खूबसूरत फूल देखने को मिले जो कि अन्यत्र दुर्लभ हैं।

चेरापूंजी की पहाड़ियां

यहां के खुले नीले आकाश में बिखरे सफ़ेद या सलेटी बादल, यहां की हरी-भरी पहाड़ियाँ और रंगबिरंगे फूल, सभी जैसे अपने उज्वलित रंगों से एक दूसरे की शोभा बढ़ाते हुए इन नज़ारों को और भी आकर्षक बना रहे थे। चेरापूंजी के इर्द-गिर्द बसी पहाड़ियों पर यहां-वहां अनेक झरने छितराये हुए हैं। आप चाहे किसी भी घाटी पर हो, आपको अपने आस-पास या तो किसी झरने की आवाज सुनाई देगी, या फिर कोई झरना ही जरूर दिखेगा। इन में से कुछ झरने यहां के मानक यात्रा कार्यक्रमों के भाग हैं, जिसके द्वारा आपको उनकी यात्रा कराई जाती है और उनसे संबंधित कुछ रोचकपूर्ण कहानियाँ भी सुनाई जाती हैं। ये सीधे खड़े झरने पहाड़ियों के बीच स्थित संकुचित मार्ग में गिरते हैं और फिर इसी मार्ग से बहते-बहते घाटी के गहन भागों में पहुँचकर नदी का रूप धारण कर लेते हैं।

अगर पहाड़ियों के ऊपर से देखा जाए तो ये नदियां इन हरी ढलानों के बीच से बहती पानी की पतली सी रेखा के समान दिखाई देती हैं। कभी-कभी आपको इस छोटी सी नाजुक नदी की अपार शक्ति पर आश्चर्य होता है, जो इन चट्टानी पर्वतों को चीर कर स्वयं अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ती है। और आप अचानक से, कहीं पर भी जा सकने की उसकी स्वतंत्रता और सीमा पार जाने की उसकी क्षमता से ईर्ष्या करने लगते हैं। यहां की अधिकतर नदियां बहते-बहते पड़ोसी राष्ट्र बांग्लादेश में चली जाती हैं।

नोहकालिकाई झरने से संबंधित उपाख्यान और मिथक

मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। ऐसी ही एक कथा चेरापूंजी के नोहकालिकाई झरने से जुड़ी है, जिसके नाम के पीछे एक बहुत दुखद कहानी छिपी हुई है। माना जाता है कि, कालिकाई नामक एक महिला ने बरसों पहले गलती से अपनी खुद की बेटी को खा लिया था, जिसके बाद उसने यहां पर आकर आत्महत्या की थी। इसी घटना के बाद से इस झरने को नोहकालिकाई के नाम से जाना जाने लगा!

उलटी टोकरी – खासी समुदाय मेघालय

यहां पर 200 फीट की अखंड चट्टान से बनी एक विशाल संरचना है, जो पलटी हुई ख़ासी टोकरी के जैसी लगती है। कहा जाता है कि यह टोकरी एक विराट राक्षस की थी जो हमेशा लोगों को परेशान करता था। एक बार सब लोगों ने मिलकर उसे कीलों का बनाया हुआ खाना खिलाया और मार डाला। इस उपाख्यान के अनुसार उस राक्षस का नाश तो हो गया लेकिन उसकी टोकरी यहीं पर औंधी पड़ी रह गयी, जो आज भी चट्टान के रूप में यहां पर खड़ी है। जिस प्रकार से यह चट्टान अपने चोटीदार शीर्ष के साथ इन पहाड़ियों और मैदानों के बीच खड़ी है, उसे देखकर आप इस उपाख्यान पर विश्वास किए बिना नहीं रह सकते।

मॉस्मई गुफाएँ

मेघालय में लगभग 788 गुफाएँ हैं, जिन में से अधिकतर या तो नक्शे पर नहीं मिलती या फिर अब तक उनकी खोज नहीं हो पायी है। इन में से कुछ भारत में स्थित सबसे लंबी गुफाएँ हैं। इन सभी गुफाओं में से मॉस्मई गुफाएँ सबसे प्रसिद्ध गुफाएँ हैं। चेरापूंजी से कुछ ही समय की दूरी पर बसे होने के कारण बहुत से लोग इन गुफाओं को देखने आते हैं।

यहां पर बनवाई गयी पक्की सीढ़ियाँ आपको गुफा के प्रवेश द्वार तक ले जाती हैं। गुफा के द्वार पर पहुँचते ही सामने ही आपको एक विशाल कक्ष जैसी संरचना दिखेगी, जो आपको एक पतले से मार्ग की ओर ले जाती है। इस मार्ग से एक समय पर केवल एक ही व्यक्ति गुजर सकता है। इस मार्ग को पार करने के पश्चात फिर से आपको एक विशाल कक्ष जैसा मिलता है, जहां से बाहर निकलते ही आप गुफा के दूसरे छोर पर पहुँचते हैं।

इस प्रकार की कुदरती संरचनाएं आपको प्रकृति की अनेकरूपता के प्रति हमेशा मोहित कर देती हैं। लेकिन इस गुफा की अवस्था को देख आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उसकी कितनी देखभाल होती होगी। इस गुफा के इर्द-गिर्द आपको घने जंगल नज़र आएंगे जिनमें सिर्फ जंगली पेड़-पौधे हैं। जब हम मॉस्मई गुफाओं तक पहुंचे तब तक शाम हो चुकी थी और उसी समय बारिश भी होने लगी थी। चेरापूंजी में आकर एक पूरा दिन सूखा-सूखा गुजारने के बाद अब जाकर हम उसकी असली पहचान, यानी उसके गीलेपन के अनुभव से रूबरू हो रहे थे। वर्षा की इस बौछार से लगा जैसे चेरापूंजी की हमारी यात्रा सही मायनों में अब पूरी हो गयी है।

सोहरा

चेरापूंजी अब आधिकारिक तौर पर सोहरा के नाम से जाना जाता है, जो उसका मूल नाम हुआ करता था। जाहिर तौर पर चेरापूंजी नाम उसे अंग्रेजों द्वारा दिया गया था। यहां पर कुछ स्थान ऐसे हैं जहां से आप बांग्लादेश के कुछ भाग देख सकते हैं। अचरज की बात तो यह है कि सोहरा जैसे पहाड़ी क्षेत्र में जहां पर भी खेती की जाती है, वहां की पहाड़ियाँ अचानक से व्यापक मैदानों में परिवर्तित होती हैं।

सोहरा में रामकृष्ण मिशन से जुड़ा एक आश्रम है, जिसकी उत्तर पूर्वीय दिशा में एक मंदिर और एक संग्रहालय है। इस संग्रहालय में इस क्षेत्र के सभी झरनों की तस्वीरें प्रदर्शित की गयी हैं। उनके साथ उनसे जुडे इतिहास की थोड़ी-बहुत जानकारी भी प्रस्तुत की गयी है। इस आश्रम की मुख्य इमारत की दीवारों पर इस क्षेत्र से जुड़े कुछ चित्र दर्शाये गए हैं। इस इमारत के ठीक पीछे ही एक मंदिर बसा हुआ है। यहां पर एक छोटा सा बुनाई का केंद्र भी है, जहां पर कुछ युवक और युवतियाँ अपनी पारंपरिक रीतिनुसार बुनाई कर रहे थे। यहां की महिलाएं भी पारंपरिक ख़ासी पहनावे में दालचीनी और चाय बेचती हुई नज़र आ रही थीं।

पर्यटकों के लिए सुविधाएं

इतना प्रसिद्ध पर्यटक स्थल होने के बावजूद भी यहां पर पर्यटन पूर्वावश्यकता की कोई सुविधाएं नहीं मिलती। जब तक कि आप यहां के गिने-चुने और नामांकित होटलों में न रुके हों, आपको यहां पर एक वक्त का भी सही खाना नहीं मिल पाता। अधिकतर लोग अपनी शिलांग यात्रा के दौरान सिर्फ एक दिन की यात्रा के लिए ही यहां पर आते हैं, तो ऐसे में यहां पर कुछ अच्छे भोजनालयों का होना बहुत आवश्यक है, जहां पर अच्छा मौलिक खाना मिल सके। अभी के लिए तो आपको यहां पर सिर्फ छोटी-छोटी दुकानें ही मिलेंगी, जहां पर

खाने की कुछ -कुछ चीजें बेची जाती हैं। लेकिन चाय की भूमि से कुछ ही दूर बसे इस क्षेत्र में एक अच्छी सी चाय मिल पाना भी कठिन सा लगता है।

स्त्रोत: inditales.com

Ewa Zindagi

अम्बोली घाट - झरनों का साम्राज्य

अम्बोली घाट - हरे-भरे पश्चिमी घाट जो भारत और विश्व में जैव विविधता का प्रसिद्ध स्थल हैं , का एक छोटा सा हिस्सा है। वर्षा ऋतु के दौरान यह पूरी पर्वत-श्रेणी जैसे जीवंत सी हो उठती है और हरियाली की चादर ओढ़े अपने दर्शकों और इस मार्ग से गुजरनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सुंदरता से मंत्रमुग्ध कर देती है। जब हम कास पठार और सातारा की यात्रा पर जा रहे थे उस वक्त रास्ते में अम्बोली घाट से हमारा बहुत ही संक्षिप्त परिचय हुआ। उसी पल हमने फिर से वहाँ पर जाने का निश्चय कर लिया था और अगले साल हमने झरनों की नगरी अम्बोली घाट के दर्शन करने हेतु एक खास यात्रा का आयोजन किया। मुंबई की भगदड़ से दूर बसी यह जगह महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध पहाड़ी इलाका है।

अम्बोली घाट के झरने

झर झर बहते झरने -

अम्बोली घाट गोवा के पणजी शहर, से लगभग 90 कि.मी. की दूरी पर बसा हुआ है, जहाँ तक बड़ी आसानी से पहुंचा जा सकता है। रास्ते में हम नाश्ता करने के लिए सावंतवाड़ी में रुके और फिर बीच-बीच में कुछ मौसमी नदियां देखते हुए गरमा-गरम चाय की चुसकियाँ लेते हुए यहाँ-वहाँ थोड़ी देर के लिए रुके। रास्ते के उतार-चढ़ाव पार करते हुए आखिर हम पश्चिमी घाट की थोड़ी सहल सी ढलान में पहुंचे जहाँ से आगे हमे हरी-भरी वादियाँ और घाटियाँ हमारा स्वागत करती हुईं दिखाई देने लगीं। साथ में बंदरों के बड़े-बड़े समूह भी नज़र आने लगे।

छोटे बड़े झरने - अम्बोली घाट

जैसे ही हमे पहला झरना नज़र आया हम वहीँ रुक गए। झरनों को पास से देखने के लिए तथा वहाँ की ताज़ा हवा और हरे-भरे परिसर का आनंद उठाने के लिए उस झरने के थोड़ा और पास चले गए। यहाँ पर हमने आस-पास की कुछ तस्वीरें भी लीं। शुक्र है कि हम यहाँ पर पहले भी आए थे, जिसके चलते हमे पता था कि यहाँ से लेकर 'बड़ा धबधबा' अर्थात बड़े झरने तक हमे अनेक छोटे-बड़े झरने मिलने वाले थे और इसीलिए हमने आगे की यात्रा पैदल ही करने का निश्चय किया।

रास्ते में हमे बहुत सी जल-धाराएँ दिखीं, जो नीचे जाकर नदी से मिलने के लिए आतुर थीं और ये नदियाँ आगे जाकर समुद्र में विलीन होने के लिए अधीर थीं तथा यह समुद्र बादलों में व्याप्त होने के लिए उत्सुक था और बादल हमारे खेतों और खलिहानों में खुशियाँ बरसाने के लिए और फिर से इन झरनों का रूप लेकर हमारे चेहरे पर हँसी खिलाने के लिए उतावले थे।

अम्बोली घाट के परिसर का भ्रमण

ये झरने सड़कों से गुजरते हुए आगे जाकर किसी गहरे दून में गिरते हैं। यहाँ पर कुछ विशेष सुविधाजनक स्थल हैं जहाँ से आप अनेक झरनों को ऊँची और ढलाऊ चट्टानों से नीचे गिरते हुए देख सकते हैं। तो कुछ जगहों पर ये झरने पेड़ों के पीछे छिपे हुए होते हैं और सिर्फ अपनी गरजती हुई आवाज़ से अपने होने का एहसास दिलाते हैं। तो एक जगह पर ये झरने किसी कृत्रिम दीवार की तरह लग रहे थे, जिसमें से बाहर निकले हुए छोटे-छोटे गुलाबी रंग के फूल जैसे प्रकृति के इस निरालेपन से बिलकुल अचंभित थे। ऐसा लग रहा था जैसे इस सीधे खड़े बगीचे के लिए कोई खास प्राकृतिक जलदान की तकनीक बनाई गयी हो।

छिपते निकलते झरने - अम्बोली घाट

यहाँ ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं जिनके एक तरफ अनेक जलधाराएँ बहती हैं तो दूसरी तरफ गहरी घाटियाँ हैं जिनमें इन जल-धाराओं का पानी इकट्ठा होता है। ऐसा लगता है जैसे आप इन झरनों के बीच में से गुजर रहे हों, लेकिन शुक्र है उन अभियंतों का जिन्होंने यहाँ पर इन सड़कों का निर्माण किया। इनके होते आप बिना भीगे इन झरनों का आनंद उठा सकते हैं और सिर्फ तब तक जब तक कि बारिश ना होने लगे।

बादलों से खेलते झरने

इस पदयात्रा के दौरान कुछ जगहों पर हम वास्तव में बादलों के बीच से चलते हुए आगे बढ़े, तो कुछ जगहों पर हमे इन बादलों के हटने का इंतजार करना पड़ता था ताकि सामने साफ दिखाई दे सके। कभी-कभी तो ये बादल हट जाते थे लेकिन कई बार वे वहीं पर डटे रहते थे।

बरसात में भुना भुट्टा

बड़े झरने के पास पहुँचते-पहुँचते हम सभी भूख से व्याकुल हो गए थे। वहाँ पर पहुँचते ही हमने बड़ी चाव से वहीं पर मिलनेवाले गरमा-गरम और स्वादिष्ट साबूदाने के वड़े खाए। यहाँ की साधारण सी दुकानों में आपको चाय, प्याज के पकौड़े, साबूदाने के वड़े और भुना हुआ भुट्टा जैसे व्यंजन मिलते हैं। यहाँ पर सबकुछ आपके सामने ही ताज़ा-ताज़ा बनाया जाता है और परोसा जाता है। पिछली बार जब हम यहाँ आए थे, तो यहाँ की हर दुकान पर मैगी नूडल्स ही बिक रहे थे, लेकिन इस बार यहाँ पर मैगी कुछ कम थी! चारों ओर बहते पानी और साथ में हो रही वर्षा के उस वातावरण में चाय और पकौड़ों से अच्छा और स्वादिष्ट और कुछ हो भी नहीं सकता था। जब हम बड़े झरने के पास पहुँचे तो वहाँ पर बहुत वर्षा हो रही थी, जिसके कारण हमने आगे जाकर बाकी के झरने देखने का निश्चय किया जो लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर बसे थे।

नागरतास झरना, अम्बोली घाट

नागरतास एक विशाल मौसमी झरना है। इस झरने की सबसे खास बात है उसका तलभाग यानी खंदक जहाँ पर झरने का पानी गिरता है। यह खंदक गिरते हुए पानी के प्रभाव के कारण बहुत ही प्रखर और संकीर्ण बन गया है। आप वहाँ देख सकते हैं कि किस प्रकार से झरने का पानी इस विशाल मखराली चट्टान में से अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ता है। यह सबकुछ सच में बहुत ही अप्रतिम है।

नागरतास मूर्ति

यहाँ पर इस झरने को देखने के लिए एक खास मंच बनवाया गया है, जिसके प्रवेश द्वार के पास ही एक छोटा सा मंदिर भी है। इस मंदिर में स्थापित मूर्ति के सामने घंटियों का एक बड़ा सा गुच्छा लटकाया गया है। शायद इसके पीछे भी कोई ना कोई कहानी जरूर होगी लेकिन उस समय मैं पूरी तरह से उस झरने की खूबसूरती में डूब गयी थी, जिसके चलते मैं अन्य किसी भी बात पर ध्यान देने की स्थिति में नहीं थी।

उस मंच पर खड़े होकर हम झरने में रूपांतरित होती उस नदी को देख रहे थे। बाद में हम एक और पुल जैसी बनी किसी संरचना के पास गए जो पानी के संघात से निर्मित सँकरी सी घाटी पर खड़ी थी। मैंने इस प्रकार की कोई चीज़ इससे पहले कहीं पर नहीं देखी थी।

हिरण्यकेशी गुफा एवं शिव मंदिर

यहाँ-वहाँ घूमते-घूमते हम हिरण्यकेशी गुफा के पास पहुंचे, जो व्यावहारिक रूप से एक शिव मंदिर है। इस गुफा तक जाने वाले उतार-चढ़ाव वाले मार्ग के दोनों तरफ आपको मंत्रमुग्ध कर देनेवाले परिदृश्य मिलते हैं। यहीं पर हमने पहली बार गेंद जैसे गोलाकार पौधे देखे, जो यहाँ की झाड़ियों में इधर-उधर छितरे हुए थे। मैं आज भी इन पौधों का नाम जानने की कोशिश में हूँ, अगर आप में से किसी को भी इन पौधों के बारे में कोई भी जानकारी हो तो कृपया हमे जरूर बताइए। यहाँ पर एक छोटी सी नदी के ऊपर एक रोड़े का पुल बना हुआ है, जिसे पार करके आप उस तरफ जा सकते हैं। हम घाटी जैसे प्रतीत होने वाले घास के मैदानों से चलते हुए इस प्राचीन मंदिर के पास पहुंचे जो एक समय पर बस एक गुफा हुआ करता था।

इस मंदिर के सामने ही एक सरोवर है जो पास में बहनेवाली जल-धारा से जुड़ा हुआ है। इस सरोवर का आकार कुछ रोचक सा था। यहाँ पर एक हवन कुंड भी था, जो इस मंदिर की सादगी को और भी खूबसूरत बना रहा था। इस मंदिर तक जानेवाली पगडंडी सुव्यवस्थित रूप से बनाई गयी थी जिससे कि लोग आराम से उसपर चल सकें। यहाँ पर भी आपको एक तरफ से दूसरी तरफ बहती अनेक जल-धाराएँ मिलती हैं।

कवळेशेट या कवळेसाद व्यू पॉइंट

हमने फिर से मुख्य सड़क पर आकर कवळेशेट या कवळेसाद तक जानेवाला रास्ता लिया। कवळेसाद तक हमारी यात्रा बहुत ही खूबसूरत रही। रास्ते में हमे गन्नों के खेतों से होकर जाना पड़ा जो पूर्ण रूप से कोहरे से आवृत्त थे। तथा पूरे रास्ते में मिलने वाली घाटी के सुंदर परिदृश्य भी जैसे अपनी सुंदरता को व्यक्त करने से शर्मा रहे थे और पूरे समय बादलों की उस घनी चादर के पीछे ही छिपकर बैठे हुए थे। और जैसे ही हम घाटी को पार करके आगे बढ़ने ही वाले थे कि बादलों ने हमे उनकी एक छोटी सी झलक प्रदान की जैसे कि हमे

चिढ़ा रहे हों, आगे जाकर हम एक अच्छे से भोजनालय में गए जहाँ पर हमने बहुत ही स्वादिष्ट मालवणी खाना खाया।

बादलों के बीच प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेना

अम्बोली घाट के कुछ पल

अब फिर से बड़े झरने के पास जाने का समय आ गया था। वहाँ पर हमने झरने के ऊपर तक जानेवाली सीढ़ियों पर कुछ समय बिताया और आस-पास के वातावरण का अवलोकन भी किया। हमे वहाँ पर कुछ परिवार दिखे जो पूर्ण रूप से झरने का आस्वाद ले रहे थे। तो कुछ अन्य लोग पानी में न गिरने का ध्यान रखते हुए और अपनी मुस्कुराहट ओढ़े एक-दूसरे की तस्वीरें खींच रहे थे। यह अम्बोली घाट का सबसे अधिक भीड़ वाला भाग है।

ऐसे में अगर आपको प्रकृति के साथ अपना एकांत अधिक प्रिय है, तो आप बस दूर से ही झरने के दर्शन करके वहाँ से गुजर सकते हैं। लेकिन अगर आपको लोगों के बीच रहना पसंद है तो आप वहाँ पर कुछ समय बिता सकते हैं। जैसे कि हमने भी गरमा-गरम चाय और पकौड़ों के साथ इस माहौल का पूरा लुत्फ उठाया। यहाँ पर बहुत भीड़ होने के कारण यह जगह उतनी साफ नहीं है, जितनी कि बाकी की सड़क है।

अब वापस घर जाने का समय आ गया था, यद्यपि रास्ते में हमे सावंतवाड़ी में रुकना था।

अम्बोली घाट के इन अनेक झरनों के दर्शन करने के लिए, तथा महाराष्ट्र का सबसे उत्तम पहाड़ी इलाका यानी अम्बोली हिल स्टेशन घूमने के लिए आपको लगभग आधा दिन या फिर एक पूरा दिन जरूर चाहिए।

स्त्रोत: inditales.com

कला पटल
(Ewa Artist Hub)

Artist

Pimmi Nag

Child Artist

Vedika Rautela

Class X

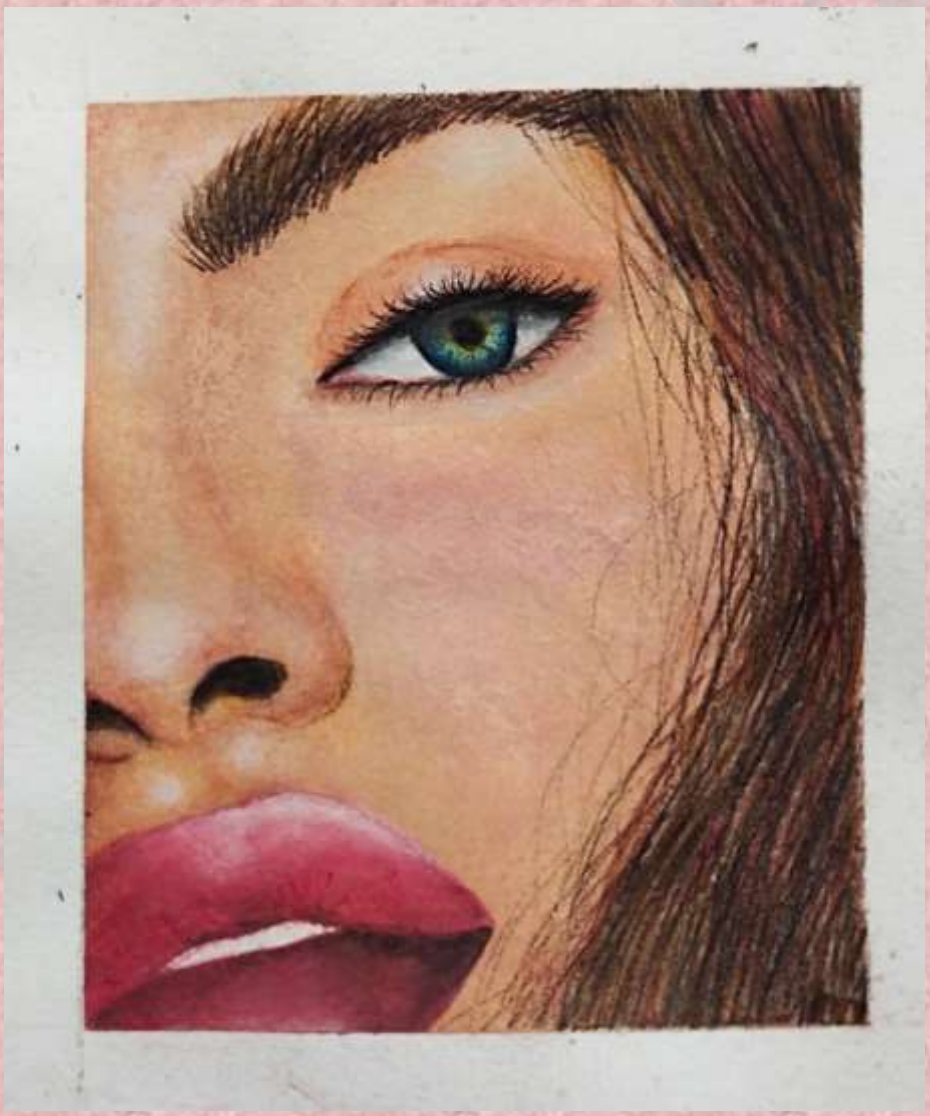

दिवस रचनाकार
(Star Writer Of the Day)

©सुप्रिया पाराशर

मांडवी

एक तपस्विनी मांडवी, राज महल था वास
बनी भरत की वामांगी, महलों में वनवास

आदेश था जा आग्रह था, था भरत का त्याग
छोड़ महलों को चल दिए, भरत भी नंदीग्राम

कर्तव्य पथ गामिनी, विरह से मन भारी
योगिनी सा जीवन, और महलों की रानी

पथ का कंटक ना बनती, में बनती पुष्प सदा
राती में भी पादुका, पूजती ईश्वर को सदा

चाह न श्री महलों की, तुम ईश्वर का उपहार
एक बार तो कह जाते, तुम जीवन का आधार

©भरत दीप

घने स्याह घेरों में उलझे हुए हैं
उजाले अँधेरों में उलझे हुए हैं

नहीं उनको परवाज़ की है इजाजत

सो पंछी बसेरों में उलझे हुए हैं

सिपाही सिपाही का दुश्मन हुआ है
लुटेरे लुटेरों में उलझे हुए हैं

उन्हें क्या खबर क्या हैं हालाते गुलशन
मियां जी बटेरों में उलझे हुए हैं

जबर हो रहे हैं शब-ओ-रोज़ विषधर
सपेरे सपेरों में उलझे हुए हैं

तबाही.... तबाही.... तबाही....तबाही
ये हम किन सवेरों में उलझे हुए हैं।

©सुधा बसोर

गीत

आज शोक के गीत गा रहे कल खुशियों के गाऐंगे।
हिम्मत से यदि लड़ी जंग तो दिन अच्छे भी आऐंगे।

घायल नंगे पैरों से ही भूखे मजदूर भटक रहे,
कल स्वर्ग बनाया धरती को खुद नरक आज हैं भोग रहे।
तिनका तिनका बिखर गया अब फिर से नीड़ बनाऐंगे।
हिम्मत से यदि लड़ी जंग तो अच्छे दिन भी आऐंगे।

एक गर्भ में एक गोद में सर पै कंगाली हँसती है,
दूध नहीं आँचल में इनके बस आँखों में पानी है।
थोथी ममता से कब तक शिशुओं की प्यास बुझाऐंगे।
हिम्मत से यदि लड़ी जंग तो अच्छे दिन भी आऐंगे।

महामारी का संकट है पर प्रकृति मुस्काती है,
जीने की नई राह सीख तू ये संदेश सुनाती है।
आज हवा ने रुख बदला है कल गम के बादल छँट जाऐंगे।
हिम्मत से यदि लड़ी जंग तो अच्छे दिन भी आऐंगे।

©उषा शर्मा

भजन तर्ज : पायो जी मैंने राम रतन धन पायो...

आयो जी आज पावन दिवस है आयो...
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज.....

घर - घर कुसुमित पुष्पहार द्वार सजे हैं.....
जनजीवन तन - मन सब उल्लास भरे हैं...
अवधपुरी हुई सुवासित, पथ रहे महकायो,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज.....

अंगना - अंगना घृत दीप दीप्त हुये हैं....
हृदयदीप भी जगमग हो रोशन हुये हैं.....
पावन सरयू जल है चहुंँओर छिड़काओ,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज.....

अश्रु जल राम लला चरण पखार रहे हैं...
हरित सुशोभित, श्रृंगारित वस्त्र सजे हैं....
सखी सब मिल ये शुभ मंगल गीत गाओ,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज.....

नाना विधि सुगंधित ये मिष्ठान बने हैं....
गंगाजल पावन,आचमन कलश भरे हैं...
धूप दीप अर्चना कर, नैवेद्य भोग लगाओ,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज.....

आज श्रीराम मंदिर संकल्प सम्पूर्ण हुये हैं...
राम भक्तों के प्रण संघर्ष, हवन पूर्ण हुये हैं...
शंख मंत्रोच्चार शुभ ध्वनि नभ में है गुंजाओ,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो...
आयो जी आज....

मन पुलकित रोम-रोम आनंदित हुये हैं,...

हिन्दवासी हम अति गौरवान्वित हुये हैं...
जय श्री राम, उद्घोष में ही मन रम जाओ,
पायो जी हमनें राम लला दरस है पायो..
आयो जी आज.....

© **कमल सक्सेना**

गीत

घर घर होता जाप रामजी के नाम का।
राम जी की धरती है देश है ये राम का।
इस अमृत में आप ज़हर को मत घोलो।
मिट जायेंगे पाप राम की जय बोलो।

मेरे देश वासियों के रोम रोम में है बसी,
निकली वह कथा बाल्मीकि की कलम से।
तुलसी ने जिसे एक नया श्रृंगार दिया,
राम कथा हमें दूर रखती है तम से।
राम की अयोध्या है अयोध्या के राम जी हैं।
किसको है शक बोलो राम के जन्म से।
सारा जग जनता है राम का ही देश है ये,
और क्या सुबूत आप मांगते हो हमसे ।
कैसे कोई न्याय करे काम ये महान है।
एक तरफ आदमी है दूजा भगवान है।
बाबर राम को एक तुला पर मत तोलो।
मिट जायेंगे पाप राम की जय बोलो।

मानते हैं बाबर ने भारत पे राज किया,
हिंदुओं को गुलामी के झूले में झूला दिया।
मंदिरों को तोड़ तोड़ मस्ज़िद बनायीं यहां,
तन मन क्या है आत्मा को भी रुला दिया।
अयोध्या में कार सेवकों ने जो दिखाया प्रेम,
अपनों ने उन्हें गहरी नींद में सुला दिया।
अपनी अपनीझोलियों में वोट भरने के लिये,
अपनों ने अपने ही राम को भुला दिया।
जैसा कोई काम करे ऐसा ही भरेगा यहां।
राम जी का न्याय आज आदमी करेगा यहां।

बहुत हुआ है पाप की गठरी मत खोलो।
मिट जायेंगे पाप राम की जय बोलो।

राम जी की मूर्ति को कैद में रखा था पर,
अब आस्थाओं को गुलाम नहीं करना।
भारती के आंचल को तार तार करके यूँ,
अपने ही देश में नीलाम नहीं करना।
जिसे सुनकर तुम पर ये जमाना हँसें,
मेरे कर्णधारों ऐसा काम नहीं करना।
अयोध्या के कण कण में है राम जी का वास,
अयोध्या विदेशियों के नाम नहीं करना।
मेरा ही नहीं है ये तो ऋषियों का कथ्य है।
सभी जानते है श्री राम नाम सत्य है।
बहुत हुआ है अब तो पापों को धो लो।
मिट जायेंगे पाप राम की जय बोलो।

© **डॉ प्रतिभा गर्ग**

शारंग उठा कर श्री रघुवर

शारंग उठा कर श्री रघुवर, कर दो प्रभु, संहार।
मारो कलयुग के रावण को, अब तो लो अवतार।

निशदिन पाप बढ़ा धरती पर, हो दुष्टों पर वार।
लाखों सीता संकट में हैं, प्रभु करो उद्धार।
अवधपुरी फिर से आनंदित, गुंजित है संसार।

शारंग उठा कर श्री रघुवर, कर दो प्रभु, संहार।
मारो कलयुग के रावण को, अब तो लो अवतार।

राम नाम में सार छिपा है, दिव्य राम अविराम।
घर-घर छाया प्रभु का वैभव, गूँजे तेरा नाम।
श्री रघुनंदन धरा पधारो, है स्वागत सत्कार।

शारंग उठा कर श्री रघुवर, कर दो प्रभु संहार।
मारो कलयुग के रावण को, अब तो लो अवतार।

मर्यादा जग को सिखला दो, दो दुनिया को ज्ञान।

मिथ्या लिप्सा लोभ भग्न कर, राम धनुष को तान।
करुणा से अपनी बरसा दो, वसुधा पर उपकार।

शारंग उठा कर श्री रघुवर, कर दो प्रभु संहार।
मारो कलयुग के रावण को, अब तो लो अवतार।

शारंग - श्री राम जी का धनुष

© **आलोक पराशर**

अपने कमरे की छत को देखकर
मैं अक्सर सोचता हूँ
मजबूत नींव पर बने
इस कमरे की छत
अगर गिर भी जाए
इसी नींव पर
फिर से
एक कमरा
बनाया जा सकता है,
मेरी सोच का दायरा
सीमित हो जाता है
और कल्पना शक्ति
स्थिर हो जाती है
जब मैं ये सोचता हूँ
रिश्तों में भी
ऐसा होता है क्या ?

© **ज्योति जैन 'ज्योति'**

प्रतीक्षा गीत

राधे बैठी कृष्ण विरह में, लिए नैन में नीर
पल पल जैसे बीत रहा था, बढ़ती जाती पीर

कहीं मुरलियाँ बुला रही थींबुनकर माया जाल
सहरा में पानी के जैसा, रोग लिया था पाल
जल बिन मछली के जैसे थे,उसके भी हालात
यादों के अवशेषों को वह,समझ रही सौग़ात
हंसों के जोड़ों को देखे, चले हृदय में तीर
पल पल जैसे बीत रहा था,बढ़ती जाती पीर

सुनकर हँसी-ठिठोली सबकी,बनी रही अंजान
अंतस पीड़ा आन पड़ी थी,अधरों पर मुस्कान
नैन निहारे यमुना रोए,ढूँढे हरि का संग
हुआ बादलों के जैसा ही,उसका काला रंग
राधा रोई मनवा रोया,बचा नहीं अब धीर
पल पल जैसे बीत रहा था,बढ़ती जाती पीर

खाली गगरी ले लौटी थी,राधा अपने गाँव
घर जाने से रुक-रुक जाते, राधा के क्यों पाँव
सूना-सूना घर-आँगन था,मन था 'ज्योति'उदास
मिलन कृष्ण से होगा उसको बहुत, पूरा था विश्वास
लेकिन अब विश्वास तोड़ता,है धीरज का तीर
पल-पल जैसे बीत रहा था, बढ़ती जाती पीर।

©विश्वनाथ सिंह तोमर

सुबह ओ शाम मुस्कुरा कर जीना पड़ेगा ।
दर्द की बस्ती में घर मिला है रहना पड़ेगा।

ये तो हम जानते हैं हमारे बीच रिश्ता क्या है
जिदंगी गुजारने तुम्हारा नाम ही लेना पड़ेगा ।

चिराग बनकर जल रहा था तेरी महफिल में
तुम्हारी सुबह होते ही इसे भी बुझना पड़ेगा।

जो भी मिला है मुकद्दर मैने तो लिखा नही
सच ये है उस खुदा पर यकीन करना पड़ेगा।

यकीनन बेबशी थी तेरे दर पर भी आने की
रिवाज है तुम्हे बैठ जाने का कहना पड़ेगा।

मौसम का अंदाज ही ना था बदल जायेगा
बादलो को भी बिन बरसे ही जाना पडेगा ।

©मंजूषा श्रीवास्तव 'मृदुल'

जय श्री कृष्णा

दरश की लालसा मोहन है जब तक साँस बाक़ी है |
पियूँ नित नाम रस प्याला मिलन की प्यास बाक़ी है |
तुम्हारी मोहनी सूरत बसी है आन नैनों में-
मुरलिया आ सुनाओगे यही विश्वास बाक़ी है |

२

बजाकर प्रेम की मुरली सकल जग प्रेममय कर दो |
पराक्रम ,तेज , खुशहाली समूचे विश्व में भर दो |
सुवासित हो प्रकृति सारी खिले मुस्कान अधरों पर -
करूँ नित प्रार्थना योगेश गिरधारी यही वर दो |

३

किया श्रृंगार मनभावन तुम्हे मोहन रिझाने को |
निधी वन में मुरारी रास लीला फिर रचाने को|
सुनो योगेश करुणा कर न तरसाओ दरश दो प्रभु-
लगन तुम से लगा मोहन खड़ी तन-मन रंगाने को |

© Bhuwan Joshi

यही वक़्त है
(पंद्रह अगस्त सन सैंतालिस की स्मृति में)

तोड़ी जो इक जंजीर गुलामी की सबने
भारत माँ को भी अपनों का प्यार मिला
जीते तो थे हम तब भी पर मर मर कर
खुली हवा मे जीने का अधिकार मिला

सन सैंतालिस माह अगस्त की पंद्रह को
अँग्रेज़ों 'भारत-छोड़ो' नारा साकार हुआ
चले गये वो जो आए थे जो व्यापारी बन
एक उजाला भरा और स्वप्न साकार हुआ

जाने कितने दिए जले थे आशाओं के
जाने कितने प्राण ...हुए थे उत्सर्ग यहाँ
गिर गिर कर फिर उठ पड़ते थे मतवाले
मन मे थी इक आस कि बनेगा स्वर्ग यहाँ

हां!! देखो तो कितने वर्ष सरकते चले गये
हमको लगता है पर हम तो केवल ठगे गये
जाने कितनी जंजीरें हैं जिन्हें तोड़ना बाक़ी
तोड़ न पाए हम उनसे ही बँधते चले गये

चलो आज प्रण कर लें फिर से मिलजुल कर
काटेंगे वो भी बाकी हम सारी अपनी जंजीरें
सबको मालूम है अब क्या करना होगा हमको
यही वक़्त है आओ बदलें हम अपनी तकदीरें।

©मिथिलेश कुमार मिश्र 'दर्द'

प्रबंध काव्य "याज्ञसेनी" के तृतीय सर्ग की कुछ पंक्तियाँ

धन्य धन्य तुम धन्य युधिष्ठिर,
धन्य हैं तेरे कर्म!
अद्भुत तेरे धर्मशास्त्र और
अद्भुत तेरा धर्म!

दुष्ट दुश्शासन तो है केवल
दुर्योधन की छाया।

छाया का अस्तित्व है तबतक,
जबतक है वह काया।

दुर्योधन की लाश चाहिए
मुझको अभी युधिष्ठिर!
अगर चाहते कि हो जाए
मेरा भी दिल स्थिर।

नारी का प्रतिशोध भयंकर
धर्मराज है होता।
वैसे तो उसके हृदय में
होता प्रेम का सोता।

नारी प्रेम की भूखी होती,
प्रेम अगर मिल जाता।
सर्वस्व न्योछावर करती है वह,
जग उसका यश गाता।

क्या नारी केवल भोग्या है,
चाहे भोगो जैसे?
धर्मराज, बताओ मुझको,
कबतक चलेगा ऐसे?

कृष्णा ने पूछा जब तब
विह्वल हो गये युधिष्ठिर।
पहले से ही झुका हुआ,
झुक गया और उनका सिर।

©Shruti S.Tripathi

Independence Day

Today is the day our country got freedom,
And got it's own identity with so many reasons.

I salute to the great warriors who gave their lives for liberty,

And come let's celebrate today it's prosperity.

The fighters who took courageous step without any doubt,
And made the nation exceptionally proud.

Let's pay homage to all of them,
Indeed They were the "real men."

I salute to our flag as it flutters so high,
And respectively set it's mark in the sky.

May all Indians become pure and wise,
As India is respected over the world wide.

Today I wanna wish my country happy birthday,
As we proudly celebrate it as Independence day.

© रेणु जयसवाल " रेणुका "

विजय मगर "अटल" होगा...!!

लक्ष्य हो यदि आसमान से ऊँचा
फिर पथ न कोई समतल होगा
नित्य संघर्ष ही होगा साथी तुम्हारा
विजय मगर "अटल" होगा!

कितने धुरंधर जीवन में अपने
लक्ष्य साधकर आते गए
कठिनाइयों से दो-चार हुए और
कहीं गर्त में समाते गए!

दुश्वारियों को जिसने अस्त्र बनाया
अर्जुन सा वही सफल होगा
नित्य संघर्ष ही होगा साथी तुम्हारा
विजय मगर " अटल " होगा!

आदर्शों का जो वटवृक्ष "अटल" सा
वह कभी नहीं मुरझाता है
बीज ज्ञान का सृजित करता है
अमरत्व धरा को दे जाता है!

है नमन हृदय के श्रद्धा सुमन से
मन दृढ़ संकल्पित सबल होगा
नित्य संघर्ष ही होगा साथी तुम्हारा
विजय मगर " अटल " होगा!!

©पूजा शर्मा

अटल सदैव

अटल थे, अटल हो, अटल ही रहोगे,
कविताओं में अपनी निश्चल रहोगे!
झलकते रहोगे अपने शब्दों से सदा,
अंकित मानस पटल पर रहोगे!
अटल थे, अटल हो, अटल ही रहोगे!

ठहरा स्वभाव और गहरे विचार,
है युगों में निभाता कोई ऐसा किरदार!
भाव से परिपूर्ण कवि हृदय में,
उमड़ता रहा देश प्रेम का गुबार!

जी भर जीने का वादा करने वाले,
तुम अगर सदा हर दिल में रहोगे!
अटल थे, अटल हो, अटल ही रहोगे,
कविताओं में अपनी निश्चल होंगे!

हेमहामानवू, तुमको है शत शत नमन,
हो माँ भारती के तुम "भारत रत्न"
स्मरण रखेगा तुमको सदा,
इस देश की माटी का हर कण कण!

काल के कपाल पे लिखने मिटाने वाले,
तुम जीवित सदा हर कवि-दिल में रहोगे।
अटल थे, अटल हो, अटल ही रहोगे,
कविताओं में अपनी निश्चल रहोगे!

©दिव्य श्वेत

यूँ नकली मुस्कुराकर क्या होगा,
धड़कनों को सहलाकर क्या होगा,
घर में रहने वालों के दिल छोटे थे,
कहो, महल बड़ा बनाकर क्या होगा।

खंजर दिल पर लगे थे साहब,
अब बातें दोहराकर क्या होगा,
अभी कैद है जख्म, दिल की अलमारी में,
अब सबको दिखाकर क्या होगा।

जितना बुरा होना था, हो गया,
अब आंखों में आंसू, सजाकर क्या होगा,
वक्त आएगा, तो जिंदगी संवर जाएगी,
अब गुमसुम, ख़ुद को बनाकर क्या होगा।

रब ने कुछ अच्छा ही सोचा होगा,
फिक्र में लम्हे गवां कर क्या होगा।

©SN Gupta

सच्चाई के शब्द लिए एक गीत सुनाने आया हूँ
आज बिसरते बलिदानों की याद दिलाने आया हूँ

अब तक मौन समेटे था व्यथा मुझे थी रोक रही
पीड़ छुपी अंतस में थी लेखनी क्षोभ से काँप रही

आज भारती तरस रही है सत्ता के गलियारों में
देश की किस्मत बंटी है नव राजाओं रजवाड़ों में

रामराज गांधी जी ढूँढें सुप्त स्वराज भगतसिंह का
कहाँ सत्यमेव जयते है राज है झूठे वादों नारों का

लक्ष्मी बाई नगर ग्राम में लाज सम्हाले रोती है
चेन्नम्मा भी सिसक रही आज़ादी ऐसी होती है

जितने सूर्योदय हैं सूर्यग्रहण भी उतने ही होते हैं
मेहनत कश के सपने आँखों में दुबके ही रहते हैं

जनता की अभिलाषाओं को बाँधा है परिभाषा में
स्वतंत्रता बंधक बन जीती आतंकों की छाया में

खेत बिके खलिहान बिके जनता भूखी सोती है
बोतल में पानी बिकता नदिया पानी को रोती है

नन्हे मुन्ने बिलख रहे आज भी दाने -दाने को
कातर दृष्टि देख रहे हैं हर राही अनजाने को

आज भेड़िये विचर रहे हैं मृग खालों में छुपे हुए
धर्मध्वजा ले घूम रहे हैं शातिर कितने मंजे हुए

धनलोलुप भ्रष्टाचारियों ने खुल कर मौज मनाई है
स्वतंत्रता की असली ताक़त उनके हाथों आई है

उम्मीदें को पंख लगे पर पल पल गहन अंधेरी है
इसीलिए तो कहते हैं कि आजादी अभी अधूरी है

आज यहाँ आज़ादी समता के नारे सारे झूठे हैं
राह जनों से डर कर राजा भी मुंह फेरे बैठे हैं

किसको कैसी आज़ादी आज यही तो विभ्रम है
जिसके पास राजदंड है आज भी वही सक्षम है !!

©ज्योति जैन 'ज्योति'

स्त्रीत्व

यदि समझौता
त्याग, बलिदान
है स्त्रीत्व की
पहचान..

घुटन अंतर्द्वंद्व
ख्वाहिशो का
दमन,देता
स्त्रीत्व को
मान..

धिक्कार दुत्कार
वेदना भरी
मर्माहत
बढ़ाती स्त्रीत्व की
आन..

युगों कफस में
कैद..परवाज को
छटपटाती
अनजान..

नवसृजन का
आधार बनती
वरना..
बाँझ का मिलता
संज्ञान

है परिभाषा
स्त्रीत्व की
तो मुझे नहीं है
रूझान
स्त्रीत्व में

मुझे भी जीना है
अनावृत हो
स्वच्छंद,बंदिश रहित
जीवन
स्वार्थी बन

तब करना
तुम आकलन
मेरे व्यवहार का
करना संकलन
युगों युगों तक।

©सुनीता जयसवाल

कुछ इस तरह से ,
हक जिंदगी का
मैं अदा कर देती हूं
लोगों के दिए दर्द की स्याही को
मैं अपनी कलम में भर लेती हूं

जब थकता है मन
जीवन के संघर्षों से'
मैं मां के चेहरे की ,
झुर्रियों की लकीरे ,
पढ़ लेती हूं

शिखर पर जाकर भी ,
मेरे पांव जमीन पर रहे ,
आसमान से कटकर
नीचे आती पतंगों को
मैं तक लेती हूं !

कोशिशों को मंजिलें ,
होती हैं हासिल,
टेढ़ी-मेढ़ी से, फिर
गोल होती रोटियों से,
मैं सबक लेती हूं !

सपनों के जल जाने का एहसास बरकरार रहे
इसलिए,
मैं अक्सर आंच में ,
अपनी उंगलियां धर लेती हूं!

©फूलचंद्र विश्वकर्मा

मुश्किलों का हल

मुश्किलें बहुत बड़ी।
राह में लिए खड़ी।
पर नहीं हम हारेंगे।
उसको भी संहारेंगे।
संकल्प शक्ति देश की।
उर्जस्विता महेश की।
प्रखरता दिनेश की।
बुद्धि है गणेश की।
हम कभी डरे नहीं।
दीन हो मरे नहीं।
पथ विकट रुके नहीं।
पहुँचे बिन थके नहीं।
सबल सत्य साधना।
जन कल्याण कामना।
लक्ष्य संधान अर्चना।
मातृ भू की वंदना।
रुकेंगे नहीं चरण।
करेंगे सफलता वरण।
वेग कम न आमरण।
धर्म सहित आचरण।
विंदु सिंधु रूप ले।
छाएगा स्वरूप ले।
रंक ले या भूप ले।
छाया ले या धूप ले।
पार करेंगे अगम।
पथ बनेगा सुगम।
सफल होगा यह जनम।
करेंगे अच्छे करम।
वक्त की पुकार है।
उसका इंतजार है।
मन में धीर धार है।
श्रेष्ठता श्रृंगार है।।

©आरती राठौर

वो जो कभी कहा नहीं

वो जो कभी कहा नहीं कह देते तो शायद अच्छा होता,
गिले शिकवे न रहते ना हँसते हुए ये दिल अंदर ही अंदर रोता,
ले लेते तेरे कांधो का सहारा यूं बीच राह मेरे यार तो न खोता,
उम्मीद बेहतर कल की शायद फिर ज़िंदा हो जाती,
ख्वाहिशों के ज़मीन में, गर उम्मीद का इक बीज मैं बोता|

वो जो कभी कहा नहीं कह देते तो शायद अच्छा होता,
तो प्रेम से बड़ा अविश्वास न होता ,
स्वाभिमान की जगह अहंकार घर का मेहमान न होता,
सरल हो जाते इस जीवन के फलसफे ,
गर मैं तुझसे और तू मुझसे यूं अनजान न होता|

वो जो कभी कहा नहीं कह देते तो शायद अच्छा होता,
तब ये घर सिर्फ ईंट पत्थरों का मकान न होता,
खुश होते तू और मैं , ये रिश्ता यूँ बेजान न होता,
दौलत को अगर खुशियों की वजह न बनाते ,
रह जाते थोड़ा इंसान हम, भीतर छुपा हम में शैतान न होता |

वो जो कभी कहा नहीं कह देते तो शायद अच्छा होता,
थोड़ा सुकून होता तब अपने होने का अफ़सोस का ये आलम न होता,
यौवन रहता कायम तेरे मेरे इश्क़ का बेरुखी का कोई मौसम न होता|
कुछ कम कर लेते अगर ख्वाहिशे अपनी .
ज़िन्दगी , तब सिर्फ मसरूफियतों का मंज़र न होता।

वो जो कभी कहा नहीं कह देते तो शायद अच्छा होता,
शायद तू बेखौफ रहती ,झूठी रिवायतों का तुझपर पहरा न होता,
हासिल कर लेती अपने हिस्से के ख्वाब तू,
कोई अरमान बस दिल मैं दबी ख्वाहिश न रहता|
होता हौसला तो लड़ लेता ज़माने से तेरे लिए,
जीवनसाथी होने का फ़र्ज़ निभाता बस कहने को तेरा हक़दार न होता|

©सुनीता जयसवाल

कुछ इस तरह से ,
हक जिंदगी का
मैं अदा कर देती हूं
लोगों के दिए दर्द की स्याही को
मैं अपनी कलम में भर लेती हूं!

जब थकता है मन
जीवन के संघर्षों से'
मैं मां के चेहरे की ,
झुर्रियों की लकीरे ,
पढ़ लेती हूं !

शिखर पर जाकर भी ,
मेरे पांव जमीन पर रहे ,
आसमान से कटकर
नीचे आती पतंगों को
मैं तक लेती हूं !

कोशिशों को मंजिलें ,
होती हैं हासिल,
टेढ़ी-मेढ़ी से, फिर
गोल होती रोटियों से,
मैं सबक लेती हूं !

सपनों के जल जाने का एहसास बरकरार रहे
इसलिए,
मैं अक्सर आंच में ,
अपनी उंगलियां धर लेती हूं!

©Usha Malhotra

सिद्वि विनायक सिद्ध करो
सबके अपूरण काम
चरणों से लग जाऐं हम
भक्ति करें निष्काम ।।
ओम गणेशाय नम:,
ओम गणेशाय नम:

दाऐं रिद्धि बाऐं सिद्धि,
बीच में आप विराजे
मूषक वाहन, देह विशाला
भाल पे तिलक है साजे।।

सिद्धि विनायक सिद्ध करो
सबके अपूरण काम
चरणों में लग जाऐं हम
भक्ति करें निष्काम ,
ओम गणेशाय नम:
ओम गणेशाय नम:।।

गउरिका नंदन , त्रिभुवन सार;
उदर तिहारे नाद भंडार,
प्रथम पूजनीय ,नाम गणेशा
पूजा करे सकल संसार।।

सिद्धि विनायक सिद्ध करो
सबके अपूरण काम
चरणों में लग जाऐं हम
भक्ति करें निष्काम ।।
ओम गणेशाय नम:,
ओम गणेशाय नम:।।

©Ragini Agrawal

On self-killing by youngsters

Where thou gone, dear,Where thou gone
Why thou left loving ones hither to mourn

Thou were a bud , thou had to bloom
Why thou plucked, thyself so soon

Thou were a combo, of beauty and mirth
Why bade so early, goodbye to the earth

Although thou wanna, to get rid of worry
But Why thou took, this step in a hurry

Why thou performed, an act of cowardice
Didn't thou have, better than this choice

How can ever forget, thy kith and kin
The pain thou give, how can they win

Although it is nature, to bloom and fade
But none fill the void , thou have made

Thou -you; Hither -here; thyself - yourself
Thy – your; wanna - want

©राघवेंद्र सिंह

कृपा

दिशा पूर्व में भानु उदित
है पश्चिम में नित ढलता।
कृपा दृष्टि से करे उजागर

नित नव आशा से जलता।

अविरल प्रवाह में मग्न है
स्रोतस्विनी का श्वेत जल।
ले अंजुरी संकल्प करते
है कृपा उसकी ही निश्चल।

है छट रहा तम द्वेष का
हो रही विभावरी प्रभा।
दृष्टि पड़ती सृष्टि पर जब
चारु चन्द्र की वह सुप्रभा।

गिरी शिखर तन है खड़ा
निःस्वार्थ उसका प्रेम है।
ये है कृपा उस शीश की
जो शीश स्वयं ही प्रेम है।

प्राण वायु है प्रवाहित
कण कण है प्रज्वलित।
दिव्यता सी है कृपा
शांत शीतल है त्वरित।

खोजता हूंँ स्वयं को मैं
स्वयं के विचलित मन में।
गिर उठा आगे बढ़ा
कृपा से ही नभ सघन में।

हैं लघु से शब्द जो दिव्य
स्फुरित हैं रोम में।
श्वेतवर्णा शारदे कृपा से
काव्य बनता व्योम में।

©Ashok Sharma

The Rainy Season

The season of fertility and rain
After a long time came again
The earth is draped in lush green

Everything is looking neat & clean.

The peacock is dancing in joy
Gay with paper boats is the boy
The rivers are in high spate
To hold water, they can't wait.

The rain is falling on the ground
On the mountains,on the mound
Green blossoms appear on the trees
Water on the high peaks doth freeze.

Farmers are busy in ploughing
Preparing the fields for sowing
To grow paddy and other crops
To them coins are the rain drops.

On a rose bush appears a bud
A young boy slips with a thud
A small rivulet is in high flood
A buffalo is chewing its cud.

The sad beloved pines for her love
As showers of rain fall from above
Longs to meet him in a big grove
But restrictions stop her to move.

Her desires she keeps to her mind
To share them none doth she find
Sadly she writes on a paper with a pen
'Since night it's been raining in the glen.

Long to meet you in the bower
In the grove, beside the tower
To enjoy the rain & the shower
Let us sit and chat for an hour'

©सुनीता जायसवाल

आज मुझे लगता है जैसे ,
वह पिछड़ा भारत अच्छा था,
मिट्टी की कच्ची दीवारें थी पर,
दिल का आंगन पक्का था !

आज मुझे लगता है .....

सभी कलाई पर वक्त बंधा है पर ,
वक्त नहीं है कसी के पास,
वक्त बेवक्त एक दूजे के घर,
आवन जावन अच्छा था!

आज मुझे लगता है .....

बोझ सा लगता है अब तो,
मेहमानों का आना जाना ,
हर शाम पड़ोसियों का चाय पर
वह नेह निमंत्रण अच्छा था!

आज मुझे लगता है.....

सर पर ऐसी पंखे घूम रहे हैं ,
फिर भी गर्मी ना जाती है,
जरा हिले तो शीतल कर दे,
वह मां का आंचल अच्छा था !

आज मुझे लगता है.....

बड़े-बड़े आईने सजे हैं ,
फिर भी कुछ ना दिखता है ,
झांक लिया करते थे मन में ,
वह रिश्तो का दर्पण अच्छा था!

आज मुझे लगता है.....

हाथों की उंगलियां अब तो,
खुशी गम के इमोजी है भेज देती,
एक दूजे के गले से लग कर ,
वह हास्य रुदन सब अच्छा था!

आज मुझे लगता है जैसे ,
वह पिछड़ा भारत अच्छा था,
मिट्टी की कच्ची दीवारे थी पर
दिलों का आंगन पक्का था!

©गुमनाम शायर "अमन"

ग़ज़ल

चिरागों को बुझा कर मैं कहां जाता,
शहर अपना जला कर मैं कहाँ जाता।

शहर के हादसों से दिल परेशां था,
नज़र इन से हटाकर मैं कहाँ जाता॥

शहादत इश्क़ में लाज़िम थी जाने जाँ,
रिवाज़ों को भुलाकर मैं कहां जाता॥

खड़े थे सब लिए पत्थर मेरे आगे,
सफ़र में सर बचाकर मैं कहां जाता॥

बुझा सा दिल, बिखरती ज़िन्दगी और मैं,
मर्ज़ इतना लगा कर मैं कहाँ जाता॥

फ़क़त इक शाम थी और लुट गया था सब,
अलम इतने उठाकर मै कहाँ जाता॥

उफ़क़ से लौट आती है सदा मेरी,
धड़क दिल की उठा कर मैं कहाँ जाता।

सबब अपनी उदासी का अमन हूँ खुद,
सबब तुमको बताकर मैं कहाँ जाता॥

©राधा शैलेन्द्र

पत्ता और मैं

देखकर शाख से गिरे पत्ते को

मुझे लड़की होने का एहसास हुआ
कितनी खामोशियाँ सुना गया
वो पत्ता जब बलने पर आ गया।

वो तो हमेशा के लिए टूट गया
पर मुझे तो टूटकर फिर जुड़ना है
वो भी नही जानता मैं भी नही जानती
हमे किस मंजिल की तलाश में जाना है।

'उफ' तो वह भी नही करता
'आहें' मैं भी नही भरती
क्या है उस पार जो देख पाई
विवशता ही जिंदगी से जुड़ी हुई पाई।

काश उसकी तरह मैं भी एक बार टूटती
जिंदगी के मंझधार से एक बार ही जूझती
भूल दुनियाँ के फरेबी जालों को
खुली हवा में साँस तो ले पाती।

कितनी जल्दी उड़ निकल वो
पर मुझे तो उड़ते जाना है
उस सोने के पिंजड़े तक
कैद करने के लिए
कर रहा जो प्रतीक्षा मेरी।

©इज़हार अशरफ

ग़ज़ल

इंसाफ़ बड़ा सस्ता बिका क्या ठीक हुआ
अपराध बगैर मिली सज़ा क्या ठीक हुआ

धोखाधड़ी घोटाले कत्ल-गारत छिनतई
अखबार में बस यही कुछ छपा क्या ठीक हुआ

अपनी तकलीफ का हल नहीं कर सकते मगर

तेरे दुख पर मैं ख़ुश हुआ क्या ठीक हुआ

यूं मानती दुनिया बुरे हैं बेहद हम
बनता नहीं क्यों फिर भला क्या ठीक हुआ

देखेंगे कभी लाचारी के दिन हम भी
अहसास नहीं अहसास का क्या ठीक हुआ

समन्दर वहीं था और इंसा भी वहीं थे
सबकों नहीं मोती मिल सका क्या ठीक हुआ

मिलने को जमीनो आसमान मिले हमें
करते रहना मेरा गिला क्या ठीक हुआ

©**'अर्श ' अमृतसरी**

एक ग़ज़ल

जब दिल से हमने आप को अपना बना लिया ।
उस वक़्त हंसकर आप ने दामन छुड़ा लिया ।।
हम तन्हा जी रहे है खता वार की तरह ।
सब कुछ भुला के आपने तो घर बसा लिया ।।
खुशियां नसीब आप को ये आपका नसीब ।
हमको तो दर्द ओ गम मिला हंसकर उठा लिया ।।
है खेलना दिलो से भले शौंक आप का ।
हमने तो खेल खेल में खुद को जला लिया ।।
पा लेंगें ' अर्श ' हम तो ज़माने की दौलतें ।
जिस दिन गले से आपने हमको लगा लिया ।।

Special Poetries

©ज्योति चंद्रा ' ज्योत्सना '

कुछ पंक्तियाँ सफ़र ए जिंदगी के लिए:-

नाम नया है काम वही है,
लेखनी का सम्मान वही है,
सफ़र ए ज़िंदगी एक कड़ी है,
इसकी सफलता बहुत बड़ी है,
नवांकुरो को प्रोत्साहित करती,
सबकी कलम की बातें सुनती,
एक आदर्श स्थापित करती,
EWA सफ़र ए ज़िदगी।

©कुसुम लता

EWA सफ़र ए जिंदगी,
लगी बड़ी सुहानी।

कद्र करती है लिखने की,
सम्मान से नवाज़ती सबको।

मेरी लेखनी में वो शब्द कहां,
फ़िर भी प्रोत्साहित करते मुझे जहां ।

प्रोत्साहन के इस सलीके ने,
बना दिया यहां इक रिश्ता।

इस रिश्ते को निभाना है,
सफ़र ऐ जिंदगी को आगे बढ़ाना है ।

धन्यवाद

Ewa Zindagi